@NewsRotary /RotaryNewsIndia

Vol.34, Issue 7 Annual Subscription Rs.420

रोटरी समाचार

January 2017

Rotary

जगमगाता दुबई

ध्यानपूर्वक योजना

रेगिस्तानी शहर में एक सूचनात्मक, नवाचार और आनंददायक क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन सुनिश्चित करने के लिए दुबई इंस्टीट्यूट के चेयर राजा सीनिवासन 17 बार और रो इ निदेशक मनोज देसाई 13 बार दुबई गए। और इसकी योजना दो वर्ष से चल रही थी। और निश्चित इस कार्यक्रम के सभी प्रतिभागी घर वापस इस भरोसे के साथ लौटे की कुछ भी असंभव नहीं है।

चित्र : के विश्वनाथन

विषयसूची

12 दुनिया को बदलने के लिये जरूरी है सम्मिलित कार्य : जॉन जर्म

दुबई में जोन इंस्टीट्यूट के उद्घाटन समारोह में रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म का शानदार संबोधन।

35 दुबई संस्थान में जब छा गयीं पत्नियाँ...

पत्नियों को उनकी हिस्सेदारी दो और सफलता की लहरों पर सवारी करो।

56 रोटरी शताब्दी दौड़

मंडल 3141 का अनुदान संचय समारोह, जिसमें टीआरएफ के लिए 210,000 डॉलर का संचय किया गया।

18 कामयाब गवर्नरशिप के लिये जर्म की सीख

रो इ अध्यक्ष ने दुबई में डीजीयों को सफलता के मंत्र बताए।

42 ज़ोन 4, 5, 6–ए के स्टार परफॉर्मर

पिछले साल की उपलब्धियों का सम्मान।

44 साझेदारि के लिए कुछ कदम

टेनिस में डबल्स के बादशाह लिएंडर पेस कहते हैं कि साझेदारी में सफलता का मंत्र है ऐसे साझेदार का चुनाव करना जो आपकी कमजोरियों की पूर्ति कर सके।

58 एक रॉक सितारा ऑटो चालक

रोटरी क्लब मद्रास ईस्ट द्वारा अकीर्तित नायकों का सम्मान किया गया। एक ऑटो ड्राइवर, एक यातायात पुलिसकर्मी और एक शिक्षक से मिलिए।

78 रक्त कैंसर के समान है काला धन

इसकी तात्कालिक कमियों के बावजूद भी, भ्रष्टाचार और काले धन के कैंसर को ठीक करने के लिए विमुद्रीकरण आवश्यक है।

80 बैठना धूम्रपान के बराबर है

लंबे समय तक बैठे रहना स्वास्थ्य के लिए खतरनाक साबित हो सकता है। इसलिए तुरंत कुर्सी से उठने की ज़रूरत है।

66 पेरीटो मोरेनो से,सप्रेम

पेरीटो मोरेनो, दक्षिणी अमरीका के ग्लैशियरों पर एक रमणीय तिरछी नज़र।

कवर पर: दुबई इंस्टीट्यूट में एक देखने लायक शानदार प्रस्तुति।
चित्र : के विश्वनाथन।

चेन्नई का एक आदर्श प्रतिरूप!

दिसम्बर अंक में संपादकीय लेख में अन्नादुरै के *अमेजिंग आटो* के बार में पढ़ा जो व्यापार में उसके पेशेवर गुण को साबित करता है। ग्राहक जैसे चाहते हैं उसने उसी अनुसार समय के साथ अपने आप को बदल लिया। रोटरी क्लब मद्रास ईस्ट को सलाम, जिसने ऐसे हीरों की पहचान कर उसका सम्मान किया। उसके बारे में लिखने के लिए धन्यवाद जिसने उसे लोकप्रियता प्रदान की।

जी कार्तिकेयन,
रोटरी क्लब मन्नारगुड़ी, मंडल 2981

अन्नादुरै जैसे लोगों की वजह से ही भारत इतना महान है। उन्हे शाबासी देनी ही होगी। जब आप *रोटरी समाचार* में इस तरह की खबरें प्रकाशित करते है, आप इनके फोन नंबर और ई-मेल के विवरण भी दिया करें। हम भी उन्हे फोन पर तथा ख़त लिखकर उनका शुक्रिया अदा कर सकते हैं। आपके गवर्नरों से मिलें भी बहुत बढ़िया है।

अशोक कुमार
रोटरी क्लब मैसुरु नॉर्थ– मंडल 3181

दिसंबर अंक में ऑटो चालक अन्नादुरै पर लिखा गया लेख बढ़िया है। बेहद प्रभावकारी भी है क्यों कि वह उनकी क्रमिक प्रगति का बयान करता है। वें आयकर का भी भुगतान करते हैं। वाह! वाकई वें प्रशंसा के योग्य आदर्श प्रतिरूप हैं।

एस शिवसुब्रमनियां, रोटरी क्लब तिरुनेलवेली वेणुवनम्– मंडल 3212

अन्नादुरै पर लिखा गया आपका लेख वाकई प्रेरणादायक था। वह उदाहरण है उन भारतीयों का जो अपने व्यापार में ईमानदार हैं और भारत में सामाजिक बदलाव लाना चाहते हैं।

अरुण के दास, रोटरी क्लब बारीपाड़ा, मंडल 3262

आपका संपादकीय जिस में एक विनित ऑटो चालक अन्नादुरै, जो समाज के कमजोर वर्ग से हैं ने ना केवल ऑटोरिक्शा में अपनी सवारियों के लिये पत्रिकायें और अख़बारें रखी बल्कि दिन ब दिन अपनी सेवाओं को बेहतर बनाते हुये अपनी ओर से एक डिजीटल क्राँति ही पैदा कर दी पढ़कर ताज्जुब हुआ।` क्या यह एक आदर्श मिसाल नहीं है जिसका हमे अनुसरण करना चाहिये? फिर एक बार इस बढ़िया लेख के लिये आपको बधाई हो।

के एन चंद्र शेखर
रोटरी क्लब बंगलौर साउथ वेस्ट– मंडल 3190

जगमगाता चांद और टिमटिमाते सितारे

मैंने नवम्बर अंक में रशीदा भगत् द्वारा लिखा लेख दिल्ली में एक खाद्य ओडिसी पढ़ा। मन ही मन दावनगेरे से दिल्ली तक का मेरा सफर भी शुरू हुआ। मैं भी लेखिका के परिवार के सदस्यों के साथ चल पड़ा जो नयी दिल्ली की चहल पहल से भरपूर, तंग गलियों की ओर रुख कर रहा था, जहाँ सड़क किनारे के रेस्तराँ स्वादिष्ट, चटपटे कबाब तैयार कर रहे थे, जिसकी खुशबू से मेरा पेट भर गया और मन भी। लिखने की उनकी शैली बढ़िया और खूबसूरत थी।

दावनगेरे में टीआरएफ मंडल सेमिनार के दौरान, अनेक रोटेरियनों ने यही राय ज़ाहिर की थी कि वर्तमान संपादिका तथा उनका संपादकीय दल बेहद कुशल तथा उत्कृष्ट लेखक हैं। आगे, सभी ने इस बात की पुष्टि की कि रशीदा भगत् एक जगमगाता चांद है और उनके दल में उनके साथी टिमटिमाते सितारे हैं। सभी को शाबासी!

जी वी सायगवी
रोटरी क्लब दावनगेरे विद्यानगरा - मंडल 3160

संपादकीय दल ने रोटेरियनों को गर्वांवित कर दिया

नवंबर अंक की विषयवस्तु पढ़ने में प्रेरक और रोचक थी; लेख भारत को साक्षर बनाना विशेष उल्लेख के काबिल है। कोई ताज्जुब नहीं कि ढएअउककार्यक्रमों के जरिये स्कूली स्तर पर साक्षरता के क्षेत्र में रोटरी के कार्य ने अपनी ओर मीडिया का ध्यान आकर्षित किया। आइये हम इस अच्छे काम को जारी रखें।

इतर लेख– रशीदा भगत् का भारत परोपकार के क्षेत्र में बहुत अच्छा कर रहा है, जयश्री का जहां शहर और गांव के छात्र सब्जियां उगाते हैं, तथा टी सी ए श्रीनिवास राघवन् का अर्थशास्त्र कैसे कावेरी विवाद का समाधान करेगा आदि सभी अत्यंत प्रभावकारी रहे और संबंधित विषयों के बारे में हमारे ज्ञान को बेहतर बनाते है।

क्योंकि संपादकीय दल, रोटरी से जुडी खबरों के अलावा विभिन्न विषयों पर रोचक खबरें प्रकाशित करने के द्वारा पत्रकारिता में नेकी बरतता है,रोटेरियन पाठकों के अलावा गैर-रोटेरियन पाठक भी आपके पत्र के ज़रिये इस पत्रिका की कद्र करते हैं। घटनाओं का बयान उचित तरीके से, रोचक ढंग से पेश करना अपने आप में एक हुनर होता है क्योंकि इसी से लेख सूचनात्मक होने के अलावा उसकी दिलचस्पी भी बनी रहती है। हमे अपने संपादकीय दल पर नाज़ है।

आर श्रीनिवासन
रोटरी क्लब मदुरै मिड़टाऊन– मंडल 3000

एक रोचक अंक

आपने नवंबर माह के अंक को अद्‌भुत तरीके से प्रस्तुत किया है। आर्च क्लंफ क्रांति पर रो इ के अध्यक्ष जॉन जर्म का संदेश हमे भविष्य की ओर जाने का रास्ता बतलाता है। लेख एक नयी ज़िंदगी देना में आपने प्रत्येक रोटेरियन की स्वार्थहीन सेवा का बयान किया है। WinS के वैश्विक अध्यक्ष सुशील गुप्ता ने सही कहा था कि, ‘‘शौचालय बनवाने के द्वारा हम खुशहाल विद्यालय बनवा रहे हैं’’ किरण जेहरा के लेख एक विशेष जगह में, एक खास स्कूल के बारे में दी गयी जानकारी तारीफ के काबिल है। लेख अर्थशास्त्र कैसे कावेरी विवाद का समाधान करेगा ने तमिलनाडु और कर्नाटक के बीच के जल विवाद को नया आयाम दिलाया है। अपने लेख रोटरी सदस्यता और बियर में रेवती सुरेश ने BREW की असली भावना का गुणगान किया है। संक्षेप में उपयोगी जानकारी प्रदान करता है।

संतोष तिवार

रोटरी क्लब जालना रेनबो– मंडल 3132

ठेस पहुँचाने वाला बयान

लेख एक नयी ज़िंदगी देना में, डॉ जे एम हंस ने कहा है कि अनेक ENT विषेषज्ञ श्रवण यंत्रों की सिफारिश करते हैं ना कि कर्णावर्त प्रतिरोपण की, ‘‘क्योंकि वें जानते हैं कि एक बार इस मशीन को लगा दिया जाता है और बच्चा सुन पाता है तो उनकी आमदनी का जरिया चला जाता है... सुलभ आमदनी मिल जाती है।’’क्या उनके पास अपने व्यावसायिक सहकर्मियों पर आरोप लगाने का कोई ठोस सबूत हैं? मैं एक माफी का अनुरोध करता हूं।

राधेश्याम मोदी

रोटरी क्लब अकोला– मंडल 3030

कर्णावर्त प्रतिरोपण पर लेख सूचनात्मक था। इसमें होने वाले भारी व्यय की वजह से विरले ही उसकी सिफारिश की जाती है। लेख में ‘सुलभ आमदनी’ जैसे उल्लेख ना किये गये होते तो अच्छा होता।

डॉ सुहास जी पुरोहित

रोटरी क्लब थाणे– मंडल 3142

दिल से...

रोटरी समाचार के दिसंबर 2016 अंक में शीर्षक लेख नन्हीं ज़िंदगियों को छूना...मुंबई में दिल से पढ़ा। बधाई हो।

पद्मश्री डॉ के एम चेरीयन
मशहूर हृदय रोग विशेषज्ञ तथा संस्थापक चैयरमेन, फ्रॉंटीयर लाइफलाइन अस्पताल, चेन्नै

आपने रोटरी की भावना और उसकी खासियत के साथ उसके मानवीय पहलु को भी बनाये रखा है। इन बच्चों तथा उनके परिवारों के हित में, रोटरी के ज़रिये यह जानकारी प्रकाशित करने के लिये वाकई मैं आपका शुक्रगुजार हूँ।

डॉ सुरेश जी राव,बाल एवं जन्मजात हृदय शल्य चिकित्सक तथा सलाहकार निदेशक, बाल हृदय चिकित्सा केंद्र, कोकिलाबेन अंबानी अस्पताल, मुंबई

दिसंबर अंक के आवरण पृष्ठ पर, हमारे मंडल 3141 की संकेंद्रित परियोजना, बाल हृदय शल्य चिकित्सा, की तस्वीरें मुंबई में दिल से लेख में प्रकाशित करने के लिये मैं आपका शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। यह निस्संदेह इस मंडल के रोटेरियनों के उत्साह को बढ़ा देगा। पिछले कुछ सालों से आप, रोटरी समाचार

के स्तर, उसकी विषयवस्तु तथा इतर सभी विषयों में बढ़िया सुधार करते आ रही हैं। हम रोटेरियन खुशकिस्मत हैं जो रशीदा भगत् रोटरी समाचार की प्रधान संपादिका हैं।

डीजी गोपाल मंधानिया
मंडल 3141

दिसंबर 2016 के रोटरी समाचार में प्रकाशित ज्यादातर लेख सूचनात्मक तथा पढ़ने योग्य है। जो आधासीसी से परेशान है, उन्हे इस तकलीफदेह बीमारी को पैदा करने वाली परिस्थितियों। शुक्रिया लेखक ओ पी खन्ना का। इसी तरह नेत्र दान के बारे में लिखा गया लेख, प्रोत्साहित करता है और यें पंक्तियाँ कि ‘‘यदि कोई बात इतने सालों में नहीं बदली हो तो वह है आँखों की रोशनी लौट जाने के बाद प्रापकों के चेहरे पर की मुस्कान तथा उन उदार दाताओं के प्रति कृतज्ञता जिसने उसे संभव बनाया’’ भावी दाताओं के लिये प्रोत्साहक साबित होगा।

एम टी फिलिप

रोटरी क्लब तिरुवनंतपुरम् सबअर्बन

मंडल 3211

रोटरी समाचार में हमारे ‘रोटरी कला उत्सव’ तथा कल्याणदा के अभिनंदन समारोह का बढ़िया तरीके से कवरेज करने के लिये हम आपका शुक्रिया अदा करते हैं। हमारे अनुदान संचयन एवं जन छवि कार्यक्रम -रोटरी कला उत्सव के लिये वडोदरा तक आने की तकलीफ उठाकर आपने हम पर वाकई कृपा कर दी। !

सोनल देसाई,

अध्यक्ष रोटरी क्लब बडौदा मेट्रो मंडल 3060

We welcome your feedback. Write to the Editor: rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com

Governors Council

RI Dist 2981	DG	A Mani
RI Dist 2982	DG	T Shanmugasundaram
RI Dist 3000	DG	M Muruganandam
RI Dist 3011	DG	Dr N Subramanian
RI Dist 3012	DG	Sharat Jain
RI Dist 3020	DG	Dr S V S Rao
RI Dist 3030	DG	Mahesh H Mokalkar
RI Dist 3040	DG	Darshan Singh Gandhi
RI Dist 3051	DG	Dinesh Kumar V Thacker
RI Dist 3052	DG	Ramesh Choudhary
RI Dist 3053	DG	Bhupendra Jain
RI Dist 3060	DG	Hitesh Manharlal Jariwala
RI Dist 3070	DG	Dr Sarbjeet Singh
RI Dist 3080	DG	Raman Aneja
RI Dist 3090	DG	Sanjay Gupta
RI Dist 3110	DG	Dr Ravi Mehra
RI Dist 3120	DG	Dr Pramod Kumar
RI Dist 3131	DG	Prashant Deshmukh
RI Dist 3132	DG	Pramod Shashikant Parikh
RI Dist 3141	DG	Gopal Rai Mandhania
RI Dist 3142	DG	Dr Chandrashekhar Kolvekar
RI Dist 3150	DG	Ratna Prabhakar Anne
RI Dist 3160	DG	Sreerama Murthy
RI Dist 3170	DG	Dr Vinaykumar Pai Raikar
RI Dist 3181	DG	Dr R S Nagarjuna
RI Dist 3182	DG	Devarunda Subbegowda Ravi
RI Dist 3190	DG	H R Ananth
RI Dist 3201	DG	Dr Prakash Chandran Arackal
RI Dist 3202	DG	Dr Jayaprakash P Upadhya
RI Dist 3211	DG	Dr John Daniel
RI Dist 3212	DG	Dr K Vijayakumar
RI Dist 3230	DG	Natrajan Nagoji
RI Dist 3240	DG	Dr Rintu Guha Niyogi
RI Dist 3250	DG	Dr R Bharat
RI Dist 3261	DG	Deepak Mehta
RI Dist 3262	DG	Narayan Nayak
RI Dist 3291	DG	Shyamashree Sen

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP	Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP	Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
PRID	Sudarshan Agarwal	RI Dist 3011
PRID	Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID	Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID	Ashok Mahajan	RI Dist 3140
PRID	Yash Pal Das	RI Dist 3080
PRID	Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID	P T Prabhakhar	RI Dist 3230
RID	Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
RIDE	C Basker	RI Dist 3000

Executive Committee Members (2016–17)

DG	M Muruganandam Chair - Governors Council	RI Dist 3000
DG	Shyamashree Sen Secretary - Governors Council	RI Dist 3291
DG	Sarbjeet Singh Secretary - Executive Committee	RI Dist 3070
DG	Natarajan Nagoji Treasurer - Executive Committee	RI Dist 3230
DG	Gopal Rai Mandhania Member - Advisory Committee	RI Dist 3141

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

Send all correspondence and subscriptions to

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers, 34 Marshalls Road
Egmore, Chennai 600 008, India.
Phone : 044 42145666
e-mail : rotarynews@rosaonline.org
Website : www.rotarynewsonline.org

Printed by Mukesh Arneja at Thomson Press (India) Ltd, Plot A-9, Industrial Complex, Maraimalai Nagar 603209, India and published by Mukesh Arneja on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust or Rotary International. No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced, but with permission from RNT.

जगमगाहट और असाधारणता का मिश्रण

जब आपके इंस्टीट्यूट की विषयवस्तु *कुछ भी असंभव* नहीं, हो तो क्या आप रो इ के अध्यक्ष को अपने सबसे पहले निवेदन – कार्यक्रम के लिये खास तौर पर 'टी-शर्ट' बनाना'– को पूरे किये बिना ही घर लौटने देंगे? चाहे उसे सुबह के 6 बजे तक और ठीक उस वक्त जब जगमगाते दुबई इंस्टीट्यूट के संचालक, रो इ के निदेशक मनोज देसाई तथा चेयरमैन राजा सीनिवासन दोनों, अध्यक्ष जॉन जर्म तथा उनकी पत्नी जूडी को, इंस्टीट्यूट के समापन के बाद अबुधाबी हवाई अड्डे तक विदा करने चल पड़े थे, तैयार किया गया हो, तब भी? जाहिर है ऐसा नहीं होने देते, सो सीनिवासन ने अपनी टीम के एक सदस्य को जगाया और तुरंत टी शर्ट को स्वागत कक्ष में लाया गया। यदि जयपुर इंस्टीट्यूट रंगीन और सुरुचिपूर्ण था तो दुबई इंस्टीट्यूट जगमगाहट और असाधारणता का मिश्रण था। आगंता डी जी यों या GETS के लिये विवाद हल करने का सत्र का आयोजन एक बेड़े में किया गया। कहीं आप यह ना समझ ले कि इसे लकड़ियों के लट्ठों को बाँधकर बनाया गया होगा, जैसा कि तमिलनाडु के मछुआरों द्वारा उपयोगित काम चलाऊ नाँव, तो जान लीजिये कि वह असल में एक सुख साधनों से सुसज्जित नौका थी। इसके बाद बारी आयी दुबई के मशहूर रेगिस्तानी सफारी की, जिसने डी जी ओं तथा उनके सहभागियों में उत्साह और स्फूर्ति भर के रख दिया। अगले दो मुख्य कार्यक्रम– इंस्टीट्यूट का उद्घाटन समारोह तथा पुरस्कार रात्रि– दुबई के दो अति मशहूर ऐतिहासिक स्थलों में आयोजित किये गये थे। पहला था बुर्ज अल अरब की भव्य पार्श्वभूमि में जुमैरा समुद्रतट तथा दूसरा था संगीत के तालपर डोलते फव्वारों के बीच, दुनिया की सबसे ऊँची इमारत बुर्ज खलीफा का अरमानी पेवेलियन।

हाँ, इंस्टीट्यूट के चेयर सीनिवासन और उनके साथियों ने अन्य देश में एक अद्भुत इंस्टीट्यूट का आयोजन किया और वह भी 930 से अधिक प्रतिनिधियों के लिये। इन प्रतिनिधियों को हवाई अड्डे से तीन अलग होटलों तक पहुँचाया गया और वहाँ से आरामदेह कोच गाड़ियों में पहले दिन के उद्घाटन स्थल तक तथा अगले रोज बुर्ज खलीफा तक पहुँचाया गया। दोनों जगहों में सबसे बड़ा फायदा था 'सिट-डाउन' (बैठकर खाना) डिनर का आयोजन जिसमे अरबी, अंतर्राष्ट्रीय तथा भारतीय पकवान परोसे गये। ताज्जुब की बात यह थी कि पेयों के लिये पर्याप्त काउंटर लगे थे और किसी तरह का धक्कम धक्की या भीड़ लगाने वाली बात नहीं देखी गयी। बस सीधे काउंटर पर जाकर, आपके शर्ट को भीड़ में खोये बिना एक गिलास बीयर या शराब मिल पाती थी। और सबसे अच्छी बात यह थी कि महिलाओं के शौचालय साफ सुथरे, बदबू के बिना थे। महिलाओं के लिये यह कितनी राहत वाली बात थी, केवल वे ही बता पायगी। प्रतिनिधियों के लिये इसे यादगार बनाने के लिये राजा की टीम ने दिल और जान से कोशिश की थी; सबसे बड़ी राहत वाली बात थी पर्याप्त 'टॉक टाइम' के साथ सिम कार्ड मिल पाना जिसके लिये आपको पासपोर्ट और दौड़-धूप करने की जरुरत नहीं पड़ी जैसा कि आम तौर पर किसी विदेश में सिम कार्ड पाने के लिये करना पड़ता है। और फिर एक थैलो– ना, ना, तोहफों से भरी थैलियाँ, देखकर अनुभवी से अनुभवी प्रौढ़ों में भी बच्चों जैसी उत्सुकता जाग जाती है और टीम DDZI ने उपहार थैलियों में कुछ बढ़िया तोहफे रख दिये थे! लेकिन सबसे अच्छी बात यह थी कि कार्यक्रम स्थल तक जाने या उससे भी जरुरी बात, एक शानदार डिनर और दिन भर की कार्रवाइयों के बाद वापिस होटल लौटने, बस के लिये आपको 5-10 मिनटों से ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ता था। या खड़े-खड़े, अपनी हैंड बैगों के साथ बाजीगरी करते हुये या जैसा कि मेरे साथ हुआ कैमरा के थैले के साथ झूझते हुये भारी थालियों में खाना परोस लेने भी दिक्कत नहीं महसूस हुयी।" वक्तागण भी नामी थे – लिएंडर पेस, माइक मैक क्वीन, गैस सं *गूँज* से अंशु गुप्ता, खास तौर पर उत्कृष्ट रहे। प्रतिनिधियों को पता भी नहीं होगा कि कमरों को आरक्षित करने के पीछे कितनी बाजीगरी करनी पड़ी थी और मोल-भाव करना पड़ा था, अचानक आरक्षण को रद्द करने के लिये कितनी बातचीत करनी पड़ी, और आखिरी घड़ी तक, प्रतिनिधियों की अभूतपूर्व 'लहर' को संभालना कितना मुश्किल था। अक्सर कोई शानदार कार्यक्रम, एक छोटे से कुप्रबंधन की वजह से लड़खड़ा जाता है। लेकिन आप हवाई अड्डे से होटल तक तथा होटल और कार्यक्रम स्थल के बीच आने-जाने आरामदेह परिवहन, साफ शौचालय, बैठकर खाने के लिये एक अच्छी जगह दे दीजिये और आप मुझे अपना दोस्त बना सकते है। निश्चित ही दुबई के अधिकाँश प्रतिनिधिगण मुझ से सहमत होंगे। और एक बात! दुबई में एक बड़ा राज खुला! यह कि इंस्टीट्यूट की तैयारी करते करते राजा का 7 किलो वजन घट गया–जिसके लिये उन्होंने कई सालों तक कोशिश की थी, लेकिन नाकामयाब रहे थे!

रशीदा भगत्

प्रस्तावों का एक महत्वाकांक्षी संग्रह

प्रिय साथी रोटेरियनों,

जैसे ही हम वर्ष 2017 में प्रवेश करेंगे हम साथ ही संयुक्त राष्ट्र संघ सतत विकास लक्ष्य की पहल के दूसरे वर्ष में प्रवेश करेंगे। इन लक्ष्यों को सामान्यतः एस डी जी से जाना जाता है, जो 17 क्षेत्रों की सूची से संबद्धित है जहां दुनिया के लोग आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक चुनौतियों को संबोधित करने के लिए आगे आ सकते हैं। यह एक अत्यंत महत्वाकांक्षी सूची है और क्यों न हो, इन लक्ष्यों का परम लक्ष्य मानवता के लिए शांति, समृद्धि, सुरक्षा और समानता से कम कुछ नहीं है।

इस योजना को संभालने की शुरुआत आप कैसे करोगे? रोटरी में हमारा उत्तर साधारण है। एक बार में एक कदम। ये लक्ष्य रोटरी के लिए नये नहीं हैं। वे पहले से ही हमारे नियंत्रण के क्षेत्रों में शामिल हैं। हम ये भी समझते हैं कि ये सभी 17 लक्ष्य हमारे नियंत्रण के छह क्षेत्रों की तरह हैं और एक दूसरे से संबंधित हैं। बिना स्वच्छ पेयजल के आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं हो सकता है। बेहतर स्वच्छता के बिना आप पानी को स्वच्छ नहीं रख सकते हैं। बेहतर साफ-सफाई बच्चों को स्कूल में रखने में मदद करती है, जो शिक्षा, आर्थिक समृद्धि और स्वास्थ्य में सुधार लाती है। हम एक पूरे ग्रह की उन्नति के बारे में बात कर रहे हैं, कोई भी सूचक, कोई भी लक्ष्य ,कोई भी देश एकांत जीवित नहीं रह सकते। वास्तविक और अंतिम प्रगति के लिए हमें मिलकर आगे बढ़ना होगा। वास्तविक और अंतिम प्रगति के लिए हमें मिलकर आगे बढ़ना होगा।

स्थिरता का विचार एस डी जी और रोटरी में हमारी सेवाओं की कुंजी की तरह है। स्थिरता का लक्ष्य सामान्यतः प्रगति को पाना है। इसका अर्थ सिर्फ कुआं खोदना नहीं है। लेकिन ये सुनिश्चित करना है कि एक समुदाय इस का रख-रखाव कर सकता है। इसका मतलब सिर्फ एक सप्ताह तक स्वास्थ्य शिविर को चलाना नहीं है बल्कि स्थानीय स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करना है। इसका मतलब परिवारों व समुदायों को उनके स्वयं के भविष्य के निर्णय के लिए सशक्त करना है। उन्हें ऐसे उपकरण देकर जो उनकी सफलता सुनिश्चित करेंगे।

स्थिरता हमेशा रोटरी में हमारी सोच का केन्द्र बिंदु रही है। हम करीबन 112 सालों से यहाँ हैं और कई अधिक सालों तक रहने का इरादा है। हमने देखा है की हमारे कार्यो की वजह से स्वास्थ्य में, शिक्षा में, पेयजल में, साफ-सफाई में और यकीनन पोलियो को खत्म करने के हमारे प्रयासों से कितना फर्क पड़ा है।

पोलियो उन्मूलन स्थायी सेवा में परम है। एक योजना, जिसके पूरे होने पर पूरी दुनिया को लाभ मिलेगा। और इसका लाभ अब तक के कोई भी मानवीय रोग के लाभ से कही ज़्यादा अधिक होगा। एक बार पोलियो का उन्मूलन हो जाए तो हम प्रतिवर्ष एक बिलियन डॉलर की अनुमानित बचत कर पाएंगे। और इस पैसे को जन स्वास्थ्य कोष और अन्य सेवाओं के लिए लौटाया जा सकता है, आज के अच्छे कार्यो को करने के लिए और आने वाले कल को स्वस्थ और बेहतरीन बनाने के लिए।

जॉन एफ जर्म

अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

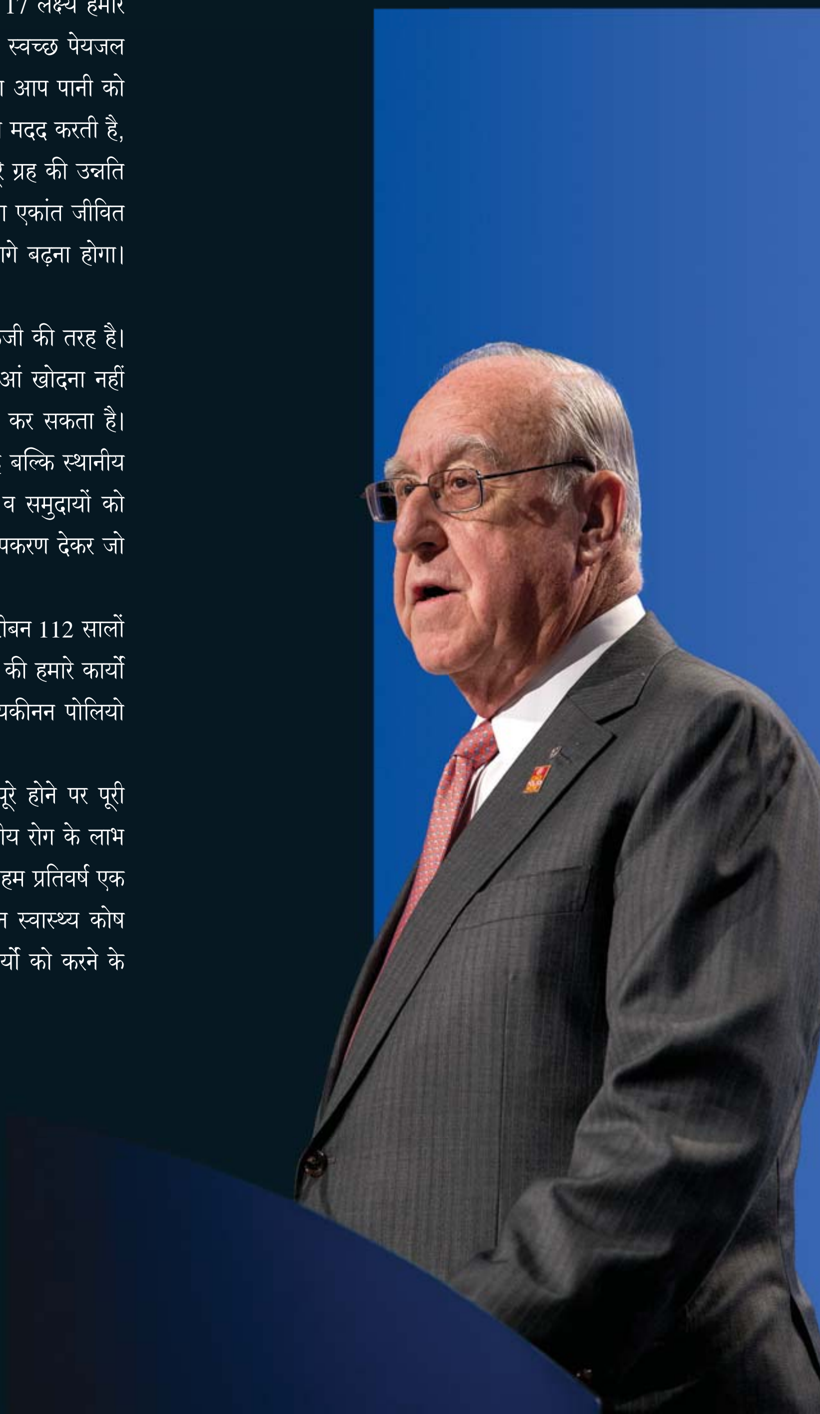

नया साल, नये सपने

मेरे प्यारे दोस्तों,

नव वर्ष की शुभकामनाएं!

शर्मिष्ठा मेरे साथ आपको एक शानदार नए वर्ष 2017 की शुभकामनाएं देती है!

प्रत्येक क्लब एवं मंडल के लिए एक और वर्ष अनेक लक्ष्यों को पूर्ण करने एवं विशाल उपलब्धियाँ हासिल करने में बीत गया। नए मील के पत्थर बनाये गए एवं पुराने रिकॉर्ड तोड़ दिए गए। यह आनंदित कर देने वाली अनुभूति है। हर कोई सामान्यतः नए सपनों के बारे में सोचता है।

रो इ निदेशक होने के नाते, आने वाले वर्ष के लिए मेरे कुछ सपनों को आपके साथ साझा करने दीजिये:

1. सभी मंडलों के गवर्नरों द्वारा WinS एवं साक्षरता की प्रतिज्ञाओं को पूरा करना।
2. रोटरी सी एस आर एवं सरकार के लिए पसंदीदा साझेदार बनना।
3. प्रत्येक मंडल में रणनीतिक योजना का उचित सम्मान एवं उसका अनुसरण किया जाए।
4. ना के बराबर चुनाव के झगड़े हों। ताकि हमारी उपलब्धियों को उचित पहचान मिले।
5. भारत को और अधिक जोन मिलें जिससे कि रो इ मण्डल में बेहतर प्रतिनिधित्व हो सके।
6. आर आई डी ई सी भास्कर अनेक मील के पत्थर बनाते हैं और रोटरी को हमारे क्षेत्र में, अधिक मजबूत एवं अधिक जीवंत बनाते हैं।
7. रोटरी वैश्विक पोलियो उन्मूलन का लक्ष्य हासिल करना।
8. नोबेल पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं की सूची में रोटरी का नाम दर्ज होना।

क्या मेरी इच्छाएं बहुत अधिक है? दोस्तों, यदि हम सभी को अपनी क्षमताओं पर विश्वास है, तो ये बहुत अधिक नहीं है। बस याद रखिये कि सर विंस्टन चर्चिल ने क्या कहा था: कभी, कभी, कभी हार मत मानों। आपका नववर्ष अद्भुत हो!

मनोज देसाई

निदेशक, रोटरी इंटरनेशनल

फाउंडेशन न्यासी
अध्यक्ष का संदेश

नववर्ष मनाइये

विभिन्न पंचांगों में नववर्ष की शुरुआत जनवरी से होती है। लेकिन रोटरी में हम नववर्ष की शुरुआत जुलाई में करते हैं। यह हमारी प्रगति का भंडार करने के लिए अच्छा समय है और वर्षभर के लक्ष्यों के लिए बिंदु को दर्शाता है।

रोटरी फाउंडेशन द्वारा किए जाने वाले वार्षिक कार्यो की सूची इस प्रकार हो सकती है:

- एन्ड पोलियो नाउ अभियान के लिए बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन जो प्रति 1 डॉलर के लिए 2 डॉलर जोड़ेगा का लाभ उठाना।
- अनुदान के ज़रिए सामुदायिक सहयोग और समुदाय को सूचित के लिए साधारण व बड़े पैमाने पर योजना शुरू करना।
- रोटरी शांति केन्द्र कार्यक्रम के लिए होनहार उम्मीदवार की सिफारिश करना।
- रोटरी अध्येता या व्यावसायिक प्रशिक्षण टीम की मेज़बानी करना।
- आसान आवर्ती देने के लिए रोटरी डायरेक्ट में नामांकन करना।
- अपनी वसीयत में संपत्ति की योजना में फाउंडेशन के लिए कुछ शामिल करना।
- रोटरी इंटरनेशनल क्रेडिट कार्ड के लिए आवेदन करें। इस से प्रत्येक खरीदारी के बाद भुगतान का एक भाग रोटरी फाउंडेशन को मिलेगा।

जैसा आप देख सकते हैं कि हमारे संगठन को सहयोग देने के लिए यहां कई रास्ते हैं। मानवता के मिशन को अंजाम दीजिए। इस वर्ष हमने हमारी जांचसूची में एक दूसरी चीज़ भी जोड़ी है। रोटरी फाउंडेशन की शताब्दी को मनाइये।

यहां कुछ रास्ते हैं जिससे आप इस मील के पत्थर का निरीक्षण कर सकते हैं:

- रोटरी और इस फाउंडेशन के बारे में लोगों को और अधिक बताने के लिए अपने समुदाय में जन्मदिन समारोह या कोष को बढ़ाने वाले किसी कार्यक्रम की योजना के लिए अपने क्लब के साथ कार्य करें। *rotary.org/foundation100 for ideas* वेबसाइट से प्रमोशन किट डाउनलोड करें।
- अपने क्लब द्वारा किये गए फाउंडेशन अनुदान योजना का स्थानीय मीडिया में प्रचार करें।
- रोटरी फाउंडेशन के मुद्दों पर विचार-विमर्श करने के लिए क्लब की समर्पित बैठकों का आयोजन करें।
- Doing Good in the World – The Inspiring Story of The Rotary Foundation's First 100 Years में रोटरी फाउंडेशन के इतिहास के बारे में पढ़ें। हार्डबैक और ई-फॉर्मेट किताब की प्रतियां *shop.rotary.org* वेबसाइट पर उपलब्ध है।
- आपके शताब्दी योजना और कार्यक्रमों को #TRF100 के साथ सोशल मीडिया पर शेयर करें।

यकीनन, 10 से 14 जून अटलांटा में सबसे बड़ा जन्मदिन समारोह का आयोजन होगा। जब रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन के लिए हजारों रोटेरियन साथ होंगे। मुझे उम्मीद है कि आप मेरे और फाउंडेशन न्यासीयों के साथ होंगे और इसे इस वर्ष की सबसे बेहतर पार्टी बनाएंगे।

Kalyan Banerjee

कल्याण बैनर्जी
फाउंडेशन न्यासी अध्यक्ष

कैंसर की देखभाल में गुणवत्ता मामले

पूर्व की अपेक्षा अधिक बच्चे कैंसर से जीवित बच रहे हैं। अधिकांश प्रकार के कैंसर पूर्ण रूप से ठीक किए जा सकते हैं किंतु या तो उसके लिए अधिक सुविधाएँ सज्जित नहीं थीं अथवा लोग सजग नहीं थे। कारण भिन्न थे, कुछ मरीज विशिष्ट और कुछ तुच्छ थे। उदाहरण के लिए, अस्पताल तक जाने के लिए धन न होना अथवा यहाँ उनका साथ देने के लिए कोई नहीं, ऐसा नहीं कहा जाना कि बीमारी चार अथवा पाँच मुलाकातों में पूर्ण रूप से ठीक की जा सकती है, इत्यादि।

आँकड़े खुलासा करते हैं कि प्रत्येक वर्ष हमारे राज्य में लगभग 6000 से 8000 बच्चों में कैंसर की पहचान होती है। हमारे राज्य में ठीक होने की समग्र दर का आकलन 10% किया जाता है जब विश्वव्यापी मानक 90% से तुलना की जाती है।

उन बच्चों में से 40% BPL से संबंध रखते हैं। कैंसर का उपचार बहुत महँगा है और इन लोगों के लिए वहनीयता के परे है, जिसका परिणाम मृत्य होता है। वंचित वर्ग के बच्चों के पास कोई साधन अथवा वित्तीय सहायता नहीं होती है। बसावर्तकम इंडो अमेरिकन कैंसर हॉस्पिटल एंड रिसर्च इंस्टिट्यूट (BIACHRI) आप जैसे संरक्षकों के उदार दानों के माध्यम से निशुल्क उपचार प्रदान करने के पदों में ऐसे लोगों की सहातया करता है। उपचार में आवश्यकता के आधार पर कीमोथेरेपी, रेडियोथेरेपी और सर्जरी सम्मिलित होती है।

हम कैंसर से लडने वाले बच्चों की देखभाल को सुधारने के लिए हमारे प्रयास में आपकी उदार सहायता की वास्तव में प्रशंसा करते हैं। आपका योगदान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अंतर्गत खढ लाभों का पात्र है।

प्राप्त दानों का खाता पृथक रूप से रखा जाता है और उल्लेखित उद्देश्य के लिए न्यायपूर्वक खर्च किया जाता है

हम रु 50,000 और अधिक के दानदाताओं को स्वयं और दंपत्ति के लिए एक प्रशंसात्मक कैंसर चेक, रु 25,000/- और अधिक के दानदाताओं को स्वयं के लिए एक प्रशंसात्मक कैंसर चेक और रु 10,000/- हम स्वयं के लिए कैंसर जाँच पर 10% छूट प्रदान कर रहे हैं।

समय निर्धारण के लिए कृपया संपर्क कीजिए +91 95537 98500, +91 98493 98879

For those using EFT/ NEFT/ RTGS payment System INR donations to the following Bank Account.

Name of the Account: **Smt. Nandamuri Basavataraka Rama Rao Memorial Cancer Foundation Corpus Fund A/c.**

Bank Account No.: **151411100000070**

Name & Address of the Bank: Andhra Bank, Road No. 14, Banjara Hills, Hyderabad - 500 034

MICR Code No.: 500011118 | IFSC Code No.: ANDB0001514 | SWIFT Code: ANDBINBB

You can also pay Online or with your Credit Card. Visit our **www.induscancer.com**

Please download form from our website and send in duly filled along with your cheque/ DD to the below address

BASAVATARAKAM INDO-AMERICAN CANCER HOSPITAL & RESEARCH INSTITUTE

Dept. of Corporate Affairs and Strategic Alliance

BASAVATARAKAM INDO-AMERICAN
CANCER HOSPITAL AND RESEARCH INSTITUTE

Promoted by Smt. Nandamuri Basavataraka Ramarao Memorial Cancer Foundation and Indo-American Cancer Organisation

Road No. 14, Banjara Hills, Hyderabad - 500 034 India T: +91 40 2355 1235 Ext. 2315

WINNER 2015
CNBC TV18 & ICICI LOMBARD India Healthcare Awards, 2014
Best Single Speciality Hospital "ONCOLOGY"

Amongst India's
15 Best Cancer Hospitals
The WEEK-NIELSEN Survey, 2013 & 2014

www.induscancer.com **Toll-free: 1800 4253 6666**

दुनिया को बदलने के लिये जरूरी है सम्मिलित कार्य : जॉन जर्म

रशीदा भगत्

दुबई में जोन इंस्टीट्यूट के शानदार उद्‌घाटन समारोह में, रो इ के अध्यक्ष जॉन जर्म ने, रोटरी के प्रधान मूल्यों तथा सम्मिलित रूप में मिलकर काम करने के अपने स्पष्ट संदेश से, दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

चाहे कोई व्यक्ति इंजीनियर हो जैसा कि वे खुद थे, या किसी अन्य पेशे में हो, एक, एक दिन काम करते रहे जिसका एक ''जीवन-परिवर्तनीय प्रभाव रहा। ऐसा काम, जिससे लोग बेहतर, सुरक्षित और स्वस्थ जिंदगी बसर कर सकते हैं। ठीक ऐसा काम जिसे हम रोटरी में करते आ रहे हैं।'' इन शब्दों के साथ, रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म ने, जगमगाते दुबई जोन इंस्टीट्यूट (DDZI) की विषयवस्तु कुछ भी असंभव नहीं है के आधार पर अपने प्रधान संबोधन के जरिये वहाँ उपस्थित 900 के आसपास विशेष प्रतिनिधियों को संलग्न कर दिया। रोटेरियनों को नाज़ करना चाहिये ''क्यों कि दुनिया के हर एक हिस्से में, हर एक दिन, आप जैसे रोटेरियनों के अच्छे काम की वजह से, लोग एक बेहतर, अधिक सुरक्षित और स्वस्थ जिंदगी बसर कर रहे हैं, चाहे वे इस बात को जानते हो या ना जानते हों,'' उन्होंने कहा।

रोटेरियन जिन लोगों की मदद करते हैं, वे लोग शायद जिंदगी में किसी भी रोटेरियन से नहीं मिले होंगे या उन्हें रोटरी की मौजूदगी के बारे में पता भी नहीं होगा।

लेकिन वे किसी ऐसे बोरवेल का साफ पानी पी रहे होंगे जिसे रोटरी ने खोदा है या ऐसे स्कूलों

में पढ़ रहे होंगे जिसे रोटरी ने बनवाया है या एक पोलियो मुक्त जिंदगी जी रहे होंगे क्योंकि रोटरी को इस बीमारी का उन्मूलन करने का मौका मिला और उसने उसे 'हथिया' लिया। और इस तरह रोटरी ने मानव सेवा की है, इस साल अपने अध्यक्षीय वर्ष की विषयवस्तु को लेकर जर्म ने कहा।

चौराहे पर

जर्म ने वहाँ उपस्थित लोगों से कहा कि रोटरी चौराहे पर खड़ा है क्योंकि ''हम अपने सामने एक ऐसे रोटरी वर्ष की ओर देख रहे हैं जो एक दिन हमारे इतिहास का सर्वोत्कृष्ट वर्ष के रूप में जाना जायेगा; वह वर्ष जब पोलियो का पूरी तरह से खात्मा हो जायेगा। अब तक इस साल के पोलियो मामलों की संख्या 28 पर रुकी है। लेकिन जहाँ एक ओर मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि हम पोलियो उन्मूलन के कितने नजदीक पहुँच गये हैं वहाँ दूसरी ओर मैं यह भी चाहता हूँ कि आप जान लें कि हम अब तक वहाँ नहीं पहुँचे हैं।''

इस अगस्त में, नाईजीरीया में पोलियो के चार मामले पाये गये; लगभग दो सालों में अफ्रीका में पाये गये पहले मामले। हालाँकि यह ''निराशा वाली बात थी क्योंकि हमने उम्मीद की थी कि हम अफ्रीका में पोलियो के आखिरी मामले को देख चुके हैं। लेकिन हम यह भी जानते थे कि कोई नया मामला दिखायी दे सकता है और जब ऐसा हुआ तो हम उसका सामना करने के लिये तैनात थे।''

जर्म ने बतलाया कि जब पहले मामले के बारे में पता चला तो प्रकोप प्रतिक्रिया योजना तैयार करने में हमने वक्त बरबाद नहीं किया क्योंकि योजना पहले से ही तैयार थी; विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा नाईजीरीय सरकार ने, लेक चाड प्रदेश में, पाँच देशों के बच्चों के लिये छह टीकाकरण अभियानों की श्रृंखला के साथ उसे कार्यांवित करना शुरू किया।

''हम जानते हैं कि प्रकोप पर रोक लगाने के लिये क्या करना पडता है। हमने पहले भी ऐसे किया है और अब भी कर रहे हैं। जहाँ एक ओर हम सोचते हैं कि ऐसा ना हो तो अच्छा होगा, वहाँ दूसरी ओर वह हमे ऐसी सीख दे रहा है जिसकी हमे जरुरत है। वह हमें नींद से जगा रहा है; इस बात की ताकीद दिला रहा है कि पोलियो कितनी आसानी से वापिस लौट सकता है और पूरी तरह से खात्मा हो जाने तक सतर्क रहना कितना जरुरी है यानि पूरे तीन साल तक जब पोलियो का एक भी नया मामला दर्ज ना किया गया हो।''

रो इ के अध्यक्ष ने अपने दर्शकों को याद दिलाया, जो उनकी बातों को गौर से सुन रहे थें, कि रोटेरियन यह भूल नहीं सकते हैं कि ''इस काम के लिये जरुरी कुल निधि में अब भी 1.5 बिलियन डॉलर कम पड़ रहे हैं। इस पूरी रकम को खुद ही जुटाना हमारा काम नहीं है। लेकिन

रो इ अध्यक्ष जॉन एफ जर्म और जूडी जर्म DDZI का उद्घाटन करते हुए, (बाएं से) इंस्टीट्यूट चेयर वी राजा सीनिवासन और जयंती, शर्मिष्ठा और आर आई डी मनोज देसाई, पी आर आई पी गैरी हुआंग और कोरिना और आयोजन सचिव अभय गड़गिल की उपस्थिति में।

रशीदा भगत

रो इ अध्यक्ष जॉन एफ जर्म आरआईडी मनोज देसाई और डीजी शरत जैन की उपस्थिति में डॉ जे एम हंस को 'व्यावसायिक उत्कृष्ठता अवॉर्ड' से सम्मानित करते हुए।

यहाँ, वहाँ और हर कहीं इसका प्रचार करना हमारा काम है ताकि यह सुनिश्चित हो जाये कि इस रकम को जुटाया जा रहा है। हमने इसे 30 साल पहले शुरू किया था। और हम अब तक इसी काम में लगे रहे हैं। और जल्द ही – 1.9 बिलियन डॉलरें इकट्ठा करने तथा 2.5 बिलियन बच्चों को प्रतिरक्षित करने के बाद – हम उसे पूरा करने वाले हैं।''

जब वह घड़ी आये, तो रोटेरियनों को उसके लिये तैयार रहना होगा; यह सुनिश्चित करना होगा कि ''हमें इस कामयाबी के लिये मान्यता दी जा रही है और उस कामयाबी को अधिक सहभागिताओं, अधिक प्रगति और आगामी दशकों में अधिक महत्वाँकाक्षी सेवाओं के साथ उत्तोलित करें।'' यह जरुरी था कि दुनिया को पोलियो मुक्त करने में रोटरी की भूमिका को मान्यता दी जाये, अधिक सहभागिताओं तथा अधिक निधिकरण, दोनों के लिये।''

दुनिया को बदलना

एक बार रोटरी को एक ऐसी संस्था के रूप में स्वीकार कर लिया जाये जो दुनिया को बदल सकती हो, तो प्रत्येक रोटरी क्लब को उस भूमिका को असरदार तरीके में निभाने के लिये तैयार रहना पडेगा। और इसके लिये, ''हमे ऐसे क्लबों की जरुरत है जो लचीला हो, स्नेहपूर्ण हो और अपने सदस्यों तथा अपने भावी सदस्यों की जरुरतों को पूरा करने के काबिल हो। गत अप्रैल में, आपके विधि परिषद को सबसे प्रगतिशील परिषद घोषित किया गया – जिसने ऐसे सुस्पष्ट निर्णय लिये जो ऐसी सदस्यता को बढ़ाने में रोटरी की मदद करेगा जो वाकई उन समुदायों को प्रतिबिंबित करती हो जिनकी भलाई के लिये रोटरी काम कर रहा हो, पुरूष और महिलायें, सेवानिवृत लोग, कामकाजी लोग जो विभिन्न उम्र के हो, जिनके कौशल विविध हो, और जो भिन्न पार्श्वभूमि से आते हो।''

जर्म ने कहा कि रोटरी क्लबों के पास पहले से ज्यादा ऐसे अवसर है जिनके माध्यम से वें जो बनना चाहते हो बन सकते है, अपनी मर्जी से परिचालन कर सकते हैं, ना केवल नये सदस्यों को आकर्षित

आरआईडीई सी भास्कर और मालती, पीडीजी आर तीनाचंद्रन और वसंती, पीडीजी दीपक शिकारपुर और सोनिया, और पीडीजी सैम मोवा और विजया अगले साल के मलेशिया इंस्टीट्यूट को बढ़ावा देते हुए।

रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता, आईपीआरआईपी के आर रविन्द्रन और पीआरआईपी गैरी हुआंग की उपस्थिति में एकेएस सदस्य हर्षद मेहता को सम्मानित करते हुए।

कर सकते हैं बल्कि उन्हे रोटरी सेवा में भी संबध्द करा सकते हैं... और इस दौरान उन प्रधान मूल्यों के प्रति वफादार रह सकते हैं जिसकी बदौलत वें रोटेरियन के रूप में परिभाषित हो पाये।

वे प्रधान मूल्य जिनके आधार पर 111 साल पहले पॉल हैरीस ने रोटरी की स्थापना की - ईमानदारी, विविधता, सहनशीलता, दोस्ती और शाँति – सभी ''इस सार के लिये'' जरुरी है ''कि हम कौन हैं और रोटेरियन कैसे बना जा सकता है'' और वे कभी नहीं बदलते। हम अब भी वर्गीकारण सिध्दाँतों पर आधारित हैं क्यों कि हमारी विविधता ही हमारी ताकत है। हम अब भी 'चार-मार्ग परीक्षण' को दीवारों पर टाँगकर रखते हैं क्यों कि ऊँचे नैतिक मानक कभी भी पुराने चलन नहीं हो सकते। और हम अब भी मानते हैं, जैसा कि पॉल हैरीस मानते थे, कि मानव सेवा ही सबसे उपयुक्त काम है जिसे हम कर सकते हैं।''

जर्म ने आगे कहा कि हालाँकि रोटरी इतर संस्थाओं के साथ सहभागिता और सहकार्यता कर रहा है ताकि अकेले हासिल करने से कई गुना अधिक उपस्थिति हासिल की जा सके, ''हमे अपने नेतृत्व के बाबत में निरंतरता को प्राथमिकता देने की जरुरत है। क्यों कि हमने पोलियो से यदि कुछ सीखा हो तो वह यही है कि यदि हम जितनी दूर तक जा सकते हैं उतनी दूर जाना चाहते हो तो, हम सभी को मानव सेवा करने एक ही दिशा में चलना होगा।''

उन्होने तथा उनकी सहभागी जूडी ने दुनिया भर में रोटेरियनों द्वारा किये गये ''असाधारण कार्य'' को देखा था। लेकिन इससे भी अधिक किया जा सकता है; अधिक इच्छुक हाथों, परवाह करने वाले दिलों, तेज दिमागों की सहायता से। मानव सेवा करने के नये तथा बेहतर तरीके ढूँढने आँकाक्षा, सृजनात्मकता और नयी बातों को आजमाकर देखने की इच्छा की जरुरत है, उन्होने कहा।

उन्होने वहाँ उपस्थित रोटेरियनों से अर्ज किया कि वें हरगिज नहीं सोचे कि उन्होने जो काम किया था वह छोटा है। ''आप जो कुछ करते हैं वह मायने रखता है खासकर उन लोगों के लिये आप जिनकी

मदद करते हैं और वें लोग जिन्हे आप चाहते हैं, इस पीढ़ी के और अगली पीढ़ी के। हर अच्छा काम जिसे आप करते हैं, इन लोगों की दुनिया को बेहतर बनाता है। एक बार, एक अच्छा काम। एक बार, एक दिन। आपके क्लबों में, आपके समुदायों में, आपके पेशों में: चाहे आप शिक्षक हो, प्रबंधक हो, कारोबार के मालिक हो या इंजीनियर हो।''

लेकिन सबसे बडी बात, याद रखा जाने वाला मंत्र यह था कि रोटेरियनों को वैयक्तिक तौर पर नहीं बल्कि सम्मिलित तौर पर काम करना होगा। तब जाकर वें और भी अधिक कामयाबी हासिल कर पायेंगे।

हाँ, यह संभव है

उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुये DDZI के संचालक तथा रो इ के निदेशक मनोज देसाई ने कहा, DDZI के चैयर राजा सीनिवासन ने वाकई इंस्टीट्यूट की विषयवस्तु 'कुछ भी संभव नहीं' को सही साबित किया। ''मुझे आधी रात को भी विचार सूझते रहते हैं और मैं राजा से पूछने लगता हूँ कि क्या हम इसे कर सकते हैं। और वें कहते हैं, ''जी हाँ सर!''

कार्यक्रम स्थल का चयन, विषयवस्तु के साथ बिलकुल सही बैठता था, जैसा कि दुबई ने साबित कर दिखलाया। ''उनके पास सब कुछ है; रेगीस्तानी बर्फ में 'स्केटींग', दुनिया में सबसे ऊँची इमारत, सबसे शानदार, सुख साधनों से भरपूर होटल, और ऐसी अनेक बातें जिसकी वजह से लाखों मुसाफिर दुबई आना चाहते हैं।''

देसाई ने कहा कि भारत के पोलियो मुक्त हो जाने से जो खाली स्थान पैदा हुआ था उसके बाद भारत के रोटरी नेताओं ने दो सर्वोत्कृष्ट परियोजनायें शुरू की– WinS तथा साक्षरता, जिन्हे कार्यांवित करने में रोटेरियन असाधारण तौर पर कामयाब रहे। हाल में, RILM चैयर शेखर मेहता को, नोबेल पुरस्कार प्रापक कैलाश सत्यार्थी ने, 30 नोबेल पुस्कार प्रापकों के एक शिखर सम्मेलन में आने के लिये आमंत्रित किया था, सिर्फ इस बात पर विचार विमर्श करने कि साक्षरता के लिये भारत में क्या किया जा रहा है! शेखर और टीआरएफ के ट्रस्टी सुशील गुप्ता दोनों, इन बृहत् परियोजनाओं के लिये सहायता पाने में कामयाब रहे हैं जब कि CSR निधि भी मिल रही है, जो इस बात को साबित कर देता है कि रोटरी वाकई एक चहीता सहभागी बन गया है।''

पिछले साल, ''IPPRIP के आर रविंद्रन के नेतृत्व में, हमारे अंचल, सदस्यता संख्या के मामले में अव्वल स्थान पर थे जबकि टीआरएफ को अंशदान देने में दूसरे स्थान पर; हमने 15.38 मिलियन डॉलर इकठ्ठा की है, जिससे भारत हमारे फाउंडेशन का दूसरा बडा अंशदाता बन गया है, यहाँ तक कि जापान को भी पछाड गया है! इन सबसे हमे बेहद बढिया जन छवि मिल गयी है।''

पिछले पाँच महीनों में, ''हम सदस्यता के मामले में अव्वल स्थान पर बने रहे हैं; आप संख्या को जानकर खुश हो जायेंगे: दुनिया भर में 22,000 नये सदस्य दाखिल हुये हैं, और 7,000 नये सदस्यों के साथ भारत का हिस्सा 34 प्रतिशत

इंस्टीट्यूट डायरेक्ट्री का विमोचन करते हुए (दाएं) से इंस्टीट्यूट चेयर राजा सीनिवासन, रो इ निदेशक मनोज देसाई, रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म, पीडीजी अशोक कपाड़िया, आरएनटी डिप्टी एडमिन मैनेजर आर विश्वनाथन और आरएनटी संपादक रशीदा भगत्।

DDZI सितारे (बाएं से) इंस्टीट्यूट वाइस चेयर टीवीआर मूर्ति, डीजी जॉन डेनियल, पीडीजी टिक्कू, चेयरमैन राजा सीनिवासन, आरआईडी मनोज देसाई, आयोजन सचिव अभय गड़गिल और डीजीई बी एम शिवराज।

का बनता है। हम ने टीआरएफ को अब तक 1.8 मिलियन डॉलरें दिये है लेकिन कल, टीआरएफ के डिन्नर पर, खुलासा किया गया कि हमने इस साल 20 AKS सदस्यों का लक्ष्य निर्धारित किया है। इससे भारत से AKS सदस्यों की संख्या 70 हो गयी है। अविश्वसनीय बात! और हमारे बीच हर्षद मेहता जैसे उदार दातागण हैं जिन्होने फाउंडेशन को मिलियनों डॉलरें दिये है और भारत से राजश्री बिरला के बाद वें ही दूसरे बडे अंशदाता हैं,'' देसाई ने कहा।

डीजीओं के वर्तमान दल को संबोधित करते हुये, जिन्हे देसाई अपने ''मुस्कुराते शेरीफ'' बतलाते हैं, रो इं के निदेशक ने, टीआरएफ ट्रस्टी चैयर कल्याण बैनर्जी को एक स्वैच्छिक लक्ष्य दिलाने के लिये सराहा कि वें टीआरएफ के शताब्दिक वर्ष के दौरान 26.5 मिलियन डॉलर इकठ्ठा करेंगे। ''अनेक मंडलें, नियमित रकम से 3-4 गुना ज्यादा देने का वादा कर रहे हैं...फिर एक बार, एक नया 'नियमित' आँकडा। क्या आप विश्वास करेंगे, अध्यक्ष जॉन, कि भारत में, अब 1 मिलियन डॉलर का डिन्नर आयोजित किया जाता है? पहला दिल्ली में किया गया; सुशीलजी (टीआरएफ के ट्रस्टी सुशील गुप्ता) ने अगुआई की जब कि डीजीगण सरत् जैन तथा एल सुब्रमणियन् ने उसे कार्यांवित किया।''

चुनावी मामलों में भी, पिछले साल शिकायतें कम हो गयी और अब ई-मतदान का चलन है। ''हम उम्मीद करें कि आप सभी इस बाबत में साथ देंगे और इस साल शिकायतें नहीं रहेंगी क्यों कि RIDE सी भास्कर ने भी फैसला कर लिया है कि आगे बढ़ने का यही सही रास्ता है।''

डॉ जे एम हंस के गरीब परिवारों से आनेवाले बच्चों पर महंगी कर्णावर्त प्रतिरोपण शल्य चिकित्सा, नि:शुल्क करने के (विस्तृत खबर *रोटरी समाचार* के नवंबर अंक में https://rotarynewsonline.org/givingone-more-life/ उत्कृष्ट कार्य के लिये व्यावसायिक सेवा पुरस्कार से उन्हे सम्मानित करने के बाद, इंस्टीट्यूट के चैयर सीनिवासन् ने घोषित किया कि DDZI, मंडल 3141 की परियोजना एक नयी जिंदगी देना की सहायता में एक ऐसी शल्य चिकित्सा के लिये निधि देने वाला है, जो डॉ हंस के लिये उपयोगी साबित होगा।

RIDE भास्कर तथा अगले वर्ष के जोन इंस्टीट्यूट 'मेजेस्टीक मलेशीया' के चैयर दीनचंद्रन कुआला लंपूर में, दिसंबर 1-3 2017 के बीच आयोजित होने वाले इंस्टीट्यूट पर एक प्रस्तुति पेश कर रहे हैं। (कार्यक्रम स्थल, पंजीयन शुल्क, आदि के बारे में रोटरी समाचार के दिसंबर अंक में विस्तृत खबर (*https://rotarynewsonline.org/2017-institute-kuala-lumpur/)* उद्घाटन समारोह में इंस्टीट्यूट की निदेशिका को जारी करते हुये रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट के डिप्टी एडमिन मैनेजर के विश्वनाथन् तथा RNT के कर्मचारियों के कठिन एवं कुशल काम की सराहना करते हुये उन्हे मान्यता दी गयी। इंस्टीट्यूट के चैयर सीनिवासन ने सभा का स्वागत किया जब कि उप चैयर टीवीआर मूर्ति ने धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया।

चित्र: के विश्वनाथन

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपांकन

कामयाब गवर्नरशिप के लिये जर्म की सीख

रशीदा भगत्

आप ही डी जी ई ओं (निर्वाचित मंडलाध्यक्ष) का एकमात्र ऐसा समूह है जो मीलों तक रेत पर दौड़ते रहने और फिर रेत के टीलों को जमा करते हुये टकराकर गिरने के बावजूद सही सलामत नजर आ रहे हैं। और आप यहाँ तक आ ही गये, है न? लेकिन अगले साल आपके साथ ऐसा नहीं होगा।''

इन शब्दों के साथ जॉन जर्म ने रेत के टीलों तथा गगनचुँबी इमारतों से जगमगाते शहर दुबई में, चौंधिया देने वाले दुबई रोटरी ज़ोन इंस्टीट्यूट के GETS दीक्षाँत समारोह के दौरान 2017-18 वर्ष के मंडलाध्यक्षों का स्वागत किया। अगले साल, ''आप रेगिस्तानी सफारी में जा रहे होंगे और इतना अच्छा महसूस कर रहे होंगे कि लो हमने इसे कर दिखला ही दिया है, कि अचानक आप नीचे गिर पड़ेंगे क्योंकि आप में से किसी ने अपना काम सही तरीके से पूरा नहीं किया होगा। सो मैं आप लोगों को बतलाने वाला हूँ कि किस तरह आप खुद मंडलाध्यक्ष के रूप में अपने कार्य वर्ष की कामयाबी की कुँजी बनने जा रहे हैं।'' उन्हें यह सोचकर चलने की सलाह देते हुये कि ''आज आपकी शेष जिंदगी का पहला दिन है,'' उन्होंने कहा उनकी कामयाबी, उनकी वैयक्तिक क्षमता या प्रयासों के बलबूते पर नहीं बल्कि यहाँ से वापिस जाते समय ''आपने जो कुछ यहाँ सीखा उसे अपने मंडल तक ले जाने और अपनी टीम का गठन करने बेहतरीन लोगों का चयन करने'' के बलबूते पर हासिल की जा सकेगी। और जैसा कि

मैंने नौका में (बेडे में आयोजित GETS का सत्र) कहा था, मिलकर हर कोई ज्यादा हासिल कर सकता है। सो एक, ऐसी जबरदस्त टीम तैयार कीजिये ताकि आपका मंडल उत्कृष्ट मंडल बन पाये।''

उन्हें यह भी याद रखना होगा कि ''रोटरी का निर्माण, एक दिन में-एक बार, किया जा सकता है; जैसे एक ही बार, एक गाँव और एक व्यक्ति। अब समय आ गया है जब आप अपने कार्य वर्ष को बेहतरीन बनाने, अपने 'कामगारों' को एक साथ काम पर लगायें।''

जर्म ने वाल्ट डिजनी के शब्दों को दोहराते हुये कहा: 'यदि आप उसे ख़्वाब में देख सकते हैं तो आप उसे हासिल भी कर सकते हैं,' और आगे कहा, ''यह शहर/देश भी सपने के बलबूते पर बनाया गया था। भारत ने भरोसा रखा कि एक दिन वह पोलियो मुक्त हो जायेगा और अब वह पोलियो-मुक्त बन गया है। आपको भरोसा था कि आप अपने ज़ोन (अंचल) से निकलकर बाहर आ सकते हैं और एक बेहद कामयाब ज़ोन सभा में हिस्सा ले सकते हैं।'' एक सकारात्मक नजरिये के साथ लीक से हटकर सोचने से कुछ भी हासिल किया जा सकता है।

के विश्वनाथन

पीआरआईपी गैरी हुआंग इंस्टीट्यूट को संबोधित करते हुए।

(बाएं से) रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म, जूडी जर्म, आरआईडी मनोज देसाई, शर्मिष्ठा, जयंती सीनिवासन और इंस्टीट्यूट के चेयर वी राजा सीनिवासन।

रशीदा भगत

मार्गदर्शक बनें, संचालक नहीं

अपने जोशीले वक्तव्य में, जर्म ने आगंता डीजीओं के सम्मुख एक और महत्वपूर्ण विचार पेश किया कि वे दूसरों द्वारा 'संचालित' ना हो। ''याद रखें कि लोग संचालित नहीं होना चाहते। वे आपसे नेतृत्व की उम्मीद करते हैं। उन्हें ऐसे लोग चाहिये जो सही निर्देशन दे पायें। हमने विश्व संचालकों के बारे में कभी नहीं सुना है, लेकिन हमने विश्व नेताओं, राजनैतिक नेताओं, कारोबारी, सामुदायिक, मजदूर नेताओं के बारे में सुना है; वे संचालन नहीं करते, वे मार्गदर्शन करते हैं। आपको अपने क्लब का, अपने मंडल का नेता बनने की जरुरत है,'' उन्होंने कहा। इस बात की पुष्टि करते हुये कि जोश के बिना, समस्याओं के प्रति एक उचित नजरिये के बिना और उन्हें सुलझाने के प्रति वचनबध्दता के बिना कभी भी, कुछ भी हासिल नहीं किया गया, जर्म ने कहा, ''अगले साल आप दो बातों की वजह से परिसीमित हो जायेंगे; आपकी कल्पना शक्ति और कल्पना शक्ति का अभाव। जिस किसी का आप सपना देखेंगे, उसे हासिल कर पायेंगे। सो ऊँचे लक्ष्य स्थापित कर लें, क्योंकि उसे हासिल करने की क्षमता आप में है। आप हमसे आपकी सहायता करने की, आपको सलाह देने की उम्मीद रख सकते हैं लेकिन डी जी होने के नाते कुछ कुर्बानी करने के लिये भी तैयार रहें, क्योंकि अपने लक्ष्य को हासिल करने से जो खुशी मिलती है उसे देखते हुये यह कुर्बानी जायज ही मालूम होगी।''

उन्होने डी जी ई ओं को यह भी सलाह दी कि वे आशावादी लोगों के बीच रहे। ''आपको ऐसे लोगों की जरूरत नहीं जो ना कहते हो; आपको ऐसे लोगों की जरूरत है जो कहते हों कि हम यथा संभव कोशिश करें कि क्या किया जा सकता है।'' उन्होंने याद दिलाया कि ''हम सभी के योगदान से ही रोटरी कामयाब हो सकता है। आप ऐसे डीजी बन सकते हैं जो बैठे-बैठे कार्रवाईयों को देखते रहते हो; आप

आप ऐसे डी जी हो सकते हैं जो कार्रवाईयों को बैठे-बैठे देखते ही रहते हो; या आप सोच में पड़ जाते हो कि क्या हो रहा है; या खुद उसे कामयाब बना सकते हैं, क्योंकि आप ही सर्वोत्कृष्ट हैं।

रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म

मानवीय संबंधों में एक लघु पाठ्यक्रम

जर्म ने निर्वाचित डीजीओं को कुछ सुझाव दिये जो ''आपके कार्य वर्ष के दौरान सहायक साबित होंगे; इसे मानवीय संबंधों में लघु पाठ्यक्रम कहा जाता है।'' यहाँ पाँच सबसे अहम शब्द है, 'मैंने एक गलती कर दी'; चार सबसे अहम शब्द है 'आपने अच्छा काम किया'; अगले तीन शब्द 'कृपया यदि आप'; आखिर में 'आपका शुक्रिया'।

और सबसे कम अहम इकलौता शब्द है 'मैं' जब कि सबसे ज्यादा अहम इकलौता शब्द है 'हम'। ''यदि इन्हें आप गंभीरता से लें और उन्हें प्रयोग में ले आयें तो आप एक ऐसी बढ़िया टीम का गठन कर पायेंगे जो आपके कार्य वर्ष की कामयाबी के लिये जरुरी है।''

रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म और पत्नी जूडी। आरआईडीई सी भास्कर और पत्नी मालती भी तस्वीर में दिखाई दे रहे हैं।

के विश्वनाथन

रो इ अध्यक्ष महोदय ने 2017-18 वर्ष के डीजीओं को आगाह भी किया कि अपने कार्य वर्ष के दौरान अपने मंडल में उन्हें हर तरह के लोगों का सामना करना पड़ेगा। ''आप ऐसे लोगों को देखेंगे जो बैठकों में आकर महज कार्रवाइयों को देखते है और उससे भी बदतर - आपको ऐसे लोग भी मिलेंगे जो सोच में पड़ जायेंगे कि यहाँ क्या हो रहा है। वें इन कामयाबियों को देखने के बाद दंग होकर पूछने वाले हैं कि यह कामयाबी कैसे हासिल की गयी। तीसरे किस्म के लोग वे हैं जो इसे हासिल करने वाले हैं। आपकी टीम इस तीसरे किस्म की हो।''

जर्म ने निर्वाचित डीजीयों को एक सकारात्मक नज़रिया अपनाने की, कामयाबी हासिल करना चाहने की, उन लोगों को हटा देने की सलाह दी, जो कहते हो, 'मुझ से नहीं होगा'। ''नहीं को हटा दीजिये और कहिये 'मुझ से होगा'; 'यदि' को हटा दीजिये और कहिये 'मुझ से होगा'। 'मुझे नहीं पता और मुझे नहीं लगता' को हटाकर कहिये 'मुझे पता है' या 'मुझसे होगा'; 'मुझे नहीं लगता मेरे पास इसके लिये वक्त है' को हटाकर कहिये 'मैं किसी न किसी तरह वक्त निकाल ही लूँगा या लूँगी'; 'शायद होगा' को हटाकर कहिये 'बिलकुल होगा'; 'मुझे शक है' को छोड़कर 'मैं निश्चित हूँ' कहना होगा; 'मुझे भरोसा नहीं है' को छोड़कर कहें कि 'मुझे पूरा भरोसा है'। लोग आपकी कामयाबी के लिये आपको याद रखेंगे। एक बार, एक दिन के हिसाब से 365 कामयाब दिन हो।

सोच में पड़ सकते हैं कि यह कार्रवाई कैसे की गयी या आप खुद उसे कामयाब बना सकते हैं क्योंकि आप ही सर्वोत्कृष्ट हैं। आप शहर के महापौर के समान हैं जो सही नज़रिया अपनाने के द्वारा कामयाबी को सुनिश्चित कर सकते हैं। न केवल नेतृत्व करना बल्कि सिखाना, प्रोत्साहित करना और प्रेरित करना भी आप ही का काम है। आपके कार्य वर्ष की कामयाबी सिर्फ आपके हाथों में है, दूसरों के नहीं।''

टीआरएफ क्यों मायने रखता है

स्नातक बनने वाले डीजीओं का संबोधन करते हुये, टीआरएफ के न्यासी प्रतिनिधि गैरी हुआँग ने अर्ज किया कि वे अपने मंडलों को टीआरएफ को यथासंभव अंशदान देने पर प्रेरित करें, ''जो दुनिया के अनेक हिस्सों में इतने सारे गरीब लोगों की सहायता करता है। यदि मैं यह बतलाना शुरू कर दूँ कि दुनिया के इतने सारे हिस्सों में हमारा फाउंडेशन क्या-क्या काम कर रहा है, तो हम कल तक यहीं बैठे रहेंगे।'' टीआरएफ को अंशदान देने पर प्रेरित करने में संतुष्टि इसी में होगी, ''जब कभी आप किसी ऐसे कार्यक्रम को देखते हैं जिसकी फाउंडेशन सहायता करता है, आप नाज़ के साथ कह सकते हैं कि मैं भी उसका एक हिस्सा हूँ। यह मेरी वजह से संभव हो पाया। आपकी बदौलत, अगली पीढ़ी अधिक बेहतर, अधिक खुशहाल, अधिक स्वस्थ दुनिया में जिंदगी बसर कर पायेगी। आप जो कुछ करते हैं उसमें कुछ भी छोटा नहीं होता। सब कुछ बढ़ते ही जाता है। और एक-एक मोमबत्ती, जिसे आप जलाते हैं, उससे फरक पड़ता है। कुल मिलाकर, रोटरी मानव सेवा करता है और इसके लिये आपका जितना भी शुक्रिया अदा किया जाये काफी नहीं।''

> टीआरएफ को आपके अंशदान की बदौलत, अगली पीढ़ी एक अधिक बेहतर, अधिक खुशहाल, अधिक स्वस्थ दुनिया में जिंदगी बसर कर पायेगी। आप जो कुछ करते हैं उसमें कुछ भी छोटा नहीं होता। वह तो बढ़ते ही जाता है।
>
> टीआरएफ के न्यासी प्रतिनिधि
> गैरी हुआँग

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपांकन

American Life, Inc. EB-5 Regional Center welcomes all Rotarians to RI convention 2017 in Atlanta, USA. June 10 -14

Investment opportunity in 255 South King Street LLP– a 282 room Hilton Embassy Suites Hotel and Avalara Hawk Tower in Seattle.
Open for business in December 2017
Visit www.amlife.us for the American Life story and photos of completed projects.

INVEST IN YOUR AMERICAN DREAM!

American Life, Inc. of Seattle, Washington USA is a real estate developer of hotels and office buildings in Seattle, Los Angeles and Atlanta. We develop, build and manage our projects.

- Established in 1996
- U.S.Government approved Regional Center
- 2,459 Permanent Green Cards awarded
- 4,778 Conditional Green Cards awarded
- 24 Completed EB-5 Projects
- Over One Billion US$ of EB-5 capital invested
- Equity and Preferred Equity investment model

For more information, contact us at :
india@americanlifeinc.com | 001-206-381-1690
270 S Hanford Street, Suite 100 | Seattle, Washington 98134 USA
3405 Bobby Brown Pkwy, Atlanta, GA 30344, USA Tel: Sachin Patel - 404 491 4325

This does not represent on offer or solicitation to buy or sell securities. Investments are available only to qualified accredited investors via the confidential offering memorandum.

INDIA : Law Office of Prashant Ajmera & Associates 5 Shivam Complex, 3rd Floor, Nr. H. L. Commerce College, Navrangpura, Ahmedabad 380009, Gujarat
M. : +91 99 74 25 3030 | Ph. : 079 - 2646 0679 | Email : prashant@ajmeralaw.com | Web : www.ajmeralaw.com, www.eb5visaconsultant.com

दुबई के शताब्दिक डिनर में AKS सदस्य सम्मानित

रशीदा भगत्

"मुझे बेहद खेद है कि हमारे रोटरी फाउंडेशन के चैयरमेन कल्याण बैनर्जी यहाँ मौजूद नहीं है। मैं ना केवल हमारे दाता यानि रोटरी फाउंडेशन के लिये बल्कि हमारे प्रिय चैयरमेन कल्याण बैनर्जी और बिनोता के लिये भी सलामती जाम का प्रस्ताव पेश करने वाला हूँ, जिनकी सेहत ठीक ना होने की वजह से आज यहाँ आ नहीं पाये। लेकिन मैं जानता हूँ वें चाहेंगे कि हम कहें कि पोलियो का उन्मूलन करने की हमारी लडाई और दुनिया का भला करने के हमारे प्रयासों को जारी रखें ताकि लडकियों को उचित शिक्षण मिल पाये, नेत्रहीन देख पाये और कई अनेक लोग हमारे काम से लाभाँवित हो पाये।''

इन्ही लब्जों के साथ रो इ के अध्यक्ष जॉन जर्म ने, दुबई इंस्टीट्यूट के दौरान, हयात रीजेंसी डेइरा में आयोजित शानदार टीआरएफ शताब्दिक डिन्नर पर रोटरी फाउंडेशन के नाम सलामती जाम उठाया।

अगले जून, एटलाँटा में आयोजित 2017 रोटरी महाधिवेशन में रोटेरियनों को आमंत्रित करते हुये, जहाँ उन्होने एक ''शानदार जन्मदिन के जश्न'' का वादा किया, जब टीआरएफ 100 साल पूरा करेगा, उन्होने कहा, ''अभी अभी आपने रो इ निदेशक मनोज देसाई से सुना कि पिछले साल भारत, सदस्यता में अव्वल स्थान पर और टीआरएफ को देने में दूसरे स्थान पर उभरा। लेकिन आज की रात,

रो इ निदेशक मनोज देसाई, सिंधु जयंता कुमार, रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म, रोटेरियन जयंत कुमार, पीआरआईपी गैरी हुआंग, टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता और इंस्टीट्यूट के चेयर राजा सीनिवासन, आरआरएफसी कमल सांघवी। (मंच का संचालन करते हुए)

(बाएं से), डीजी जया शाह, डीजी नारायण नायक और सुनंधा, रुचिका और डीजी शरत जैन, ललिता और डीजी एन सुब्रमण्यन और डीजी विनयकुमार रायकर।

हम एक और बात पर भी खुशियाँ मनायेंगे, कि आप, आपके दोस्तों, आपके रिश्तेदारों और साथी क्लब सदस्यों की बदौलत ही भारत पोलियो-मुक्त हो पाया।''

टीआरएफ के ट्रस्टी प्रतिनिधि गैरी हुआँग ने कहा कि जबकि टीआरएफ शताब्दिक समारोह जो कोरीया में शुरू हुआ था और अगले जून को एटलाँटा में खत्म होगा, वें चाहते हैं कि अधिक से अधिक रोटेरियन एटलाँटा आये, ''दुनिया भर के सभी क्लबों को, हमारे शताब्दिक वर्ष को मनाने के उपलक्ष में, अपने खुद के कार्यक्रमों तथा अपनी गतिविधियों का आयोजन करने प्रोत्साहित किया जा रहा है। चैयरमेन बैनर्जी ने 300 मिलियन डॉलर पर इस साल के लक्ष्य को निर्धारित किया है और इस लक्ष्य में वृत्तदान निधि तथा पोलियोप्लस को अंशदान भी शामिल है।फ़फ़

टीआरएफ के ट्रस्टी तथा WinS के वैश्विक चैयर सुशील गुप्ता ने कहा भारत इस बात की खुशियाँ मनाये कि, ''एक प्रापक देश से वह एक दाता देश बन गया है।''

RID देसाई ने कहा कि जब कि इस साल के लिये फाउंडेशन को देने के लक्ष्य को 26.5 मिलियन डॉलर पर निर्धारित किया गया है, RIDE सी भास्कर ने आगामी साल के अपने ट्रेंड सेट्टरों (निर्वाचित मंडलाध्यक्ष) से 31 मिलियन डॉलर का वादा लिया है। अब जबकि रोटरी एक प्रधान सहभागी बन गया है, CSR नया खेल प्रवर्तक बन गया है, निधि चिंता का विषय नहीं है; निगम तथा सरकारें, दोनों को रोटरी पर विश्वास है। सब कुछ उन मंडलाध्यक्षों की वजह से है जो अगुआई कर रहे हैं।''

उन्होने ऐसे डीजीओं को मान्यता देकर, सम्मानित किया जिन्होने पिछले साल बेहद अच्छा काम किया था- के पी नागेश (3190), सुभाष कुलकर्णी (3140), पराग सेठ (3060)। उन्होने डीजी केशव कंवर (3292, नेपाल) का विशेष उल्लेख किया, जो ''एक छोटे देश से आये थें जो इस तरह के घातक भूकंप से बाधित हुआ था और फिर भी जब झठखझ के आर रविंद्रन् ने उन्हे भेंट दी, तो उन्होने अपने लक्ष्य को 800,000 डॉलर से 1 मिलियन डॉलरों का कर दिया जब मैंने उन्हे ललकारा।''

मान्यता प्राप्त इतर डीजीगण थे, मंडल 3011 तथा 3012 से, डॉ एन सुब्रमणियन् तथा शरत जैन। ''उडिसा जैसे छोटे मंडल से भी (3262), जिसे पिछडा राज्य माना जाता है, डीजी ब्रिगेडियर नारायण नायक, नेपाल से डीजी जया शाह तथा मंडल 3170 से विजय राईकर भी अघड सदस्य बन गये,'' उन्होने कहा।

AKS बनने का प्रण लेने वाले जयंत कुमार, हर्षद मेहता, जाफर एन सुरा, जैसे रोटेरियनों को भी डिन्नर के दौरान सम्मानित किया गया।

चित्र : रशीदा भगत्

दुबई की यादें...

मेरा हीरो : एक किशोर के साथ लिएंडर पेस, तस्वीर में इंस्टीट्यूट चेयर वी राजा सीनिवासन भी दिखाई दे रहे हैं।

दुबई इंस्टीट्यूट में एक शानदार नृत्य का नजारा।

यकीनन! आरआईडीई सी भास्कर WinS ग्लोबल चेयर सुशील गुप्ता के साथ बातचीत के दौरान।

भूत, वर्तमान और भविष्य : पीआरआईपी के आर रविन्द्रन, रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म और आरआईपीएन सैम ओवोरी।

रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म, जुडी जर्म, शर्मिष्ठा देसाई और रो इ निदेशक मनोज देसाई।

आरआइडीई सी भास्कर पीआरआईपी के आर रविन्द्रन के साथ।

कोरिना हुआंग, पीआरआईपी गैरी हुआंग (दाएं)

रो इ निदेशक मनोज देसाई, पत्नी शर्मिष्ठा देसाई के साथ जन्मदिन मनाते हुए।

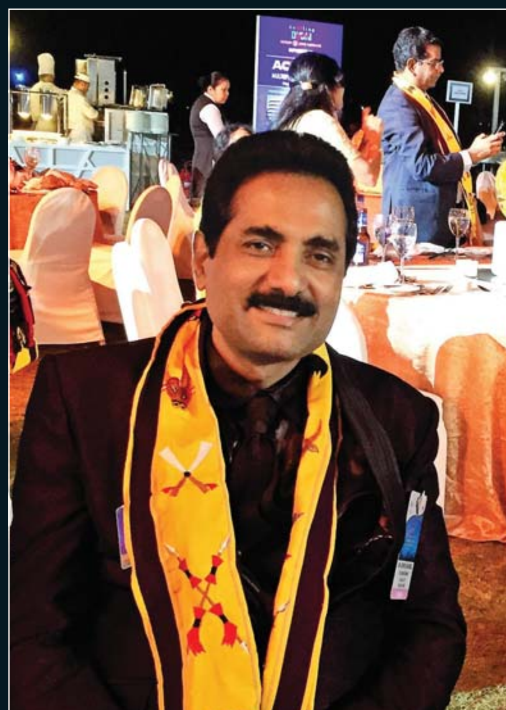

डीजी जॉन डेनियल और जयंता कुमार फुर्सत के क्षणों में।

और पीआरआईडी पी टी प्रभाकर के बीच।

ठीक है : इंस्टीट्यूट चेयर वी राजा सीनिवासन पीडीजी रेखा शेट्टी के साथ बातचीत करते हुए।

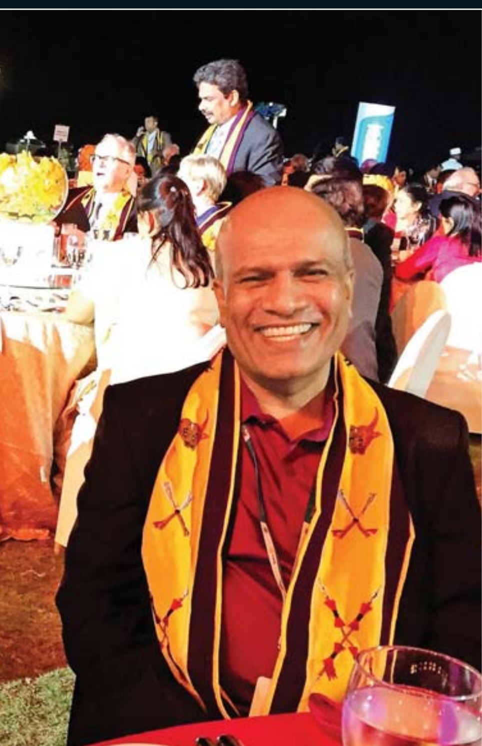

नमस्ते : रो इ अध्यक्ष के लिए नामांकित सैम ओवोरी पत्नी नोराह के साथ।

आपका साथ हमेशा मिले : रो इ निदेशक मनोज देसाई और इंस्टीट्यूट चेयर वी राजा सीनिवासन गले लगते हुए।

खुशी के क्षणों के दौरान आरआईडीई सी भास्कर।

(बाएं से) विकी बियोबिएन, जूडी जर्म और रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म।

पीआरआईडी वाई पी दास, डीजी एन सुब्रमण्यन और डीजीई रवि चौधरी।

पीडीजी मतियस रॉयट और पत्नी ऐनी रॉयट सेल्फी लेते हुवे ।

नृत्यांगओं के साथ सेल्फी।

रो इ निदेशक मनोज देसाई जयंती सीनिवासन को उनकी कड़ी मेहनत के लिए धन्यवाद देते हुए और शर्मिष्ठा देसाई भी इस दौरान मौजूद थीं।

बाएं से: प्रसन्न कुमार, पीडीजी नागेश, आरआईडीई सी भास्कर और डी जी ई आशा प्रसन्ना कुमार।

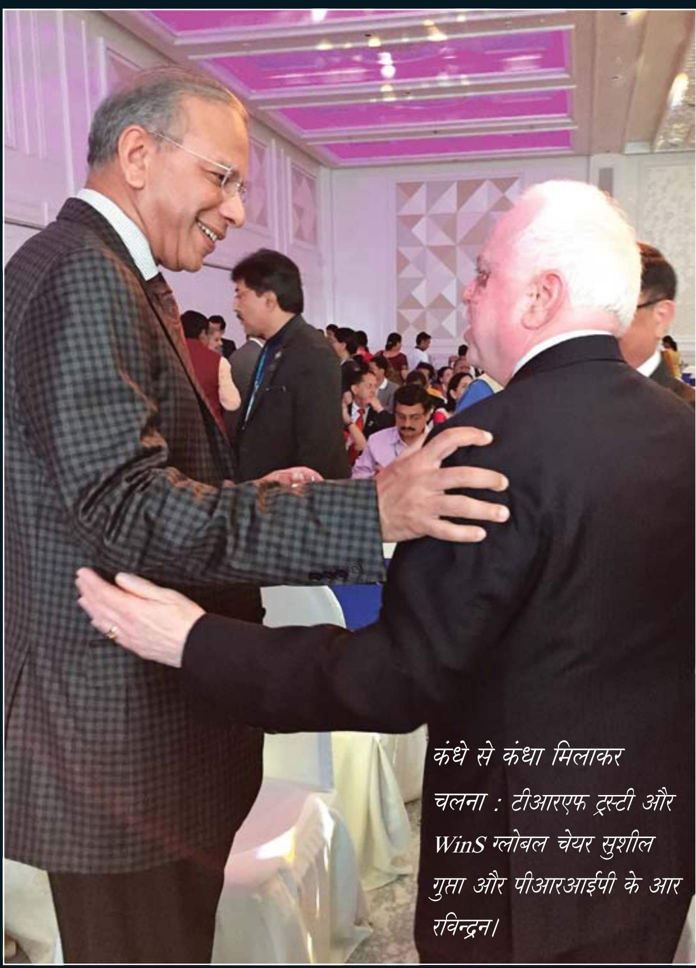

कंधे से कंधा मिलाकर चलना : टीआरएफ ट्रस्टी और WinS ग्लोबल चेयर सुशील गुप्ता और पीआरआईपी के आर रविन्द्रन।

आरआईडी माइकल एहलबर्ग, नोराह और आरआईपीएन सैम ओवोरी,

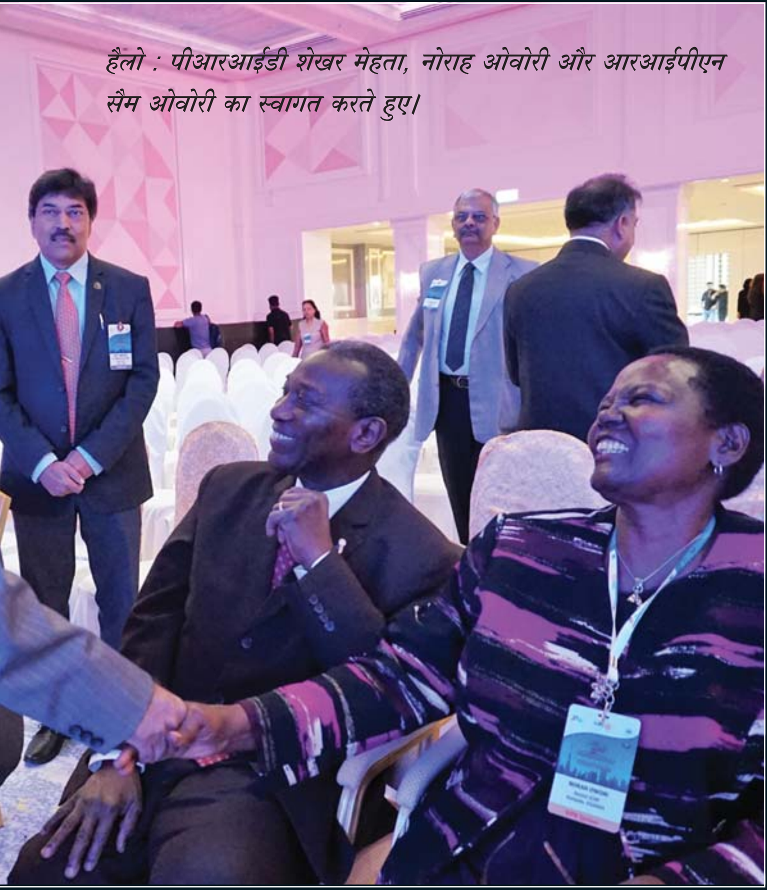

हैलो : पीआरआईडी शेखर मेहता, नोराह ओवोरी और आरआईपीएन सैम ओवोरी का स्वागत करते हुए।

पीडीजी जोशफ सुरेश कुमार और शार्लेट एहलबर्ग।

(बाएं से) जूडी जर्म, विनिता गुप्ता और विक्की बिओबिएन।

चित्र : के विश्वनाथन, रशीदा भगत् और डीडीजेड़आई

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपांकन

मेरी आवाज़ मेरा मत

रशीदा भगत्

दुबई जोन इंस्टीट्यूट में एक बेहद लोकप्रिय सत्र था 'मेरी आवाज़ मेरा मत', एक ऐसा प्रयोग जिसे रो इ निदेशक मनोज देसाई ने जयपुर इंस्टीट्यूट में शुरू किया था और जो इतना लोकप्रिय हो गया था। दुबई इंस्टीट्यूट में, हालाँकि लंच का समय होने जा रहा था, सभा कक्ष रो इ के भूतपूर्व, वर्तमान तथा भावी अधिकारियों से खचाखच भरा था जिन्होने अपने हाथों में मतदान उपकरणों को कसकर पकडा हुआ था। और फिर, मत ना देने वाले भी उतने ही तल्लीन होकर बैठे हुये थे और नतीजों को देखकर जोश के साथ प्रोत्साहित करते रहे जिसे पर्दे पर लगे हाथों दिखलाया गया।

हिस्सा लेने वालों से रो इ के निदेशक ने 30 सवाल पूछे, जिनमे से कुछ सौम्य थे तो कुछ चुनौतिपूर्ण।

इस सवाल पर कि ''क्या प्रचार/अभियान करने की, आधिकारिक तौर पर अनुमति दी जानी चाहिये?'' का जवाब चौंका देने वाला था। जवाब था 'हाँ' (47.49); 'नहीं' (30.17). 'सीमित' प्रचार (22.35)! इस जवाब पर रो इ के अध्यक्ष जॉन जर्म को ताज्जुब हुआ कि भारतीय रोटेरियन इस आपत्तिजनक प्रथा को जारी रखना चाहते हैं!

लेकिन भारतीय रोटेरियनों के सेवा प्रवृत्त अनुकूलन पर जिस बात ने विश्वास को बनाये रखा था वह था इस सवाल का जवाब: ''रोटरी का प्राथमिक उद्देश्य हो: जालतंत्रण (38); साहचर्य (21.81); सेवा (71.81)।''

लगभग 1,47,000 की सदस्यता के साथ, क्या रो इ के बोर्ड पर हमारा प्रतिनिधित्व बेहतर हो, रो इ के निदेशक देसाई ने पूछा। जब कि 47.57 प्रतिशत ने कहा कि चार अंचल (जोन) मिले तो अच्छा रहेगा, 45.41 ने उससे अधिक यानि 5 अंचलों की माँग की!

जब कि 47.13 प्रतिशत ने महसूस किया कि हाजिरी नियमों में लचीलेपन के बाबत में विधि परिषद के प्रस्ताव का सकारात्मक असर हो पायेगा 35.06 ने महसूस किया कि असर नकारात्मक होगा। विधि परिषद के निर्णयों पर दो और सवालों की प्रतिक्रिया यूँ रही: उनके मुताबिक कितने क्लबों ने विधि परिषद के बाद अपने उप विधानों को बदला होगा? एक भी नहीं (47.25); 25 प्रतिशत से ज्यादा (45.05); अधिकाँश (7.69)। इस सवाल का जवाब तीनों के लिये 48 प्रतिशत था कि प्रति व्यक्ति देय शुल्क को बढाने का असर नकारात्मक होगा या होगा ही नहीं। केवल तीन प्रतिशत ने महसूस किया कि असर सकारात्मक होगा।

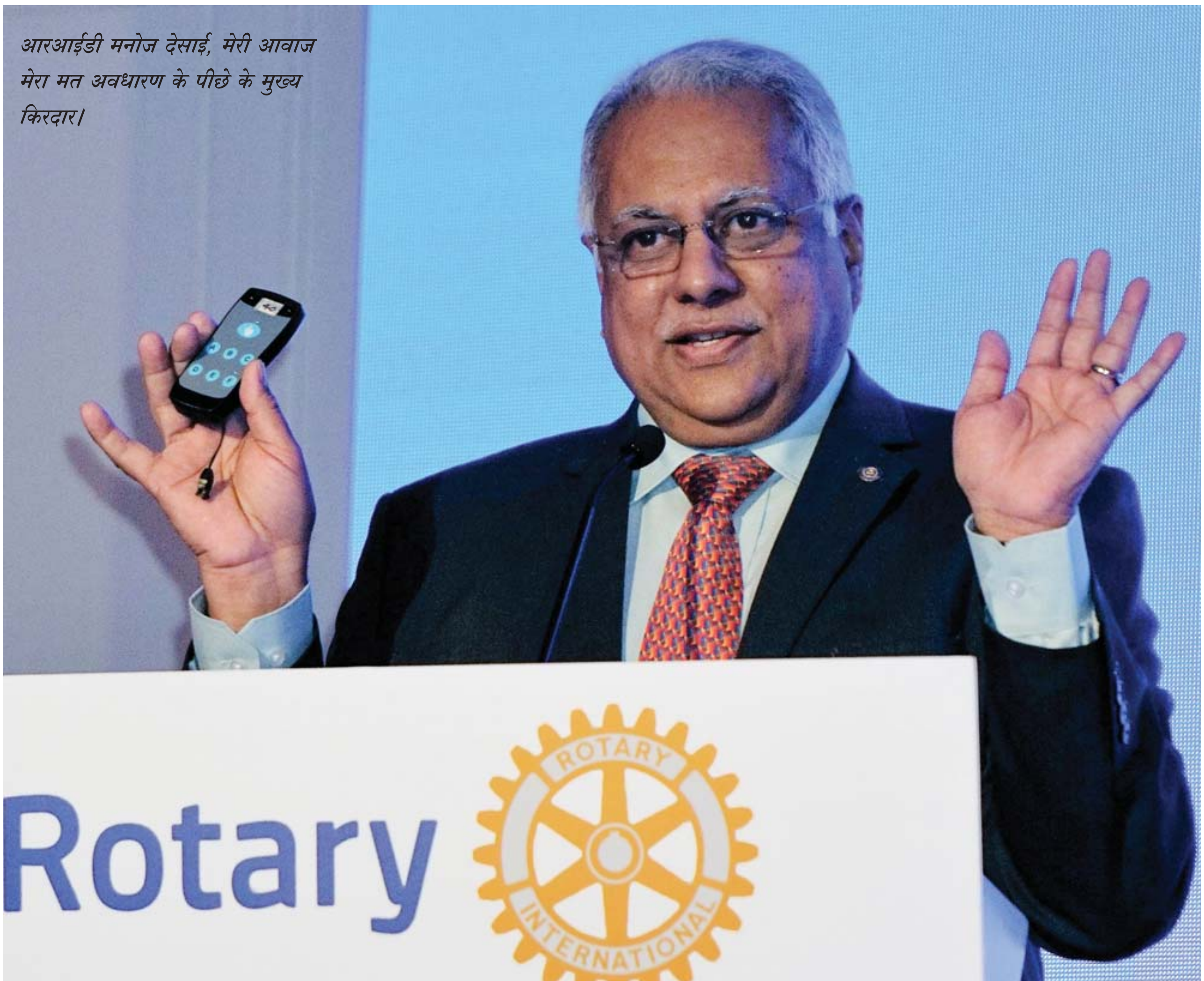

आरआईडी मनोज देसाई, मेरी आवाज मेरा मत अवधारण के पीछे के मुख्य किरदार।

जबकि 63 प्रतिशत ने महसूस किया कि 10 से कम सदस्यों वाले क्लबों को इतर क्लबों के साथ विलयन कर देना चाहिये, 30 प्रतिशत से ज्यादा ने उन्हे बंद कर देने के पक्ष में मत दिया। चुनावों में ई-मतदान पर, जिसकी वजह से 2015-16 में एक भी शिकायत नहीं रही, मत कुछ अव्यवस्थित सा था। जब कि 51.58 प्रतिशत ने ई-मतदान का स्वागत किया 42.63 ने कुछ शंका व्यक्त की।

एक सवाल के जरिये देसाई ने पूछा: ''चुनावी विवादों को छोडकर सामरिक योजना के तीन आयामों के बाबत में भारत काफी अच्छी प्रगति कर रहा था। एक सवाल था ई-मतदान के नये प्रयोग से शिकायतें कम हो पायेंगी, कोई फरक महसूस नहीं होगा या शिकायतें बढ जायेगी? जवाब था क्रमश: 58.47, 22.4 तथा 19.13 प्रतिशत और 70 से अधिक प्रतिशत सहमत थे कि हमारे अंचलों में ई-क्लबों की वृध्दि नगण्य थी।

क्या प्रचार/अभियान करने की, आधिकारिक तौर पर अनुमति दी जानी चाहिये? का जवाब चौंका देने वाला था। जवाब था हाँफ (47.49); नहीं (30.17). सीमित प्रचार (22.35)!

क्या प्रत्येक मंडल में, व्यक्तिगत व्यय पर, निश्चित कार्यसूची के साथ मंडलाध्यक्ष परिषद की वापसी सभा से, मुद्दों का समाधान होगा, कोई फरक नहीं पडेगा, अधिक मुद्दे पैदा कर देगा? फैसला: क्रमश: 44,15; 16.69; 36.17। लगभग 89 प्रतिशत ने महसूस किया कि TEACH तथा WinS जैसी रोटरी की सर्वोत्कृष्ट परियोजनायें जन छवि के लिये जरुरी है; 93 प्रतिशत चाहते थें कि संस्था में युवा पीढ़ी (30 साल से कम उम्र) को संबध्द कराने रोटरी विशेष प्रयास करे; 78 प्रतिशत चाहते थे कि रोटरी जोन इंस्टीट्यूट केवल रो इ के भूतपूर्व, वर्तमान तथा भावी अधिकारियों के लिये ही खुला रहे; 95 प्रतिशत चाहते थे कि रो इ के अधिकारियों की वित्तीय अनियमितताओं के बाबत में सख़्ती बरती जायें; 81 प्रतिशत चाहते थे कि रो इ के निदेशक के साथ त्रिनेताओं की बैठक (डी जी, डी जी ई,व डी जी एन) को जारी रखा जाये।; 72 प्रतिशत ने कहा सेवा ही रोटरी के संकेंद्रण का विषय हो तथा 87 प्रतिशत ने महसूस किया कि विमुद्रिकरण से रोटरी सदस्यता पर असर नहीं पडेगा।

लेकिन एक सवाल के लिये 98 प्रतिशत प्रतिक्रिया देखी गयी – कि *रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट* के हिसाबों के विवरणों को हर साल प्रकाशित करना चाहिये!

अंबाला में विश्व पोलियो दिवस का आयोजन

टीम रोटरी न्यूज़

अंबाला के रोटरी क्लब ने मंडल 3080 के लिए विश्व पोलियो दिवस के आयोजन की मेजबानी की। एक साइकिल रैली उत्सव का मुख्य आकर्षण था, जिसमें अंबाला के विभिन्न संस्थाओं के 1,200 छात्र शामिल हुए थे। PRIP KR रविन्द्रन ने एक संक्षिप्त विड़ियो संदेश के माध्यम से दर्शकों का अभिवादन किया और DG रमण अनेजा ने पोलियो के प्रति जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

मुख्य अतिथि RC मिश्र, अतिरिक्त म हानिदेशक पुलिस, पंचकूला और अंबाला ने 3 किमी रैली को झंडी दिखाकर रवाना किया और भारत से पोलियो उन्मूलन के लिए रोटरी के प्रयासों और भागीदारी की प्रशंसा की। एनी रोटरियनों और रोट्रेक्टस के साथ PRID YP दास और DG अनेजा ने रैली का नेत्रित्व किया। एक वैन, जो भारत पोलियो के उन्मूलन के लिए रोटरी के 30 वर्षों के लंबे संघर्ष को प्रदर्शित करेगा, 120 दिनों तक मंडल 3080 की यात्रा करता रहेगा, और इस क्रम में क्लबों और सरकारी और निजी विद्यालयों का भी दौरा कर समुदाय को पोलियो के दुष्प्रभाव के बारे में जागरूक करेगा। अक्टूबर 24 को झंडा दिखाकर रवाना किए जाने के बाद, वैन करनाल में 17 फरवरी को मंडल सम्मेलन के साथ अपनी यात्रा समाप्त करेगी।

पोलियो दिवस के मौके पर आयोजित साइकिल रैली में भाग लेते हुए पीआरआईडी वाई पी दास, डीजी रामन अनेजा और आईपीडीजी डेविड हिल्टन।

Please pay your Rotary News Dues at the earliest

to enjoy uninterrupted supply. Please be warned that defaulting clubs can be suspended by RI.

List of defaulting clubs and the club dues details on our website ***www. rotarynewsonline.org***

Rotary

Rotary at a glance

Rotarians : 12,27,390

Clubs : 35,263

Districts : 534

Rotaractors : 2,23,169*

Clubs : 9,703*

Interactors : 4,74,720*

Clubs : 20,640*

RCC members: 2,11,370*

RCC : 9,190*

* As on October 3, 2016

Membership in India, Sri Lanka, Pakistan, Bangladesh, Nepal, Bhutan and Maldives

As on December 1, 2016

RI Zone	RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians	Rotaract	Interact	RCC
5	2981	109	4,491	205	51	213	167
5	2982	63	2,818	78	51	108	41
5	3000	111	5,193	388	201	470	112
4	3011	72	3,069	543	43	96	29
4	3012	79	3,419	605	57	109	54
5	3020	80	4,227	223	104	457	353
4	3030	98	5,381	666	69	252	155
4	3040	83	2,061	241	50	107	135
4	3051	64	2,442	184	47	145	335
4	3052	56	3,290	571	38	135	130
4	3053	59	2,397	367	16	33	93
4	3060	98	4,001	371	53	109	125
4	3070	106	3,169	295	61	151	55
4	3080	76	3,281	216	59	192	105
4	3090	79	2,111	76	33	36	122
4	3100*	70	1,679	66	9	68	82
6	3110	109	3,818	191	52	49	78
6	3120	73	3,047	309	36	49	49
4	3131	124	5,745	1159	77	236	70
4	3132	92	4,013	403	58	136	113
4	3141	84	5,187	955	98	228	84
4	3142	77	2,941	392	50	176	64
5	3150	94	3,433	328	85	188	109
5	3160	64	2,263	103	17	42	81
5	3170	125	5,409	344	46	272	158
5	3181	66	3,054	205	28	163	100
5	3182	78	3,316	235	24	261	89
5	3190	143	5,634	658	124	329	48
5	3201	135	5,102	298	86	113	46
5	3202	127	4,996	257	87	416	40
5	3211	132	4,261	230	11	70	121
5	3212	94	3,858	208	104	252	126
5	3220	67	1,906	234	78	185	78
5	3230	144	6,212	522	165	446	308
6	3240	83	2,938	345	56	140	139
6	3250	97	3,737	619	31	195	173
6	3261	69	2,355	232	15	100	42
6	3262	84	3,121	365	40	70	71
6	3271	65	1,226	194	41	15	13
6	3272	125	2,398	384	35	35	36
6	3281	191	5,515	724	211	79	184
6	3282	123	3,517	255	119	26	40
6	3291	146	3,887	660	63	120	567
6	3292	110	4,174	578	108	100	96
	Total	**4,224**	**1,60,092**	**16,482**	**2,887**	**7,172**	**5,216**

**Non-districted*

Source: RI South Asia Office

दुबई संस्थान में

जब छा गयीं पत्नियाँ...

रशीदा भगत्

अगर आप डी जी ई एवं डी जी एनों की दमकती हुई पत्नियों को 'डेज़लिंग दुबई जोन संस्थान' में उनके पतियों के साथ देख सके, जो उनको सामने लाने के लिए विशेष प्रयत्न कर रहे थे, तो वह मुख्यतः रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म एवं आर आई निदेशक मनोज देसाई की पत्नी शर्मिष्ठा देसाई द्वारा गेट्स दीक्षांत समारोह में उत्साहपूर्ण बातों की दी गयी दो खुराकों के कारण था।

डी जी ई बनने वाले वर्ग को संबोधित करते हुए, जर्म ने कहा, ''जब मैं कमरे के चारो ओर देखता हूँ, मैं सभी पत्नियों को सुसज्जित देखता हूँ; मैं चाहता हूँ कि आप सोचे कि वे आपके जीवन में कितनी महत्वपूर्ण है। और वे आपकी सफलता में भी कितनी महत्वपूर्ण होने वाली हैं। क्योंकि अगर वे खुश नहीं होंगी, आप खुश नहीं होंगे, और अगर आप खुश नहीं है, तो आपके सदस्य खुश नहीं रहेंगे।''

केवल पत्नियों के खुश रहने से क्या डी जी अतिरिक्त समय अपने मंडलों एवं सदस्यों को दे पाएंगे

शर्मिष्ठा देसाई जयंती सीनिवासन की प्रशंसा करती हुईं।

के विश्वनाथन

वरिष्ठ रोटेरियन डीजीयों की पत्नियों के साथ।

''जिसकी आवश्यकता आगामी वर्षों में होगी। इसके बारे में सोचिये, और उसके अनुसार कार्य कीजिये।''

इसी बात को लेकर, दीक्षांत समारोह में धन्यवाद ज्ञापन के दौरान, शर्मिष्ठा ने याद किया कि कैसे जब रो इ अध्यक्ष ने डी जी ई के जीवन-साथियों को अलग से संबोधित किया था, उन्होंने इस बिंदु पर ज़ोर दिया था। भावी गवर्नर्स को इस मुद्दे पर संवेदनशील होने के लिए ज़ोर देते हुए, उन्होंने आगे कहा, ''जब आप अपनी संगोष्ठियाँ या अन्य मंडल कार्यक्रम करते हैं, अपने जीवन-साथी का परिचय कराना मत भूलिए। हमारी भारतीय संस्कृति में, जीवन-साथी के महत्व को कम आँका जाता है। परन्तु अपने साथी की भावनाओं के बारे में सोचिये, वे सोचने के लिए विवश होते है एवं आश्चर्य करते है कि मैं यहाँ क्यों हूँ जब कोई भी मुझे पहचानने वाला नहीं है। या जानता है कि मैं कौन हूँ। यह मेरी एकमात्र प्रार्थना है; हमारे अध्यक्ष कहते हैं कि बिना आपके जीवन-साथी के सहयोग के, आप खुश नहीं रह पाएंगे और मैं इसी बात पर ज़ोर देना चाहूंगी।''

जादुई प्रभाव

इस संदेश का तरंगनुमा प्रभाव जादुई था। दीक्षांत समारोह के दौरान और बाद में 'जुमिरा बीच' पर पुरस्कार वितरण समारोह में, गेट्स प्रमुख रवि वाडलामानी अपनी पत्नी पी डी जी राज्यलक्ष्मी को अपने समक्ष रखने को लेकर चौकस थे एवं संस्थान में एक सार्जेंट की तरह उस बात का अनुसरण कर रहे थे। और अपने अनूठे वाडलामानी अंदाज में, उन्होंने हर समय इसकी घोषणा भी की!

समापन सत्र में, संस्थान के प्रधान राजा सीनिवासन ने कृतज्ञता एवं विनम्रता दोनों दिखाई जब उन्होंने इस बात को स्वीकार किया कि वह ऐसे भव्य संस्थान को अस्तित्व में नहीं ला पाते, वो भी विदेश में, अगर उनकी पत्नी जयंती का उन्हें पूर्ण एवं सतत् सहयोग प्राप्त नहीं होता। अगर वह पिछली कुछ रातों में बमुश्किल कभी सो पाये, ''मैं कह सकता हूँ कि जयंती भी पिछली रात नहीं सो पायी।''

उन्होंने अपनी पत्नी को उनका सहारा-स्तम्भ बनने के लिए धन्यवाद दिया क्योंकि उन्होंने एक वर्ष से भी अधिक समय तक संस्थान के विभिन्न

ईएमजीए रवि वडालामणि और उनकी पत्नी पीडीजी राज्यलक्ष्मी।

बाएं से : विक्की बियोबिएन, जूडी जर्म, शर्मिष्ठा देसाई और मालती भास्कर

पहलुओं को एक साथ लाने के लिए भाग-दौड़ की थी। ''वह रात के 2:30 बजे उठकर मेरे लिए मेल्स भेजती। आपके पास अनेक सहायक हो सकते हैं, परन्तु क्या आप ऐसा समर्थन पा सकते हैं,'' दर्शकों में से कई के चेहरों पर मधुर भाव लाते हुए सीनिवासन ने पूछा।

आरआईडी स्वयं भी, शर्मिष्ठा के निरंतर सहयोग की बात को स्वीकारते हुए कोई राज उजागर नहीं कर रहे थे। और यह सभी के देखने के लिए प्रत्यक्ष था; ''सदैव मुस्कुराने वाली महिला का शांत परन्तु मजबूत सहयोग'' उनके निर्देशक पद पर रहने के दौरान अत्यधिक प्रत्यक्ष है। धूप हो या बरसात, दिन हो या रात, वह वहाँ होती है, कभी उनके बाजू में, कभी उनके पीछे, और बिना किसी झंझट या परेशानी के।

यह बात भी अच्छी है कि रोई अध्यक्ष स्वयं इस टोली का नेतृत्व, इन औरतों के अपने पतियों की सफलता में दिए गए असीम योगदान को धन्यवाद देने के लिए कर रहे है।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपांकन

परिवर्तन की एक लहर उत्पन्न कीजिये

रेखा शेट्टी

संस्थान के प्रमुख वी राजा सीनिविसन और उनके 247 सदस्यीय दल के चेन्नई छोने से पूर्व, 100 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ़्तार वाला तूफ़ान वरदा' अंतिम चुनौती के रूप में डेज़लिंग दुबई दल' के सामने आया। जवारी-लाल जैन, डी जी ई 3231, को दोहरी बाधा का सामना करना पा क्योंकि उन्होंने अपनी बेटी की शादी की अंतिम रस्मों को पूर्ण किया। दुल्हन के पिता के रूप में अपने कर्तव्यों को पूर्ण करने के बाद, जैन अपनी पत्नी सुमित्रा के साथ विलंबित हुई दुबई की फ्लाइट को पकने के लिए निकले। वह डिस्ट्रिक्ट गवर्नर ईलेक्ट्स (डी जी ई) का थका हुआ लेकिन उत्तेजित समूह था जो दुबई अंतर्राष्ट्रीय हवाईअड्डे पर पहुँचा था।.

जिस पल वे उतरे, वे डेज़लिंग दुबई दल के स्वागत की गर्मजोशी से अभीभूत गए; वे सब कुछ भूल गए क्योंकि वे सम्मानित अतिथि बन गए थे। सब कुछ मनोहर था, कभी-कभी अत्यधिक बेहतर, जिसमें लंबी डंडी वाले गुलाब भी शामिल थे। चौंधिया देने वाली, चमकीले वैभव से सुसज्जित, न्यूयॉर्क का आभास करवा रही दुबई की गगनचुंबी इमारतें, जिन्होंने उनका स्वागत तब किया जब वे हयात रीजेंसी दीरा की तरफ बढ़े। दल 247 में से 34, व्यक्तिगत स्पर्श देने के लिए एक साथ हुए। यात्रा की शुरुआत समुद्र किनारे स्थित एक बरामदे से हुई, जहाँ

आरआईडी मनोज देसाई प्रतिनिधियों के साथ डेज़र्ट सफ़ारी में।

डीजीईयों को एहसास हुआ कि आगामी वर्ष के नेतृत्वकर्ता के रूप में उनमें कितना निवेश किया गया था। छुट्टियों की उत्तेजना, एक नौका तक की बस यात्रा का आनंद...नौका में बैठकर तटीय जल के मज़े लेना एक ना भूलने वाली शुरुआत थी। सीनिवासन की व्यक्तिगत धुन थी, मज़े करो! इस बात को आश्वस्त करने के लिए सारे विश्रामों को हटा लिया गया।

आरआईडी मनोज देसाई गर्वित एवं प्रसन्न थे, आरआईडीई सी. बस्कर को प्रशिक्षित पथप्रदर्शकों को सौंपने का इंतज़ार करते हुए। रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म ने उनकी प्रतिष्ठा एवं विनोद की

एक व्यक्ति इस बात को देख सकता था कि रोटरी, प्रभाव को बेहतर करने के लिए तकनीकी रोटरी अस्त्रों की आश्चर्यजनक श्रृंखला का इस्तेमाल करने की शीघ्रता में है।

रो इ निदेशक मनोज देसाई की उपस्थिति में GETS सेमीनार को संबोधित करते इंस्टीट्यूट चेयर वी राजा सीनिवासन।

विशेष छाप के साथ प्रत्येक डीजीई को सर्वश्रेष्ठ दल बनाने की चुनौती दी। एक साथ हम सफल होते है, उन्होंने कहा, जिसका उनकी पत्नी जूडी ने साहसपूर्वक समर्थन किया। उन्होंने उन सभी को याद दिलाया, उन सभी को याद कीजिये जो आपकी वजह से एक बेहतर जीवन जीने वाले है! आपके ध्यान की शक्ति के माध्यम से आप जो चाहते है उसे व्यक्त करने का जादू, जादूगर की विषय-वस्तु थी क्योंकि एक जादू का खेल शुरू हुआ था। उस रात सभी एक जादू के वश में थे। लगभग एक पूर्ण चन्द्रमा के तले, चमकदार लहरों के साथ खेल खेलते हुए और हमारे भावी नेतृत्वकर्ताओं के उज्जवल चेहरे, वास्तव में कुछ भी असंभव प्रतीत नहीं हुआ।

अगली सुबह गेट्स प्रमुख रवि वाडलामानी ने दिन का मेनू पेश किया। हमेशा की तरह, निर्देशक देसाई ने हमारी गतिविधि की आधारशिला - रणनीतिक योजना से शुरुआत की। उन्होंने हमारे काफी पसंदीदा लक्ष्यों जैसे - बेहतर क्लबों का निर्माण, बेहतर परियोजनाओं की शुरुआत करना एवं एक बेहतर सार्वजनिक छवि का निर्माण करने पर एक सरसरी निगाह डाली। मित्रता, अखंडता, विविधता, सेवा एवं नेतृत्व के हमारे बुनियादी मूल्यों

बाएं से : आरआईडीई सी भास्कर, वी राजा सीनिवासन, आरआईडी मनोज देसाई, रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म, पीआरआईडी डोनाल्ड बिओबिएन।

ने अपरिवर्तनीय पृष्ठभूमि प्रदान की। चर्चा सत्र में, एकदम नए डीजीईयों ने विचारों का एक चकित कर देने वाला ऐसा प्रदर्शन किया जिसकी उम्मीद एक व्यक्ति ज़िला नेतृत्व सँभालने की दहलीज़ पर खे व्यक्ति से करता है। हमेशा की तरह ध्यान, संस्थान पर, सदस्यता पर एवं सार्वजनिक छवि निर्माण पर था। क्लब सेंट्रल, मेरी रोटरी एवं रोटरी प्रदर्शनी के माध्यम से तकनीक ने अहम स्थान प्राप्त किया। एक व्यक्ति इस बात को देख सकता था कि रोटरी, प्रभाव को बेहतर करने के लिए तकनीकी रोटरी अस्त्रों की आश्चर्यजनक श्रृंखला का इस्तेमाल करने की शीघ्रता में है! रोई दक्षिण एशिया का स्टाफ उत्साही सहायक थे। इसके बाद की गयी रेगिस्तान सफारी' कल्पना की सामग्री थी। प्रकृति की रेत की वास्तुकला के मध्य से गुज़रना एक अद्भुत अनुभव था। किसी को एहसास नहीं था कि रात में रेगिस्तान कितना ठंडा हो सकता है।

तीसरे दिन का ध्यान रोटरी की जीवन-शक्ति: सदस्यता पर था। जब उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय सभा के लिए उनके समय की योजना बनाई, डीजी-ईयों ने सदस्यता की रणनीति पर ध्यान केन्द्रित किया। विचारों के आदान-प्रदान का ध्यान इस बात पर था कि युवा सदस्यों एवं औरतों को कैसे आकर्षित किया जाएँ। सार्वजनिक छवि पर चर्चायें अच्छे विचारों से परिपूर्ण थी। क्लबों से जुना एवं नयी संप्रेषण तकनीकों का इस्तेमाल बुनियादी मुद्दे थे। दलों का निर्माण एवं उनका नेतृत्व अंतिम लक्ष्य बन गया था। कोई भाषण या बातें नहीं हुई। सत्रों में पारस्परिक विचारों का आदान-प्रदान हुआ। नए नेतृत्वकर्ताओं की उमंग को मुक्त कर दिया गया था जब उन्होंने उनके सामने मौजूद असीम इलाके की सीमाओं को खोज लिया था। ''आखिर गिद्ध को भी एक धक्के की जरूरत होती है,'' आरआईडी देसाई ने आरआईडीई भास्कर के सामने मौजूद इलाकों के सर्वेक्षण के दौरान कहा। टीआरएफ ट्रस्टी प्रतिनिधि गैरी हांग ने समय से उत्सव का शुभारंभ किया। उपाधि देने के चलते हुए समारोह ने सत्र को उसके समापन पर ले आया था।

पत्नियों का कार्यक्रम, जिसकी अध्यक्षता शर्मिष्ठा देसाई ने की थी, ने तीन दिनों का इस्तेमाल डीजीईयों के जीवन-साथियों को उस भव्य यात्रा पर अग्रसर होने के लिए प्रशिक्षित करने के लिए किया। अगला वर्ष टीआरएफ का शताब्दी वर्ष होने के कारण एक अति विशेष यात्रा होगी।

जूडी जर्म एवं कोरिना हांग के प्रेरक संबोधनों को लंबे समय तक याद किया जायेगा। अध्यक्ष जर्म ने समापन पर कहा, ''हमारी सफलता एक व्यक्ति के अकेले प्रयास या किसी एक चीज़ के कारण नहीं होगी - वे साझेदारियों एवं सामूहिक प्रयासों के कारण संभव होगी। इसके लिए ऐसे लोगों को साथ कार्य करने की आवश्यकता होगी जो हमारे लक्ष्यों को हासिल करने के लिए व्यक्तिगत यश के बजाय उसके परिपूर्ति के लिए चिंतित हो।''

तकनीक अंतिम ब्रह्मास्त्र है। भविष्य के पूर्वा-नुमान का एकमात्र रास्ता है उसका निर्माण करना। रोटरी कुछ नहीं है अगर वह अग्रसक्रिय नहीं है - जैसा कि माइकल मेक्क्वीन के शब्दों से स्पष्ट है: आवश्यकता से पूर्व ही कुँओं को खोदना, ऑटो पायलट प्रणाली से बचना और सभी चीज़ों को नयी दृष्टि से देखना। सभी प्रशिक्षण सत्रों की स्पष्ट विषय-वस्तु थी एक दिल के साथ तकनीक।

जर्म ने प्यार, मूल्यों और कैसे चार-मार्ग-परख एवं सही मार्ग रोटरी जगत में कभी भी चलन से बाहर नहीं होंगे, के विषय में बात की। आईपीआरआईपी के. आर. रविन्द्रन ने, रोटरी वैश्विक रिवाड्र्स कार्यक्रम' की प्रस्तुति के दौरान क्लब सेंट्रल' एवं मेरी रोटरी' को जीने का एक तरीका बनाकर तकनीक की लहर को जन्म दे दिया है, जिसने भविष्य का दृष्टिकोण प्रदान किया। आज के नेतृत्वकर्ताओं को लहर को उत्पन्न करने के लिए प्रेरित किया गया। नवप्रवर्तन, तकनीक के इस्तेमाल से अग्रसक्रिय योजनायें, प्रमुख विषय-वस्तु थी।

हमारी सफलता एक व्यक्ति के अकेले प्रयास या किसी एक चीज़ के कारण नहीं होगी - वे साझेदारियों एवं सामूहिक प्रयासों के कारण संभव होगी।

रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म

लेखिका, 3230 की पूर्व मंडलाध्यक्ष हैं, डीडीज़ेडआई दल का हिस्सा थी।

दुबई में थिरकते कदम...

नृत्य की मुद्रा में : (बाएं से) आरआईडी मनोज देसाई, आरआईडीई सी भास्कर, डीजीएन पिंकी पटेल और राशि मेहता (सबसे अंत में)।

के विश्वनाथन

पीआरआईपी के आर रविन्द्रन, आरआईडी फ्रेडरिक लिन को फ्लोर पर लेत हुवे ।

रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म और रो इ निदेशक मनोज देसाई फ्लोर पर डांस की मुद्रा में।

STAR PERFORMERS

Zone 4		
Trophy	**RI District**	**IPDG**
Highest Total Contribution to TRF	3140	Subhash Kulkarni
Highest contribution to Annual Fund	3140	Subhash Kulkarni
Highest contribution to Endowment Fund	3140	Subhash Kulkarni
Highest Per Capita Giving to Annual Fund	3140	Subhash Kulkarni
Highest contribution to Polio Fund	3140	Subhash Kulkarni

Donor	Trophy	DG	Dist.
Usha and Raja Saboo Trophy	Highest Giving to Annual Fund	K P Nagesh	3190
Binota and Kalyan Banerjee Trophy	Highest Giving to Endowment Fund	Jagadeeswararao Maddu	3020
Binota and Kalyan Banerjee Trophy	Highest Giving to Polio Fund	K P Nagesh	3190
Nitish Laharry Trophy	Highest Total Contribution to TRF	K P Nagesh	3190

IPDG K P Nagesh and spouse Uma with IPRIP K R Ravindran and Vanathy, RID Manoj Desai and Sharmishtha, RID Mikael Ahlberg and Charlotte.

IPDG Chandu Agarwal and spouse Sanjana with PRIP Gary Huang and Corinna and TRF Trustee Sushil Gupta.

IPDG Parag Sheth and Punam with PRIP Gary Huang, RI President John Germ and Institute Chair Raja Seenivasan.

OF ZONES 4, 5 & 6A

Zone 5		
Trophy	**RI District**	**IPDG**
Highest Total Contribution to TRF	3190	K P Nagesh
Highest contribution to Annual Fund	3190	K P Nagesh
Highest contribution to Endowment Fund	3020	Jagadeeswararao Maddu
Highest Per Capita Giving to Annual Fund	3190	K P Nagesh
Highest contribution to Polio Fund	3190	K P Nagesh

Zone 6A		
Trophy	**RI District**	**IPDG**
Highest Total Contribution to TRF	3292	Keshav Kunwar
Highest contribution to Annual Fund	3240	Chandu Kumar Agarwal
Highest contribution to Endowment Fund	3262	Sibabrata Dash
Highest Per Capita Giving to Annual Fund	3240	Chandu Kumar Agarwal

IPDG Keshav Kunwar and Durga with RI President John Germ and Judy and Sharmishtha Desai.

IPDG Subodh Joshi and Sneha with RI President John Germ and Judy and RID Frederick Lin.

IPDG Subhash Kulkarni and Swati with PRIP K R Ravindran and Vanathy, RID Mikael Ahlberg and Charlotte, RID Manoj Desai and Sharmishtha and PDG H Rajendra Rai.

साझेदारियों के लिए कुछ कदम

रशीदा भगत्

टेनिस में डबल्स के बादशाह लिएंडर पेस कहते हैं कि साझेदारी में सफलता का मंत्र है ऐसे साझेदार का चुनाव करना जो आपकी कमजोरियों की पूर्ति कर सके।

दर्शकों को सम्मोहित कैसे किया जाये अगर इसके लिए कोई शिक्षा ली जानी है, तो वह शिक्षा टेनिस स्टार लिएंडर पेस के पास थी, क्योंकि उन्होंने दिसंबर में आयोजित डेज़लिंग दुबई जोन इंस्टिट्यूट के खचाखच भरे हॉल में दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया था।

उनके संबोधन किया की विषय-वस्तु, आश्चर्य की बात नहीं, *साझेदारियां अहम् होती है,* और सीधे दिल की बात कहते हुए, पेस टेनिस जगत में छोटी उम्र से शुरू हुए उनके जादुई सफ़र को दर्शकों को बताते चले गए।

जिस समय से पेस ने अंदर पहनी रोटरी की टी-शर्ट को दिखाने के लिए नाटकीय ढंग से अपनी जैकेट उतारी, उस समय से पेस दर्शकों के चहेते बन गए। उनका संबोधन, जिसने निर्धारित समय सीमा का पालन नहीं किया, परन्तु किसी को इसकी शिकायत नहीं थी, उनके माता-पिता के लिए प्यार एवं श्रद्धा के भावों से भरा हुआ था, कैसे उनके माता-पिता ने उनके जीवन एवं मूल्यों को आकार दिया, उनकी जिद एवं साहस और कैसे एक नन्ही तितली जो 1996 ओलंपिक्स खेलों में उनके रैकेट पर बैठी, ने उनकी वह पदक जीतने में मदद की जिसकी उन्होंने आजीवन अभिलाषा की थी, का एक विवरण।

"जब मैं छोटा बच्चा था तब मेरा सपना था कि मैं अपने माता-पिता का अनुकरण करूं। मेरी माँ ने भारतीय बास्केटबॉल टीम की कप्तानी की, और वह केवल 5 फीट की थी और कुछ नहीं! उनमें गज़ब की फुर्ती थी और उनके अनुवांशिक गुण के कारण, मैं एक खिलाड़ी के रूप में पैदा हुआ।" उनके पिता का सपना 1972 के म्यूनिख ओलंपिक्स में हॉकी का पदक जीतने का था। "म्यूनिख में खेलों को दो दिनों तक रोकना पड़ा क्योंकि फिलिस्तीनी आतंकवादियों ने इजराइली खिलाड़ियो को बंधक बना लिया था; खिलाड़ियों को बाहर जाने की अनुमति नहीं थी, किसी को भी अंदर आने की अनुमति नहीं थी, कोई टीवी दल, किसी समाचार-पत्र को अनुमति नहीं थी। सेना ने गाँव का नियंत्रण अपने हाथों में ले रखा था। मैं नहीं जानता कि मेरे माता-पिता क्या सोच रहे थे, लेकिन मैं नौ महीने बाद पैदा हुआ था! इसलिए मैं कह सकता हूँ कि मैं एक ओलंपिक बच्चा हूँ!"

जब वह बच्चे थे तब उनके पिता उन्हें रोज़ रु 100 वीडियो गेम्स खेलने के लिए देते थे। "मैं सोचता था कि वह सबसे अच्छे पिता हैं। परन्तु मैं अपने पिता के पागलपन में उनकी पद्धति को नहीं समझ पाया कि वह मेरे अंदर खेल के कौशलों का विकास करना चाहते थे; एक खिलाड़ी बनने के लिए आँख तथा हाथ एवं आँख तथा पैर का तालमेल आवश्यक है।"

टेनिस सेलेब्रिटी लिएंडर पेस, रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म और पीआरआईडी पी टी प्रभाकर।

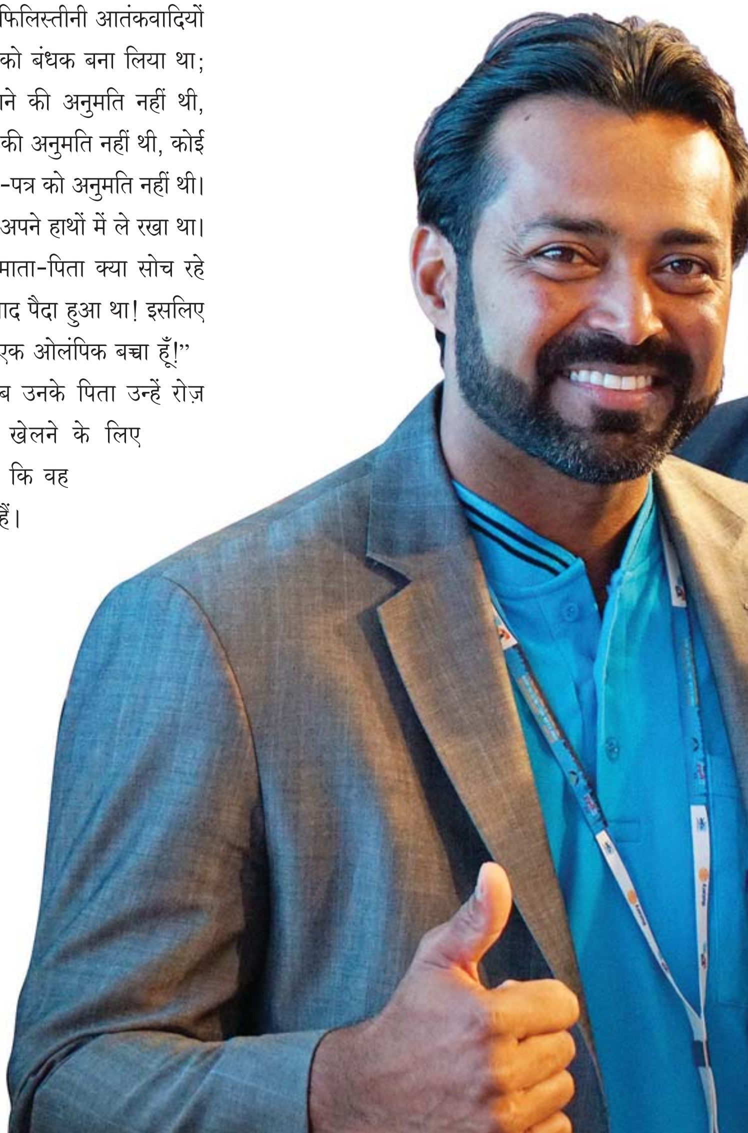

मेरी माँ ने भारतीय बास्केटबॉल टीम की कप्तानी की, और वह केवल 5 फीट की थी! उनमें गज़ब की फुर्ती थी और उनके अनुवांशिक गुण के कारण, मैं एक खिलाड़ी के रूप में पैदा हुआ।

पेस ने मंत्रमुग्ध हो चुके दर्शकों को बताया कि कैसे वह बचपन में अपने पिता के ओलंपिक पदक को *ब्रासो* से चमकाते थे और जब मैं उसे चमकाता था, "मैं अपने खुद के एक पदक की इच्छा करता था।"गति जो उन्हें अपनी माँ से अनुवांशिक रूप से प्राप्त हुई थी, उसके साथ उन्होंने फुटबॉल खेलना शुरू कर दिया और बार्सिलोना टीम के लिए चयनित हो गए। 11 साल की उम्र में वह स्पेन गए, अकादमी देखी, और उनका सपना था कि वह एक बे फुटबॉल स्टार बने परन्तु उसके लिए उन्हें उनका घर, उनका देश, उनका पासपोर्ट छोड़ना पड़ता और स्पेन के लिए खेलना पड़ता।

यह मेरा व्यावसायिकता के बारे में पहला सबक था... कि उसे इस बात से कोई फर्क नहीं पता कि आप कहाँ रहते है, आप किसके साथ साझेदारी करते है, लेकिन इस बात से फर्क पता है कि आप अपने आस-पास कौन से अच्छे लोगों को रखते है, क्या आपका एक सपना है और क्या आप उस सपने को पूरा करने के लिए सही पेशेवर लोगों को चुनते है। आप जिसके साथ साझेदारी करते है, यह आपको वह बनाता है जो आप है। आपको आजीवन एक विद्यार्थी बनना पड़ता है, अपने साथियों से, अपने प्रशिक्षक से सीखना होता है...केवल तब ही आप उत्कृष्टता हासिल कर सकते है।

और उत्कृष्टता जो उन्होंने बेशक हासिल की और जो 14 बार के ग्रैंडस्लैम विजेता राफेल नडाल के द्वारा उन्हें हाल ही में दिए गए एक प्रशंसा-पत्र के माध्यम से प्रत्यक्ष है: लिएंडर डबल्स में सर्वश्रेष्ठ सितारों में से एक है और टेनिस के इतिहास में सर्वश्रेष्ठ खिलायिों में से एक है।

मैं कर्म में अत्यधिक विश्वास करता हूँ, और चूंकि मैं बौद्ध धर्म को मानता हूँ, मुझे विश्वास है कि साझेदारियां केवल मनुष्यों के मध्य ही नहीं होती है।

जब उन्होंने फुटबॉल छोड़ा , उन्होंने उनके पिता को बताया, बिना ज्यादा सोच-विचार किये, कि वह टेनिस खेलना पसंद करेंगे। "मैंने उनसे कहा कि मेरे लिए सबसे अच्छी टेनिस अकादमी ढूंढिए और मैं आपको एक वर्ष में बताऊंगा कि मैं टेनिस ज़ारी रखना चाहता हूँ या नहीं।" पेस 1985 में चेन्नई की ब्रिटानिया अमृतराज टेनिस अकादमी में नामांकित हुए, और उनके शुरुआती विकास में अकादमी ने अहम भूमिका निभाई। विशिष्ट अकादमी में मैं आठ बच्चों में सबसे छोटा था; हम सुबह 4:30 बजे उठते थे, सुबह 5 बजे तक कोर्ट पहुँचाना होता था, और हर एक मिनट के लिए जितना हम देरी से आते थे, हमें टेनिस कोर्ट के 60 चक्कर लगाने पते थे। अनुशासन मूल तत्व था: सुबह 5 से 8 बजे तक वे टेनिस का अभ्यास करते। स्कूल से आने के बाद, वे शाम के 4 बजे वापस कोर्ट पर आ जाते; और 7:30 बजे तक "हमनें मैच खेले, और अभ्यास किया कि कैसे हम यूएस या ऑस्ट्रेलियाई ओपन, विंबलडन इत्यादि में खेलेंगे।" गृहकार्य, रात्रिभोज के बाद समय होता था लंबे पत्र लिखने का "जिसमें मैंने अपने माता-पिता और बहन को बताया कि मैंने उन्हें कितना याद किया, विशेषरूप से तब जब मुझे बुखार होता था। 13 वर्ष की उम्र में, मैंने बैंक खातों, पासपोर्ट का प्रबंध करना एवं यात्रा की बुकिंग्स करना और पूरी दुनिया की यात्रा करना सीख लिया था। मेरे पिता द्वारा लिखित 101 पन्ने के पत्र की एक पंक्ति मुझे याद है, और वह पंक्ति इस बारे में थी कि कैसे टेनिस एक आदमी बनने के लिए मेरा वाहन है। वह पंक्ति थी: दुनिया को हिलाने के लिए इस वाहन का इस्तेमाल करो।"

फिर पेस दर्शकों को दिलचस्प समय की स्मृतियों में 1996 एटलांटा ओलंपिक्स के उस दिन तक ले गए, जहाँ वह आंद्रे अगासी के विरुद्ध खेले, "मेरे सबसे प्रिय मित्रों में से एक और अब तक हुए सबसे अच्छे इंसानों में से एक।" जब वह 18 वर्ष के थे और यूएस ओपन में जूनियर खिताब जीता,

शर्मिष्ठा और आरआईडी मनोज देसाई, इंस्टीट्यूट चेयर राजा सीनिवासन और आरआईडीई सी भास्कर की उपस्थिति में लिएंडर का पेस का सम्मान करते हुए।

और 10 विश्वविद्यालयों, जिनमें यूसीएलए, हार्वर्ड, स्टैनफोर्ड, बार्सिलोना शामिल थे, की छात्रवृत्तियाँ प्राप्त हुई, उसने मुझसे कहा कि एक वास्तविक पेशेवर खिलाड़ी बनने के लिए मुझे अमेरिका आकर यहाँ रहना होगा।

उसकी सलाह लेकर, पेस फ्लोरिडा की हैरी हॉपमैन टेनिस अकादमी में गए और वहाँ 4 वर्षो तक प्रशिक्षण प्राप्त किया। मैं उन अवसरों के लिए अमेरिका और अमेरीकी टेनिस का बहुत आभारी हूँ जो उन्होंने मुझे अपने कौशल को निखारने के लिए दिए।

नौ वर्ष की उम्र में, मदर टेरेसा और मेरे पिता ने मुझे सिखाया कि कभी-कभी लौटाकर भी आप कई अधिक प्राप्त करते है।

पेस ने उनका पहला ओलंपिक्स खेल 1992 में बार्सिलोना में खेला परन्तु 1996 में एटलांटा में, वह समय था उस पदक को प्राप्त करने का जिसकी मुझे हमेशा से चाहत थी। पेस फिर एक उत्तेजित कर देने वाले किस्से से परिचित करवाने लगे कि कैसे उनके पहले ही सेट में, उन्होंने अगासी को अस्थिर करने के लिए एक रणनीति बनाई, जो मुझसे ज्यादा लंबा, बा, सुदृढ़ था और मुझसे अधिक टेनिस की तकनीकियाँ जानता था। मुझे लगा कि मुझे इसके साथ मेरे दिल से, मेरे शारीरिक कौशल से, मेरी मानसिक ताकत और बुद्धिमत्ता से खेलना होगा। मैंने ड्राप शॉट्स और लॉबीस खेलना शुरू कर दिया... आगे और पीछे, जब मैंने उसे हिला दिया, मुझे लगा कि मैंने उसे बैचैन कर दिया है और मैंने मैच को अपनी शर्तो पर खेला।

एटलांटा सेमिफाइनल्स में इन सभी रणनीतियों का इस्तेमाल करके, पहले सेट में मैंने उसे हर प्रकार की परेशानियों में डाल दिया; पहले सेट का अंक 5-6 था और 15-40 पर मैंने अपने आप को दो सेट अंकों पर, और मेरे सपनों के पदक से आधा घंटा दूर पाया।

परन्तु अगासी की प्रतिभा यह थी कि उसने पेस की कमजोरी, जो थी बैकहैंड, का पता लगा लिया था। अचानक से पेस ने स्वयं को अगासी से बैकहैंड शॉट पाते देखा, उतना ज़ोर से जितना वह मार सकता था, मेरे दाहिने जबड़े पर, एक दाहिने हाथ के खिलाड़ी के लिए सबसे मुश्किल शॉट।

उनकी कलाई कमज़ोर स्थिति में थी: रैकेट मेरे चेहरे पर लगा, गेंद रैकेट पर पी, रैकेट ज़मीन पर गिर गया और मेरी कलाई एवं कोहनी के मध्य एक नस में खिचांव आ गया। मैं अत्यंत कष्टदायक दर्द में था। उनके अमेरीकी प्रशिक्षक ने उनसे खेल रोकने के लिए कहा; पीछे हट जाओ, खेल ज़ारी रखकर तुम तुम्हारे करियर को चोट पहुँचाओगे। लेकिन "मैंने कहा कि मुझे पट्टी बांधिए और कोर्ट पर वापस जाने दीजिये। मैं इस पल के लिए जिया हूँ, यह पल मुझसे ज्यादा महत्वपूर्ण है, यह पल साबित करेगा कि हम भारतीय दुनिया को हरा सकते है। कलकत्ता का एक

युवा लका होते हुए वैश्विक स्तर पर मैं जितना कर सकता था उतना सर्वश्रेष्ठ किया।"

यद्यपि उन्होंने अत्यधिक कष्ट में खेलना ज़ारी रखा फिर भी वह सेट और मैच हार गए। पेस ने समझाया कि यह पहला ओलंपिक्स था जिसमें कांस्य पदक के लिए भी एक मैच खेला जाना था। पूर्व के ओलंपिक्स में, दोनों सेमीफाइनल्स में हारने वालों को कांस्य पदक मिलता था।

मैच के बाद उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाया गया, उनका हाथ एक बी मुश्किल में था; और सभी विषम परिस्तिथियों को हराकर, उन्होंने 48 घंटे बाद कांस्य पदक के लिए मैच खेला। इस मैच के दौरान, जिसे वह हारने वाले थे, जब उनका हाथ अत्यधिक दर्द में था, एक तितली उनके रैकेट पर आकर बैठी, और फिर लौट गयी।

"मैं कर्म में अत्यधिक विश्वास करता हूँ, और चूंकि मैं बौद्ध धर्म को मानता हूँ, मुझे विश्वास है कि साझेदारियां केवल मनुष्यों के मध्य ही नहीं होती है। जैसे ही मैं सर्विस करने के लिए उठा, एक नन्ही लाल, सफ़ेद और नीली तितली मेरे रैकेट पर बैठ गयी।" वह उनके प्रतिद्वंदी, जो जीतने की कगार पर था, से उस तितली के बारे में बात करने के लिए जाली तक गए, वास्तव में उसका ध्यान भटकाने के लिए! और वह ठीक ऐसा करने में कामयाब रहे; पहली सर्विस की, वॉली मारी, एक ब्रेक पॉइंट बचाया, और उस खेल को जीत लिया। और फिर मैं मैच जीतता चला गया।

इस बात को बताते हुए कि कैसे रोटरी की स्वयं से ऊपर सेवाफ़ने उनके जीवन को परिभाषित किया, उन्होंने कहा कि 9 वर्ष की उम्र में उन्हें उनके पहले टेनिस पुरस्कार के रूप में 329 का एक चेक मिला था, और मैं उस पैसे से हर प्रकार की चीज़ करना चाहता था, जैसे एक आइसक्रीम फैक्ट्री, या बॉम्बे में एक आलीशान घर, या कम से कम बहुत सारे कपड़े या खिलौने खरीदना। परन्तु उनके पिता उन्हें मदर टेरेसा के पास ले गए, और उन दोनों ने पेस को उन पैसों को एक अनाथालय के लिए दान करने के लिए मनाया। मैंने पाँच बच्चों से शुरुआत की, आज मैं 10,000 बच्चों की सहायता करता हूँ। टेनिस की मेरी पहली पुरस्कार राशि ने मुझे एक शिक्षा दी। कभी-कभी आप लौटाकर कई अधिक प्राप्त करते है।

> आंद्रे अगासी, मेरे सबसे प्रिय मित्रों में से एक, ने मुझसे कहा कि एक वास्तविक पेशेवर खिलाी बनने के लिए मुझे यूएस जाकर वहीं रहना होगा।

> बचपन में जब मैंने अपने पिता के ओलंपिक्स पदक को ब्रासो से स्वच्छ किया और उसे चमकाया, मैं अपने खुद के एक पदक की इच्छा करता था।

जैसे कि रोटरी उसके कौशलों का लाभ उठाने के लिए अच्छे साझेदारों को ढूंढती है, भारतीय टेनिस की सनसनी लिएंडर पेस, जो डबल्स मैचों को जीतने में माहिर हो चुके है, के पास रोटरी को देने के लिए कुछ सुझाव थे। पहली सीख जो मैंने अपने करियर में सीखी वह थी कि हमारे बहुत से कौशल भगवान द्वारा दिए गए होते है, और उनमें से बहुत से कौशलों को हम रोजाना निखारते है। साझेदारी में जो महत्वपूर्ण था वह था स्वयं को समझना...और हमारी ताकतों एवं कमजोरियों के साथ तालमेल करना। एक बार जब हम अपनी कमजोरियां ढूंढ लेते है, हम उन ताकतों वाला एक साझेदार ढूंढ सकते हैं जो हमारी कमजोरियों को ढक सके। और हमारी ताकतें उसकी कमजोरियों को ढक लेगी।

डबल्स मैचों, जिसमें साझेदार के साथ सही समझ एवं तालमेल की आवश्यकता होती है, को जीतने वाले दिग्गज पेस ने कहा टेनिस में मेरी साझेदारियों में, दो व्यक्तियों का जो दो से अधिक होता है। और आपको भी दुनिया में इतना अधिक अच्छा करने के लिए साझेदार ढूँढते वक्त इस बात को देखना चाहिए।

चित्र: के विश्वनाथन

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपांकन

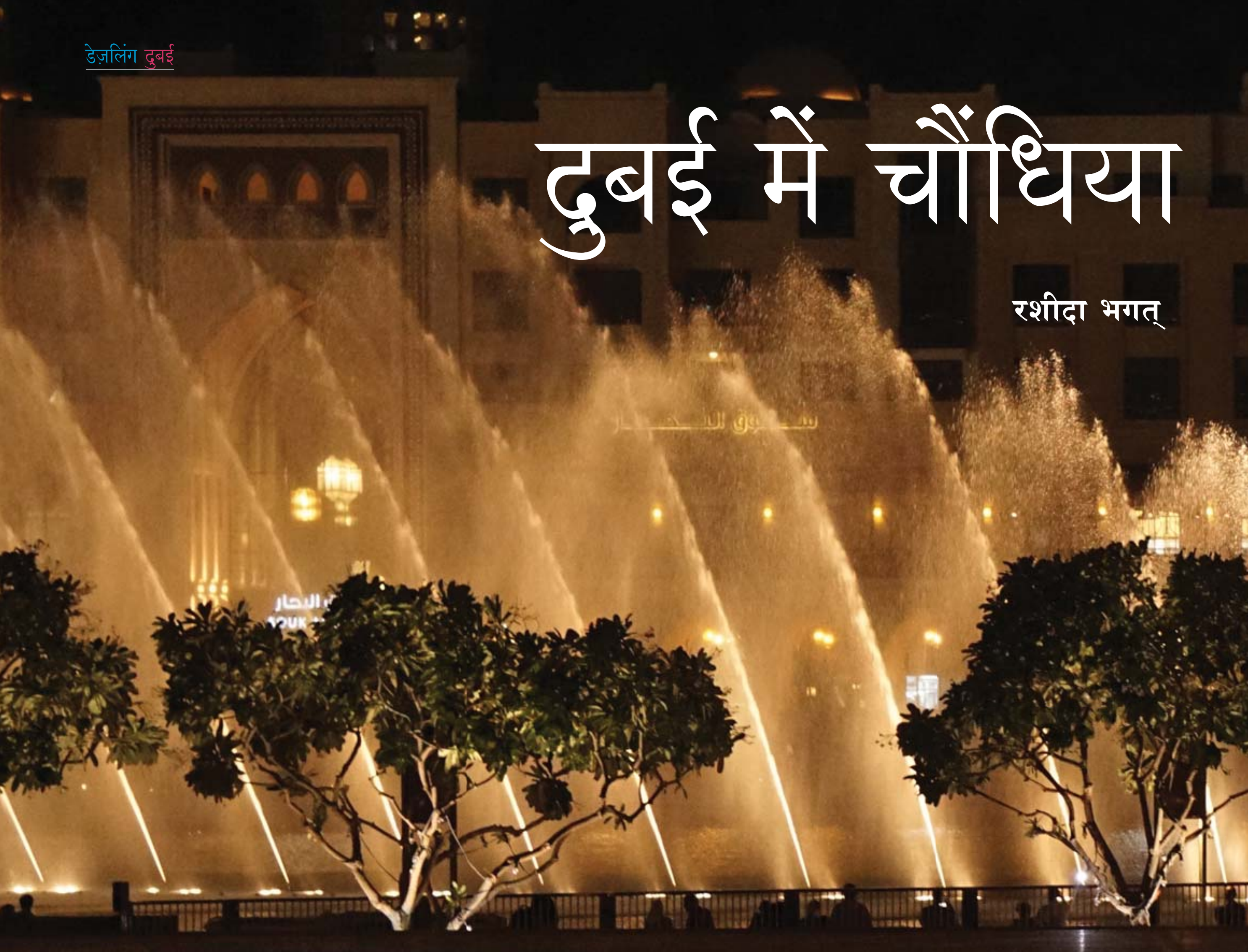

दुबई में चौंधिया

रशीदा भगत्

यदि जयपुर संस्थान रंगीन और चमकदार था, गुलाबी शहर के एतिहासिक स्थलों पर विचित्र अनुभव प्रदान करते हुए, तो दुबई ने भी अलग दिखने का साहस किया। चाहे वह दुनिया की सबसे ऊँची इमारत बुर्ज खलीफा के अरमानी पवेलियन में वहाँ के नाचते फव्वारों, जिसे आधिकारिक तौर पर दुबई फाउंटेन कहा जाता है, के साथ पुरस्कार की रात का भोजन हो, या जुमैरा बीच पर आनंद एवं उल्लास के साथ नाचते हुए रात्रिभोज।

दुबई फाउंटेन, दुनिया का सबसे बड़ा नृत्य-निर्देशित किया हुआ फव्वारा तंत्र जो तीस एक की हस्त-निर्मित बुर्ज खलीफा झील पर स्थापित है, विकिपीडिया के अनुसार वह 22,000 गेलन (83,000 लीटर) पानी की बौछारों को हवा में छिड़क सकता है। 6,600 से ऊपर लाइटों एवं 25 रंगीन प्रोजेक्टरों को स्थापित किया गया है।

संस्थान में उपस्थित 900 अनोखे रोटरी सदस्यों एवं उनके जीवन-साथियों ने मंत्र-मुग्ध होकर उन फव्वारों को चमकीले प्रकाश एवं परिवर्तित होते हुए रंगों के संग ठंडी सर्द हवाओं में नृत्य करते हुए देखा, जिन्हें विश्वभर के विभिन्न प्रकार के संगीतों, जिसमें भारतीय गायक अभिजीत का भी एक गाना शामिल है, पर अलग-अलग प्रकार की प्रस्तुतियां देने के लिए प्रोग्राम किया गया है। फव्वारों की लाइटों की किरणें इतनी तीव्र है कि उन्हें 20 मील दूर से भी देखा जा सकता है!

पवेलियन को संस्थान के समारोह के लिए बुक करवाया गया था, और हमनें हर 30 मिनट में फव्वारों का नृत्य देखा, और प्रस्तुतियों के मध्य ही वर्ष 2015-16 में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले डी जी यों को पुरस्कृत किया गया।

रो इ निदेशक मनोज देसाई से पूछे जाने पर कि क्यों उन्होंने पुरस्कार वितरण समारोह को खुले में करने का चुनाव किया, उन्होंने कहा, "सामान्यतः पुरस्कारों को संस्थान के हॉल में दिया जाता है और कार्यक्रम के अंत तक, हॉल लगभग खाली हो जाता है तो गवर्नर एवं उनके दल द्वारा की गयी की मेहनत को पहचान नहीं मिल पाती है। और, हमनें सुनिश्चित किया कि केवल दो लोग ही मंच पर आये ताकि वरिष्ठ नेतृत्वकर्ताओं द्वारा देखे जाने एवं पहचाने जाने का उचित अवसर प्राप्त हो। इस बार रो इ प्रेसिडेंट जॉन, आई पीआरआई पी के. आर. रविन्द्रन एवं आरआई पी एन सैम ओवोरी, मंच पर उपस्थित थे और गवर्नरों को ठीक तरीके से सम्मानित किया गया एवं उनके द्वारा की गयी की मेहनत के लिए उन्हें पुरस्कृत किया गया।"

123वें माले का अनुभव

लगभग 100 प्रतिनिधियों, जिनमें आपकी संपादक शामिल थी, के लिए अरमानी पवेलियन में पुरस्कार की रात का सर्वोच्च समय तब था जब उन्होंने दुनिया की सबसे ऊँची इमारत बुर्ज, जिसकी ऊँचाई 829.8 मीटर (2,722 फीट) है, के 123वें माले का दौरा किया। आगंतुकों के निरीक्षण करने के लिए डैक 124 वें माले पर है एवं उसके लिए

देने वाली मौज-मस्ती

द दुबई फाउंटेन

के विश्वनाथन

बुकिंग करनी पड़ती है, और जिसका खर्च समय एवं मौसम के अनुसार रु 2,500 से रु 3,500 के बीच में पड़ता है।

परन्तु रोटरी सदस्य जयंत कुमार, जो बुर्ज खलीफा में निवास करते है और एक एकेएस सदस्य बन रहे है, के कारण हम में से बहुत से लोग छोटे दलों में 123वें माले पर जा सके जहाँ पर बुर्ज के निवासी जा सकते है। तो इस प्रकार से आरआईडीई बस्कर और माला, पीआरआईडी यश पाल देसाई और मंजू, डी जी ई डी एम शिवराज और मनोंमणि और डीजी जॉन डेनियल, जो कुमार के ख़ास मित्र है, के साथ मैं और मेरे सहकर्मी विश्वनाथन 123वें माले पर जा सके! चूंकि लिफ्ट प्रकाश की गति से 123वें माले पर ले गयी, हमारे कान सुन्न हो गए और हम बिना किसी कोलाहल या लंबी कतारों के उस ऊँचाई से दुबई की चमचमाती रोशनियों की एक झलक पा सके। बाद में हमें पता चला कि कुमार ने ऐसे अनेक दलों के दौरों का आयोजन किया था! धन्यवाद जयंत कुमार।

सुचारू परिवहन

900 विलक्षण डी डी ज़ेड आई प्रतिनिधियों को तीन अलग-अलग होटलों में ठहराया गया था परन्तु सभी को बिना किसी गबी के डी डी ज़ेड आई समारोह स्थल तक ले जाया गया, जो था हयात रीजेंसी दीरा, और जहाँ पर टीआरएफ के शताब्दी वर्ष के रात्रिभोज का आयोजन किया गया था, उसी प्रकार जुमैरा बीच होटल, जहाँ पहली शाम का रात्रिभोज आयोजित था और अगली शाम का बुर्ज खलीफा में। 900 से अधिक लोगों को विभिन्न स्थलों तक ले जाना, और दुबई जैसे शहर में उन्हें सुचारू रूप से हवाईअड्डे से लाना ले जाना आसान नहीं है, परन्तु डीजीएन आर वी एन कानन (परिवहन समिति के प्रमुख) और आर नटराजन (हवाईअड्डे पर अगवानी करने वाले) ने शानदार काम किया।

डी डी ज़ेड आई दल के सदस्यों को भारी बैगों को कोच में स्वयं रखते देखना करुणात्मक था, कोई तुच्छ कार्य नहीं, क्योंकि वापसी यात्रा में सूटकेस ना केवल दुबई में की गयी खरीददारी के कारण भारी हो गए थे, बल्कि आयोजकों द्वारा वस्तुओं के दिए गए कई बैगों के कारण भी! उन रात्रिभोजों में से एक में, एक विशेष स्पर्श, औरतों के लिए एक उपहार था, जिन्हें विनम्रतापूर्वक बाँटा गया था जिस पर ये शब्द थे अध्यक्ष की पत्नी की ओर से; उसमें एक बहुत सुन्दर हार निकला!

एक शिक्षार्थी, हालाँकि कोई कम नहीं, राजा!

संस्थान के प्रमुख राजा सीनिवासन ने स्वीकार किया कि वह लगभग दो साल तक इस संस्थान की योजना बनाने एवं इसे संगठित करने में लगे रहे, जब तक कि आरआईडी मनोज देसाई ने उनके संस्थान के लिए दुबई को एक संभावित मंजिल के रूप में नहीं चुना। उन्होंने स्वीकार किया, मैं बमुश्किल कई रातों में सो पाया हूँ और एक प्रत्यक्ष प्रमाण था कि डी डी ज़ेड आई की क्रियान्वयन की प्रक्रिया के दौरान उनका 7 किलो वज़न कम हो गया था! आरआईडी मनोज देसाई ने उजागर किया कि बिना किसी गड़बड़ी के एक संपूर्ण संस्थान को अस्तित्व

में लाने के लिए मैंने दुबई की 13 यात्राएं की और राजा यहाँ 17 बार आयें! हम इस बात को सुनिश्चित करना चाहते थे कि हम सभी को एक अद्भुत समय प्रदान करें; क्योंकि हम व्यापर करते है परन्तु आनंद के साथ, और सबसे अधिक महत्वपूर्ण, सदस्यता को पर्याप्त समय देते है।

जे बी अचरज में डालते है, दुबई पर्यटन आभारी होता है

पीडीजी जे बी कामदर ने गेट्स दीक्षांत समारोह एवं बाद के सामान्य सत्र, दोनों में प्रतिनिधियों को अचरज में डालने के लिए आरआईडी देसाई से आज्ञा मांगी थी, और यह एक भव्य जादू का शो निकला जिसने दर्शकों को अपनी साँसें थामने पर विवश कर दिया। दुबई पर्यटन का संरक्षण अपने चरम पर था; परिवहन एवं वीवीआईपी लोगों की मेज़बानी के अलावा, पर्यटन प्राधिकारों ने कोई कसर नहीं छोड़ी इस बात को सुनिश्चित करने के लिए कि प्रतिनिधियों की यात्रा आरामदायक हो। और इसके लिए, पहली आवश्यकता थी सिम कार्ड। पर्यटन प्राधिकारों ने कुछ दुर्लभ अपवादों को छोकर इस बात को सुनिश्चित किया कि सभी डीडीज़ेडआई प्रतिभागियों को उनके आगमन पर ही थो टॉकटाइम के साथ एक मुफ्त सिम कार्ड मिले, उनके पासपोर्ट की प्रतिलिपि को दिए बिना! यूएई में एक दुर्लभ कमाल! देसाई ने कहा, हम इस सत्कार के अत्यंत आभारी है। आगे कहा, मैं हमेशा दिलों एवं मनों को जीतने की बात करता हूँ और उन्होंने अभी बस वही किया।

क्या हम नृत्य करें?

खैर वास्तव में दोनों शामों - जुमैरा बीच और अरमानी पवेलियन में साहचर्य का पर्याप्त समय था। तट पर, एक बहुत बयिा डीजे बॉलीवुड के गानों का मज़ा देने के लिए मौजूद था और लंबे समय से नाचते हुए डीजी, डीजीई एवं डीजीएनों तथा उनके जीवन-साथियों से वरिष्ठ नेतृत्वकर्ताओं...टीआरएफ ट्रस्टी प्रतिनिधि गैरी हुआंग, ट्रस्टी सुशील गुप्ता और विनीता, आईपीआरआईपी के. आर. रविन्द्रन, रो इ निदेशक मनोज देसाई और शर्मिष्ठा, पीआरआईडी शेखर मेहता और राशी...के जुने से पूर्व, वे सभी अपने उदासी को नृत्य करके दूर कर रहे थे।

परन्तु अचानक से, किसी ने तमिल फिल्म के गाने की मांग की और एकाएक आरआईडीई सी. भास्कर, तमिलनाडु के उनके कई सहकर्मियों के साथ फ्लोर पर आ गए। बेशक जोशीले तमिल गानों के साथ-साथ, चेन्नई एक्सप्रेस फिल्म का हिट लुंगी डांस ने नर्तकों को पागल कर दिया, और एक पलक झपकते ही देसाई और पीआरआईडी शेखर

रशीदा भगत

फ्लोर पर आ गए। उसी गाने को अगले दिन चेन्नई में साक्षरता शिखर सम्मलेन के प्रोत्साहन के लिए इस्तेमाल किया गया। जैसे ही हवा में थलाइवा की गूँज उठी, आरआईएलएम प्रमुख शेखर मेहता, सफ़ेद कमीज और वैस्थी पहने हुए, गले में मुंडू डाले एवं फैंसी चश्मा लगाये, लंबे कदमों के साथ मंच पर गए और साथ में देसाई, साक्षरता शिखर सम्मलेन प्रमुख पीडीजी जे बी कामदर, पीडीजी रवि वाडलामानी, और पूरा साक्षरता शिखर सम्मलेन का दल भी उसी प्रकार के कपे पहने मंच पर आ गया। जहाँ वाडलामानी मंच पर कुछ विचित्र चाल में चले, रविन्द्रन, जो अगले सत्र के लिए मंच पर आये, ने शेखर की प्रशंसा भूतपूर्व तमिलनाडु के मुख्य-मंत्री का युवा स्वरूप जैसे दिखने के लिए की और परिहास किया जिसे छापा नहीं जायेगा!

उत्कृष्ट वक्ता

एक क्षेत्र जिसमें दुबई संस्थान जयपुर संस्थान को पीछे छोड़ने में सफल रहा वह था चुने गए वक्ताओं की गुणवत्ता। टेनिस की सनसनी लिएंडर पेस ने संस्थान की की एवं कठोर समय-सारणी को हवा में उछाल दिया और दर्शकों को उनके द्वारा दिल से बोले गए भाषण से सम्मोहित किया। उनके द्वारा

रशीदा भगत

दुबई की बुर्ज़ खलीफा इमारत के 123 वें माले से लिया गया विहंगम दृश्य।

आरआईएलएम चेयर शेखर मेहता आरआईडी मनोज देसाई की उपस्थिति में चेन्नई में होने वाले साक्षरता सम्मेलन का दक्षिण भारतीय वेशभूषा में प्रोहत्साहन करते हुए।

पहनी गयी रोटरी की टी-शर्ट को दिखाने के लिए नाटकीय तरीके से अपनी जैकेट उतारते हुए, पेस ने घोषणा की कि वह भी एक रोटरी सदस्य है, और फिर उन्होंने टेनिस डबल्स खेलने के दौरान हासिल की गयी महान उपलब्धियों के पीछे के रहस्य को उजागर किया। हाँ, सफलता के लिए साझेदारी अहम् थी, जो एक रोटरी मंत्र भी है। सिर्फ बाद में, एक व्यक्ति ने नाम ना बताने की शर्त पर रोटरी न्यूज़ को बताया कि उन्हें बमुश्किल कुछ घंटे पूर्व ही माननीय रोटरी सदस्य बनाया गया था। परन्तु जिस तरह से पेस ने रोटरी के मूल सिद्धांतों की बात की, और उसे सेवा की भावना से जोा जो उनके मन में उनके पिता और मदर टेरेसा द्वारा तब बैठा दी गयी थी जब वह केवल ९ साल के थे, ने दिल जीत लिया और लोगों को उत्तेजित कर दिया।

अपने हस्ताक्षर की गयी टेनिस गेंद को उपहार स्वरूप देकर उन्होंने वरिष्ठ नेतृत्वकर्ताओं को पूर्ण रूप से मोहित करना ज़ारी रखा। रोई प्रेसिडेंट जॉन जर्म और जूडी, मनोज देसाई और शर्मिष्ठा, पीआरआईडी रॉन और विक्की ब्यूबिएन, अभय गाडगिल और दीपा को ये पुरस्कार मिले। पेस का संबोधन इतना प्रभा-वशाली एवं मंत्रमुग्ध कर देने वाला था कि रोई प्रेसिडेंट जर्म ने सत्र के अंत में प्रकट किया, जिसकी तालियों की गगाहट से प्रशंसा की गयी, कि उन्होंने एटलांटा सम्मलेन के लिए पेस को अतिथि वक्ता के रूप में शामिल होने के लिए मना लिया है। ऐसे ही!

उसी प्रकार से डॉक्टर जे. एम. हंस, जो गरीब बच्चों की कर्णावर्त प्रत्यारोपण की सर्जरी करते है, ने उनकी सेवा की कहानी को इतने प्रभावकारी ढंग से रखा कि उन्हें पहले ही रोटरी सभाओं को संबोधित करने के लिए कम से कम दो निमंत्रण प्राप्त हो चुके है ताकि वह इस नेक काम के लिए और पैसा जुटा सके, देसाई ने कहा।

कल्याणदा की कमी महसूस की गयी

वरिष्ठ रोटरी नेतृत्वकर्ता जिनकी कमी महसूस की गयी और जिन्हें कई स्थान आवंटित किये गए थे, टीआरएफ शताब्दी वर्ष के रात्रिभोज की शुरुआत से लेकर, वह थे टीआरएफ ट्रस्टी कल्याण बैनर्जी। इस बात की लगातार आशा बनी हुई थी वह अचानक से आने का निर्णय ले सकते है, भले ही आधे दिन के लिए हो, परन्तु वह उनकी पत्नी बिनोता बैनर्जी के अस्थिर स्वास्थ्य के कारण नहीं आ सके। सभा के शुरू होने से पूर्व उनके संदेश में, जो कार्यक्रम पुस्तिका में लिखा हुआ था, उन्होंने कहा दुबई में एक संस्थान संचालित करने के लिए साहस एवं नियोजन दोनों की आवश्यकता होती है परन्तु फिर आरआईडी मनोज का कुशलतापूर्वक राजा सीनिवासन ने साथ दिया भारतीय रोटरी के क्षितिज में एक और चमकता सितारा। उन्हें भरोसा था कि, वे दोनों एक यादगार समारोह करने के लिए अपने दल का नेतृत्व करेंगे और शायद, यह रो इ मण्डल को इस बात के लिए राज़ी करेगा कि वह भविष्य में एक *रोटरी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन* के आयोजन स्थल के रूप में दुबई का गंभीरतापूर्वक विचार कर सके।

उन्होंने आगे कहा: जितना मैं मनोज को जानता हूँ, मुझे विश्वास है कि दुबई भी उतना ही विख्यात, रंगीला एवं आनंदपूर्ण होगा जितना पिछले वर्ष जयपुर संस्थान था। आशापूर्वक, उससे भी कई अधिक। ट्रस्टी प्रमुख बैनर्जी दुबई संस्थान को याद कर रहे थे और उनका मन समारोह की कार्यवाहियों पर था, को इस बात से देखा जा सकता था कि उन्होंने समारोह में शामिल एक जो को संदेश भेजकर पूछा कि समारोह कैसा चल रहा है; एक संदेश में उन्होंने कहा, मैं जानता हूँ कि मनोज ने इस कार्यक्रम के लिए अपना मन और आत्मा लगा दी है। ■

रोटरी और उसका भविष्य

रशीदा भगत्

दुबई जोन इंस्टीट्यूट में रोटरी के भविष्य पर एक जोशीले और खुले सत्र के दौरान, IPRIP के आर रविंद्रन ने रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म तथा RIPN सैम ओवोरी से कुछ सूक्ष्म सवाल किये।

यह जाहिर करते हुये कि रोटरी इंटरनेशनल में, जर्म ही सहभागिताओं के बाबत में बातचीत किया करते थे, रविंद्रन ने उनसे भावी सहभागिताओं की अहमीयत के बारे में पूछा, खासकर कुछ बड़ी धर्मार्थ संस्थाओं के साथ। क्या इस तरह की सहभागिताओं के जरिये रोटरी को मिलने वाली मान्यता को जोखिम में डालना मुनासिब होगा?

"हाँ, सहभागियों के साथ काम करना बिलकुल जरूरी है। मेरा मानना है कि बिल गेट्स फाउंडेशन के साथ काम करने से, रोटरी की छवि और ताकत दोनों में बेहतरी देखी जा रही हैं,'' जर्म ने जवाब दिया। गेट्स ने कहा कि पोलियो के उन्मूलन का इतना बड़ा आँदोलन संभव नहीं हो पाता, "यदि रोटरी ने सक्रिय सेवा न की होती और मैं कहूँगा उनसे मिली दान राशि भी काफी मददगार साबित हुयी!'' USAIDS के साथ सहभागिता करना भी जरूरी था। "हम जिन संस्थाओं के साथ काम करते हैं, वे सभी हमारी सहभागिता की कद्र करते हैं। हाल में गेट्स फाउंडेशन के साथ मेरी मुलाकात हुयी और बिल गेट्स एटलाँटा आयेंगे; हम जल्द ही उनके साथ एक नयी सहभागिता का ऐलान करेंगे,'' उन्होंने कहा।

उन्होंने कहा कि रोटरी के साथ सहभागिता करने से मिलने वाली कामयाबी को देखकर अनेक संस्थायें, "हमारा सहभागी बनना चाहती हैं। और फिर दुनिया में कितनी सारी जरुरतें हैं जिन्हें पूरा करना है। जरा सोचिये कि हम अपने साथ और भी लोगों को लेकर चले तो हमारे प्रयास कई गुना बढ़ जायेंगे। जहाँ तक श्रेय देने का सवाल है, मैंने हमेशा यही कहा है कि यदि हम इस बात पर विचार करना छोड़ दें कि श्रेय किसको जाता है, काफी कुछ किया जा सकेगा। हाँ, रोटरी दूसरी संस्थाओं की सहभागिता में काम करने के द्वारा उस श्रेय को भी उनके साथ बाँट लेता है, लेकिन कोई बात नहीं और हमें इस सच्चाई का सामना करना ही होगा कि हम यह सब अकेले, खुद ही नहीं सकते हैं और यदि हम मानव सेवा कार्यों को जारी रखना चाहते हो तो हमे दूसरी संस्थाओं के साथ काम करना होगा। रविंद्रन के वक्तव्य को सभी दर्शक मुस्कुराते हुये, हँसते हुये गौर से सुनने लगे। रविंद्रन का अगला सवाल RIPN ओवोरी के लिये था। "इवांस्टन के इसी इमारत से हमारा प्रबंधन किया जाता है, लेकिन यदि आप दुनिया भर के सदस्यता लेखाचित्र को देखेंगे, तो पायेंगे कि उसके सारे "TRF दुनिया के इस यानि हमारे हिस्से में ऊपर की ओर इशारा कर रहे थे जब कि अमरीका व यूरोप में नीचे की ओर जाता दिखायी देता है। क्या आपको लगता है कि रो इ के मुख्य कार्यालय को सिंगापुर, दिल्ली या सियोल में स्थानांतरित करना सही रहेगा?'' और प्रबंधन का विकेंद्रीकरण? "अफ्रीका को 15 मिलियन दें, दक्षिण एशिया को 25 मिलियन डॉलर दें,'' और उनसे अपने प्रदेश में रोटरी विषयों का प्रबंधन करने

रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म और आरआईपीएन सैम ओवोरी

को कहें। लेकिन परियोजनाओं का लागत निर्धारण, संचालन, प्रबंधन आदि पर नियामक तैयार कर लें।

ओवोरी ने जवाब दिया कि इस बात को मनाह नहीं किया जा सकता था कि कार्यक्षेत्र के नज़दीक रहना फायदेकर रहेगा और विकेंद्रीकरण से संस्था की गूढ़ता को हटा दिया जा सकता है, सो लोग इस बात को निकट से देख सकते हैं कि रोटरी किस तरह का काम कर रहा है, "क्योंकि दुनिया के अनेक हिस्सों के लोगों को एक आकस्मिक भेंट को छोड़कर आप (रविंद्रन्) या जॉन जैसे लोगों से मिलने का मौका नहीं मिलता।''

लेकिन जब कि रो इ का विकेंद्रीकरण "अधिक उत्सुकता पैदा कर सकता है, हमें यह देखने के लिये इस मुद्दे की ओर गौर से देखना होगा कि कार्य क्षमता,

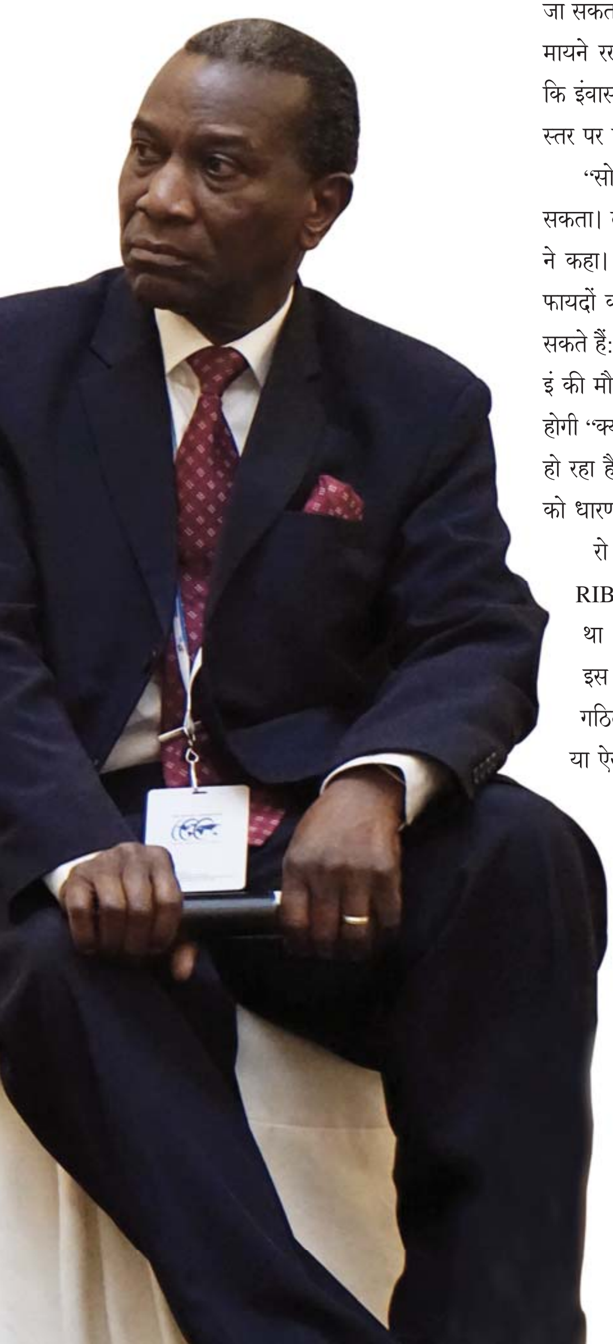

हाँ, इतर संस्थाओं के साथ सहभागिता करने के द्वारा रोटरी अपने हिस्से के श्रेय को उनके साथ बाँट ले रहा है लेकिन वह सब ठीक है। हमे इस सचाई का सामना करना ही होगा कि हम यह काम खुद, अकेले ही नहीं कर पायेंगे और दूसरों के साथ मिलकर काम करना होगा।

रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म

उपयोगित संसाधनों, तथा उससे क्या कुछ गंवाया जा सकता है आदि के संदर्भ में विकेंद्रीकरण कितना मायने रखता है।'' वे निश्चित नहीं कह सकते थे कि इंवास्टन में रोटरी मुख्य कार्यालय को प्रादेशिक स्तर पर प्रतिरूपित किया जा सकता है।

"सो लघु अवधि के लिये मैं निश्चित नहीं कह सकता। लेकिन दीर्घ अवधि के लिये हाँ,'' ओवोरी ने कहा। उन्होंने कहा कि ऐसा करने से होने वाले फायदों का विश्लेषण करना होगा; ये फायदे यूँ हो सकते हैं: अधिक सुविधाजनक, साधारण स्तर पर रो इं की मौजूदगी लोगों के लिये उत्साहवर्धक साबित होगी "क्योंकि रोटरी भारत तथा अफ्रीका में विकसित हो रहा है,'' लेकिन प्रादेशिक केंद्रों को इस विकास को धारणीय रखने सहायता की जरुरत है।

रो इ के अध्यक्ष से रविंद्रन का अगला सवाल RIBI पर था, जिस तरीके से वह काम करता था और यह कि यदि वह कामयाब था तो इस तरह की और प्रादेशिक संस्थायें क्यों नहीं गठित की गयी, "जैसे भारत-पाकिस्तान संघ या ऐसा ही कुछ।''

जर्म का कटु जवाब : "यदि आप रोटरी का विनाश करना चाहते हो, तो जाइये और उसे बरबाद कर दीजिये। RIBI नाकामयाब रहा है, उसे एक अलग संस्था के रूप में स्थापित किया गया था लेकिन वह काम नहीं कर रही है। जब मैं 2004 में रो इ का निदेशक था तब RIBI में 75,000 सदस्य थे; इस वक्त सदस्यता 48,000 तक घट गयी है। सदस्यों की उम्र होते जा रही है; सदस्यों की औसत आयु है 74, युवा उम्र के लोग नहीं आ रहे हैं क्योंकि उन्हें इसमें कोई मोल नज़र नहीं आ रहा, शुल्क भी बेहद ज्यादा है।''

अगले विधि परिषद में या उसके बाद 2022 में RIBI को भंग कर देने की बडी संभावना है, उन्होंने कहा।

अफ्रीका पर, जो कभी अंध (गूढ़) महाद्वीप कहलाया जाता था, जिसमे रोटरी के लिये आशाजनक संभावनायें दिखायी दे रही थी, क्योंकि वहाँ सदस्यता और अच्छी परियोजनायें, दोनों के लिये काफी अच्छे मौके दिखायी दे रहे थे, उनके अगले सवाल के जवाब में ओवोरी ने कहा, "हाँ वह एक गूढ़ महाद्वीप था, कुछ हद तक अब भी है, और कुछ समय के लिये ऐसे ही रहेगा।'' लेकिन वह विकास का प्रदेश था; "हमारे पास एक बिलियन लोग हैं। यह एक बेहद बड़ा महाद्वीप है और यहीं पर रोटरी की सबसे ज्यादा जरुरत है।''

एक और सवाल के जवाब में कि क्या रोटरी को, योग्यता की कीमत पर सदस्यता को बढ़ाना होगा, जैसा कि अक्सर पाया गया, जर्म ने कहा, "कभी कभी हम सदस्यता संख्या को बढ़ाने पर जरुरत से ज्यादा जोर देते हैं, और उच्च नैतिक चरित्र के व्यक्तियों पर कम, जोर देते हैं जिसके आधार पर रोटरी की स्थापना की गयी थी।''

अमरीका पहले इतनी वृध्दि नहीं कर रहा था, लेकिन अब वह बढ़ रहा है, जापान और कोरीया में भी पहले जैसी तेज वृध्दि नहीं देखी जा रही है। कभी कभी परंपरा की वजह से ऐसा होता देखा गया जैसे "युरप में, नियमों में काफी सख़्ती बरती जाती है। लेकिन सबसे अहम बात यह है कि आप तब ही रोटेरियन बन सकते हैं जब आपको सदस्य बनने के लिये आमंत्रित किया जाता है। हमें खुद जाकर अपने क्लबों के लिये सही सदस्यों को ढूँढना पडता है। हमें उसकी जिम्मेदारी लेनी होगी। कई बार हम, जो कोई आना चाहता हो उसे दाखिल करा लेते हैं क्योंकि हमें सदस्यों की जरुरत है, लेकिन महज इसलिये कि आपको आर्थिक सहायता की जरुरत है, आप संस्था को बरबाद नहीं कर सकते । मुझे लगता है ईमानदार और अच्छे चरित्र के लोग, जो चार मार्ग परीक्षण पर विश्वास करते हो और उसमे खरा उतर सकते हो, वें ही इस संस्था को सशक्त बनायेंगे।''

ओवोरी ने कहा कि योग्यता और आँकडे पारस्परिक तौर पर अलग नहीं थे। रोटरी की सदस्यता आमंत्रण पर आधारित है; "यदि हम सही लोगों को आमंत्रित करें, ऐसे नैतिक मानकों और मूल्यों का

पालन करने वाले लोग जिनको हम मानते आ रहे हैं, तो गुणवत्ता के मामले में समस्या होने का सवाल ही नहीं उठता।''

रविंद्रन ने कहा, "सैम आप जो कह रहे हैं वह सैध्दाँतिक तौर पर सही है लेकिन रो इ के बार्ड को पता है कि ऐसे कुछ अवास्तविक क्लब और सदस्य हैं जो मौजूद ही नहीं है।''

इस पर ओवोरी ने जवाब दिया: "तब तो असली समस्या हम खुद है, यानि मौजूदा रोटेरियन।''

जर्म का जवाब और भी ज्यादा सख़्त था: "अवास्तविक सदस्यता के लिये उस इलाके के रोटरी नेतागण ही जिम्मेदार हो सकते हैं क्योंकि हमारी संचालन व्यवस्था काफी सख़्त और पारदर्शी है। जो व्यक्ति प्रस्ताव करता है उसका नाम स्थानीय क्लब प्रकाशन में प्रकाशित किया जाता है। सो मुझे पता चल जाता है कि क्लब के अध्यक्ष एक अनैतिक व्यक्ति हैं यदि उन्होंने जाली सदस्यों को दाखिल कराया है। दूसरी बात यह है कि क्लब का बोर्ड अपना काम नहीं कर रहा है और फिर कहता है कि सदस्य जाली हैं। महज़ अधिक मत पाने के इरादे से मौजूदा सदस्यों से ज्यादा संख्या को दर्शाना "न्याय विरुध्द तथा अनैतिक'' बात है,'' उन्होंने कहा।

रोटरी का भविष्य, जर्म ने कहा, "बेहद उजला है। पिछले विधि परिषद ने लचीलापन ले आने की अनुमति दे दी और "और हम बोर्ड स्तर तथा प्रादेशिक नेताओं के स्तर पर निरंतरता ले आ रहे है और हम सुनिश्चित कर लेंगे कि जो प्रशिक्षण कार्यक्रम हम आयोजित कर रहे हैं, जिन से प्रयोगों से हम गुजरते हैं, वें हमे अधिक सशक्त बना देंगें।''

"उत्कृष्ट अवसर'' शीर्षक पर सत्र में, टीआरएफ के ट्रस्टी सुशील गुप्ता ने, टीआरएफ के ट्रस्टी प्रतिनिधि गैरी हुआँग से सवाल किया कि किस योजना के आधार पर टीआरएफ, दुनिया भर में अपनी जन छवि को बेहतर बनाने के लिये रोटरी द्वारा किये गये अच्छे कार्यों को उत्तोलित करेगा। "हम पोलियो का खात्मा करने के अपने लक्ष्य के नज़दीक पहुँच गये हैं और जब वह काम खत्म हो जायेगा, हमें सुनिश्चित कर लेना होगा कि हमें इसके लिये याद किया जायेगा। क्योंकि हम अपना काफी वक्त, धन और अपनी काफी शक्ति दुनिया का भला करने में खर्च करते हैं, हमें यह सुनिश्चित कर लेना होगा कि ये सभी नये सदस्यों को रोटरी की ओर आकर्षित करते हैं।'' लघु काल में सबसे बड़ी चुनौति होगी उचित सहभागी को चुनना।

यह पूछने पर कि रोटरी किस तरह अपने सहभागियों को चुनेगा, गुप्ता ने कहा, "हमें यह देखना होगा कि वह सहभागी मेज पर क्या ले आयेगा। मेरी सबसे बड़ी ताकत है सक्रिय सेवा करना। रोटरी दुनिया के लगभग सभी हिस्सों में मौजूद है, सो हमारे पास एक विकल्प है; जो कोई हमारी ताकत को बढ़ा पायेगा, हमारा सहभागी बनेगा। यह एक कारोबारी फैसला है; हम 10-12 सुरागों पर काम कर रहे हैं।''

यह पूछे जाने पर कि रोटरी यदि किसी ऐसे सहभागी को चुनता है जो उससे बड़ा या अधिक मशहूर हो, तो क्या उसकी आवाज धीमी नहीं पड़ जायेगी, गुप्ता ने कहा, "यह मायने नहीं रखता है। सबसे जरुरी बात यह है कि हम पोलियो का उन्मूलन करने वाले हैं या नहीं; यह नहीं कि किसे अधिक श्रेय मिलेगा।''

एक निर्वाचित डी जी के इस सवाल पर कि क्यों कर निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) निधियों को टीआरएफ के जरिये या वैश्विक अनुदानों के रूप में भेजा जाना चाहिये जब कि CSR सीधे क्लब या मंडल के साथ संपर्क करके ऐसा करने के लिये तैयार था, गुप्ता ने कहा, "क्योंकि टीआरएफ अपनी शराफ़त के लिये जाना

बाएं से :पीआरआईडी पी टी प्रभाकर, आईपीआरआईपी के आर रविन्द्रन, शार्लेट और आरईडी माइकल एहलबर्ग और आरआईपीएन सैम ओवोरी ।

जाता है, यह जरुरी है कि हम अपने CSR सहभागी के हर एक शंका को दूर करें। यदि उन निधियों का उचित तरीके से तथा विवेकपूर्ण तरीके में उपयोग नहीं किया जाता हो तो क्या होगा? हम हमेशा के लिये अपने सहभागी को खो देंगे। सो, हमारे लिये यह सुनिश्चित कर लेना जरुरी है कि हमने जो कार्य प्रणाली स्थापित की है उसका अनुसरण किया जा रहा है।''

उन्होंने कहा, "आप यह जानकर चौंक पड़ेंगे कि सियोल में आयोजित पिछले महाधिवेशन में किसी ने कहा: ओह, मैंने रोटरी की अनेक परियोजनाओं का "जनाज़ा निकलते देखा है।'' निश्चित ही हम नहीं चाहेंगे कि ऐसा हो।''

PRID यशपाल दास ने रोटरी के भविष्य पर सत्र की अध्यक्षता निभायी।

"उत्कृष्ट अवसर'' शीर्षक के सत्र को RIDE भास्कर ने इन शब्दों के साथ शुरू किया कि आगामी सालों में रोटरी को आगे की ओर ले जाने वाला सबसे बड़ा अवसर होगा टेक्नोलॉजी। "और हमें इस अवसर को उत्तोलित करना होगा।'' दूसरा अवसर था आधुनिक प्रबंधन तकनीकियों को समझना, "इस तरह की बैठकों में ऐसे प्रख्यात वक्ताओं के वक्तव्य को सुनकर अपने कौशल की धार को अधिक तेज बनाना और दुनिया में और भी अनेक भले काम करना।''

पीआरआईपी गैरी हुआंग और टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता।

"एक योजना ही सब कुछ है'' सत्र की अध्यक्षता करते हुये PRID पी टी प्रभाकर ने उत्कृष्ट योजनाओं की अहमीयत को रेखाँकित किया। जब पॉल हैरीज ने अपने दोस्त डोनल्ड कार्टर से रोटरी क्लब शिकागो में, पाँचवें सदस्य के रूप में दाखिल होने के लिये कहा था तो, डोनल्ड ने उनसे पूछा कि आप लोग क्या करते हैं और हैरीस ने कहा जालतंत्रण और साहचर्य। सो उनके दोस्त ने कहा कि यदि वे यही काम कर रहे हैं तो उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं है, लेकिन यदि समुदाय सेवा को भी क्लब में शामिल किया जायेगा तो वे सदस्य बनना चाहेंगे। क्लब के उपकानूनों में सुधार किया गया और सामुदायिक सेवा को भी शामिल कर दिया गया। बाद की बात तो सभी जानते ही हैं।

चित्र : के विश्वाथन
एल गुणशेखरन द्वारा रूपांकन

पुणे में शांति संगोष्ठी

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब पुणे शिवाजी नगर, मंडल 3131, दिनांक 18 और 19 फरवरी को पुणे में MIT परिसर में अंतरराष्ट्रीय सद्भावना और शांति संगोष्ठी मेज़बानी कर रहा है। इस अवसर पर TRF निर्वाचित ट्रस्टी चेयर पॉल नेटजेल मुख्य अतिथि होंगे जो शांति और संघर्ष के संकल्प समिति के भी अध्यक्ष है।

पंजीकरण और अधिक जानकारी के लिए, कृपया *www.rotarypeace.in* पर विजिट करें.

मेर्री क्रिसमस

पीआरआईपी राजेन्द्र के साबू और उषा साबू अफ्रीकी देश रवांडा के जन्मजात हृदय रोग से पीड़ित उपचार से गुजर रहे बच्चों के साथ क्रिसमस मनाते हुए।

तस्वीर: पीडीजी मधुकर मल्होत्रा, मंडल 3080

रोटरी शताब्दी दौड़ प्रतियोगिता

टीम रोटरी न्यूज़

मुंबई में महालक्ष्मी रेसकोर्स 20 नवंबर को घोडों की लयबद्ध जबरदस्त टाप से जीवंत हो उठा, जब मुंबई ऐसेस, मंडल 3141 के रोटरी क्लब ने, TRF के 100 वर्ष पूरा करने के उपलक्ष में आयोजित, एक दिवसीय उत्सव रोटरी शताब्दी दौड़ की मेजबानी की।

प्रतिष्ठित पुरस्कार जीतने के लिए विशाल दौड. के मैदान में घुड़सवार अपने अच्छे नस्ल के धोड़े पर सवार होकर प्रतिस्पर्द्धा कर रहे थे - वही क्षेत्र अधिकाधिक गतिविधियों से गुलजार था - सजीव संगीत प्रसारण, कॉकटेल मौकटेल ऑफर करता हुआ पानीवाला छिद्र, रुचिकर व्यंजन, कबाडी बाजार, फैशन शो, रोटरी क्वीन सौंदर्य स्पर्धा और बच्चों के लिए टैलेंट हंट से युक्त - यह एक ऐसा आनंदोत्सव था जिसका आनंद रोटेरियनों, रोट्रेक्ट और इनर व्हील के सदस्यों सहित 5,000 से भी अधिक लोगों ने उठाया।

इस कार्यक्रम का अपना प्रयोजन भी था। यह TRF के लिए अनुदान संचय समारोह था। प्रवेश के लिए टिकट शुल्क रु 500 प्रति व्यक्ति, विजेताओं द्वारा

ऊपर (बाएं से) डीजीई प्रफुल शर्मा, पीडीजी कमल सांघवी, टीआरएफ ट्रस्टी चेयर कल्याण बनर्जी, आरआईडी मनोज देसाई, पीआरआईडी अशोक महाजन,और डीजी गोपाल मंधानिया समारोह में। (दाएं से) टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता, घुड़सवार दौड़ के विजेताओं को ट्रॉफी के साथ सम्मानित करते हुए। (नीचे) बच्चों के लिए आयोजित एक कार्यक्रम।

रोटरी क्लब द्वारा प्रायोजित रैफल्स और कप, प्रत्येक के लिए 30,000 डॉलर के भुगतान के माध्यम से लगभग 210,000 डॉलर की राशि एकत्र की गई। मिलियन रेस कप को मेजबान क्लब के सदस्य मुंजाल शरद शाह ने प्रायोजित किया था जबकि छ: प्रीमियम रेस के लिए कप मुंबई के रोटरी क्लब, क्वीन्स नेकेलस, क्वीन सिटी, बॉम्बे पियर, मुंबई कफ्फ परेड और बॉम्बे बे व्यू द्वारा समर्पित किया गया था।

दिन का मुख्य आकर्षण सबसे बडे. घोडे. की नाल को माप 2.32 x 2.32 मीटर के गिनीज वर्ल्ड रिकार्ड को पार करना था जिसे मैदान पर प्रदर्शित किया गया था। यह रिकॉर्ड पहले केंटकी डर्बी संग्रहालय के नाम से था जिसमें एक घोडे. के नाल का आकार 2.11 x 2.11 मीटर का था।

इस प्रमुख कार्यक्रम में TRF ट्रस्टी अध्यक्ष कल्याण बनजी, ट्रस्टी सुशील गुप्ता, RID मनोज देसाई और PRID अशोक महाजन शरीक हुए। मंडलों से मंडल के गवर्नर - भूतपूर्व और सेवारत - इसके पडोसी भी उपस्थित थे। PDG गुलाम वहानवटी ने RWITC परिचालक समिति की अध्यक्षता की जबकि राजन दुआ परियोजना संयोजक थे।

एक रॉक सितारा ऑटो चालक

रशीदा भगत्

रोटरी क्लब मद्रास ईस्ट द्वारा सम्मानित तथा पुरस्कृत अकीर्तित नायकों से मिलिये।

समीपकालीन विमुद्रीकरण घोषणा के जरिये एक नकद रहित अर्थव्यवस्था की दिशा में सरकार की कार्रवाइयों से काफी पहले, लगभग 30 माह पहले उन्होंने क्रेडिट कार्ड स्वाईपिंग मशीन लगवाई थी। फेसबुक पर वे 5,000 मित्रों की सीमा तक पहुँच चुके हैं और अब इससे ज्यादा वे दोस्ती बनाने का निवेदन नहीं रख सकते है। उनके FB पृष्ठ Amazing Auto को अब तक 10,150 लाइक्स मिल चुके हैं। वे राज़ी खुशी और नाज़ के साथ अपने आयकर का भुगतान करते हैं; उन्हें खुशी है कि कर के रूप में दिया गया उनका एक-एक रुपया ''अरुण जैटली सर के बजट में जाता है।'' उन्होंने अतिथि वक्ता की हैसीयत से 65 निगमों को संबोधित किया है और वे रतन टाटा से मिलना चाहते हैं। ''मैं भारत में ऑटो संचालन के बाबत में बदलाव ले आना चाहता हूँ।''

चेन्नै के एक रॉक सितारा ऑटो चालक अन्नादुरै से मिलिये जिन्होंने अपनी त्रुटिहीन व नवप्रवर्तनीय सेवाओं, अपनी ईमानदारी व दोस्ताना अंदाज की वजह से अपने ग्राहकों का यूँ दिल जीत लिया है कि ''ITC ग्रैंड चोला, ताज या हयात जैसे पाँच सितारा होटलों में ठहरने वाले विदेशी जो शानदार कारों में हवाई अड्डे तक मुफ्त में जा सकते थे, मेरे ऑटो में हवाई अड्डा जाना चाहते हैं। और हवाई अड्डे के टर्मीनलों तक ऑटो ले जाने की अनुमति नहीं है, सो वे गाड़ी से उतरकर– अक्सर उनका परिवार भी उनके साथ होता है– प्रस्थान बिंदु तक अपने सूटकेसों को खींचते हुये ले जाते हैं,'' मुस्कुराते हुये वे आगे कहते हैं, ''एक बार आप मेरे ऑटो में सवारी कर लें तो आप मेरे दोस्त बन जायेंगे।''

मंडल 3230 के अंतर्गत रोटरी क्लब मद्रास ईस्ट ने हाल में अन्नादुरै सहित तीन अकीर्तित नायकों को मान्यता देकर सम्मानित किया। इतर दो नायक थे आर हरिहरन, एक शिक्षक जिन्होंने रोज शाम सरकारी स्कूलों के बच्चों को एक अर्थपूर्ण शिक्षण प्रदान करने, सात साल पहले अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया था और यातायात पुलिस एम कुमार जो चेन्नै में शोर्लींगनल्लूर ट्रैफीक जंक्शन के आसपास के वाहन चालकों तथा पादचारियों को अपना ''ग्राहक'' मानते हैं।

एस एस राजशेखर ने कुछ दशकों से पहले नगर पालिका स्कूलों के बच्चों के सामूहिक स्वास्थ्य परीक्षण सहित अपने क्लब में अनेक उत्कृष्ट कल्याण परियोजनाओं की अगुवाई की है। उनका कहना है, ''जब हमारे क्लब ने उन्हें सम्मनित किया, तो उनकी बातों को सुनकर हम चकित रह गये। उनके पास तरह-तरह की डिग्रियाँ नहीं है लेकिन वे पेशेवर वक्तओं की भाँति बोले। आम तौर पर यदि कोई वक्ता 20 मिनट से ज्यादा वक्त बोलता हो तो सदस्य आक्षेप करने लगते हैं। लेकिन यहाँ जब क्लब के अध्यक्ष के. अनंत ने उन्हें अपने वक्तव्य को खत्म करने के लिये कहा तो तब भी यह कहते हुये आक्षेप उठे कि ''नहीं, नहीं उन्हें बोलने दीजिये!''

अनंत ने कहा, ''इस परियोजना में हमने उन लोगों को मान्यता दी है जो अपने फर्ज से आगे बढ़कर काम करते हैं, अपने काम में खुशी को पाते

अन्नादुरै के आटो में यात्रा का मज़ा लेते हुए यात्री।

यातायात पुलिसकर्मी एम कुमार।

हैं, दूसरों की जिंदगियों में खुशियाँ ले आकर आदर्श बन जाते हैं।'' क्लब के सचिव सुदर्शन रंगनाथन ने कहा कि परियोजना के चैयरमेन मोहम्मद मंसूर अहमद ने प्रधानत: सामाजिक माध्यमों पर ध्यान संकेंद्रित किया और कुछ उम्मेदवारों के नाम सक्षिप्त सूची में शामिल किये। ''मैंने पहले अन्नादुरै से संपर्क किया और उन्होंने मुझे ट्रेफीक कुमार से संपर्क करवाया, क्यों कि दोनों का वास्ता चेन्नै के सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र की प्रधान सड़क से ही पड़ता है,'' अहमद ने कहा।

ग्राहक हमारे दाता हैं

अन्नादुरै का फलसफा सीधा सादा है; ग्राहक हमें रुपया देते हैं सो वे ही हमारे दाता है और बदले में उन्हें कुछ देना ही होगा। उन्होंने अपने ऑटो में 8 अखबार और 35-40 पत्रिकायें रखने के साथ शुरू किया था, लेकिन जल्द ही उन्हें पता चला कि ''मेरे ग्राहकों का 70 प्रतिशत इन्हें नहीं पढ़ रहा था बल्कि अपने स्मार्ट फोनों को 'ब्राऊज' करते रहते थे।'' सो उन्होंने ग्राहकों के लिये संपर्क साधनों की व्यवस्था की; अब तो यह आसान है लेकिन 2011 में ऐसा नहीं था। मेरा इरादा था मेरे ऑटो में 20-30 मिनट बिताने वाले ग्राहकों को ऊँचे दर्जे और तेज रफ्तार के संपर्क साधन दिलाना।''आगे उन्हें पता चला कि उनके सभी ग्राहकों के पास स्मार्ट फोन नहीं है, सो उनके लिये अन्नादुरै ने एक सैमसंग टैब्लट खरीदा, लेकिन क्योंकि उससे ''पी डी एफ फाइलों को खोला नहीं जा सका, मैंने पहले एक लैपटॉप खरीदा और बाद में एक आईपैड!'' इन सभी को पिछली सीट पर इस संकेत के साथ रखा गया कि मुसाफिर मुफ्त में इनका इस्तेमाल कर सकते हैं। क्या बख़्सीसों ने इसे संभव बनाया? ''जी नहीं, मैं बख़्सीस नहीं लेता। मैं यह सब इसलिये कर पाया क्योंकि मेरी इन सेवाओं की वजह से मेरा कारोबार दोगुना बढ़ गया।'' एक बार किसी विदेशी सवारी ने मुझे रु30 देने थे लेकिन छुट्टा ना होने की वजह से रु1,000 का नोट बढ़ा दिया और ''जब मैंने कहा कि मेरे पास भी छुट्टे नहीं है तो उन्होंने कहा आप ही उसे रख लें। मुझे वाकई आपकी सेवायें पसंद आयी। मैंने नम्रता पूर्वक उनसे कह दिया कि मुझे ये पैसे नहीं चाहिये। एक घड़ी वे चकित रह गये और मैंने महसूस किया कि उन्हें एहसास हो गया है कि भारत बदल चुका है!'' अन्नादुरै की उम्र 31 साल है और अविवाहित हैं। क्या उन्होंने शादी करने पर विचार नहीं किया? ''खैर, करोड़ों रुपये लूटने वाले लोगों से ज्यादा, मैं उन लोगों को स्वार्थी मानता हूँ जिसकी सोच अपने

ऑटो चालक अन्नादुरै।

परिवार तक ही सीमित हो।'' मैंने उनके गहन फलसफे को गौर से सुना जब उन्होंने कहा कि वे परिवार के सीमित दायरे से निकलकर, उससे आगे समुदाय की सेवा करना चाहते हैं। सो क्या वे अपने ग्राहकों को ही अपना परिवार मानते हैं? ''यह संभव नहीं है!'' उन्होंने चट् से जवाब दिया।

क्रेडिट कार्ड से भुगतान

अगली समस्या थी छुट्टे ना मिलना, ''क्योंकि मैं चेन्नै के IT क्षेत्र में ऑटो चलाता हूँ मेरे ज्यादातर ग्राहकों को वेतन उनके खाते में ही जमा कर दिया जाता है और उन्हें मुझे छुट्टे देने में काफी परेशानी हो जाया करती थी।'' सो उन्होंने क्रेडिट कार्ड द्वारा भुगतान की व्यवस्था करने का फैसला किया और स्वाईपिंग मशीन के लिये बैंक के पास गये। बैंक के मेनेजर ने मुझसे पूछा कि मैं किस तरह की दुकान चला रहा हूँ। जब मैंने कहा कि मुझे अपने ऑटो में रखने के लिये वह मशीन चाहिये, तो उनके चेहरे पर के भाव देखते ही बनती थी,'' अन्नादुरै हँस पड़े। आगे उनसे 8 दस्तावेजों की माँग की गयी जैसे ''कंपनी का चिन्ह, मोहर, कंपनी का पंजीयन, किराये का करार नामा, चालू खाता, विजिटिंग कार्ड आदि। मैंने दो ही हफ्तों में ये दस्तावेज पेश किये और मुझे मशीन मिल गयी!''

आप विश्वास करे या ना करें, Amazing Auto यानि अद्भुत ऑटो नाम की उनकी एक कंपनी है जिसे उनके नाम में पंजीयन किया गया है! और इसके बाद जो हुआ वह उससे भी ज्यादा अद्भुत है और शायद सीधे प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी की 'पुस्तक' से लिया गया आलेख मालूम होता है जब उन्होंने 8 नवंबर को रु1000 और रु500 के विमुद्रीकरण की घोषणा की थी। लेकिन बात यह थी कि अन्नादुरै ने यही बात 30 महीने पहले कही थी!''मैंने अपने ग्राहकों को क्रेडिट कार्ड के जरिये भुगतान करने की सुविधा दी और उनसे कहा कि भ्रष्टाचार और काले धन पर रोक लगाकर उनका उन्मूलन करने हमे अब एक डिजीटल भारत और लेन देन में खुलापन ले आने की दिशा में

सड़क पर ट्रैफिक को संभालते हुये, सफेद दस्तानें पहनता हूँ, जोर से सीटी बजाता हूँ, लोगों की ओर देखकर मुस्कुराता हूँ

एम कुमार

चल पड़ना है क्योंकि कई लोग अपने कर का भुगतान करने में टालमटोल कर रहे हैं! अब उनकी सवारियों का 60 प्रतिशत क्रेडिट या डेबिट कार्ड के जरिये भुगतान करता है और नियमित ग्राहक तो ''मशीन पर खुद ही कार्ड को स्वाईप कर लेते हैं।''इतना करने के बाद उन्होंने महसूस किया कि एक भारतीय नागरिक होने के नाते उन्हें भी कर का भुगतान करना होगा, सो उन्होंने लेखा परीक्षक की मदद से रु1,500 देकर अपने कर का भुगतान किया। पिछले साल, जब विनाशकारी बाढ़ के बाद लोगों को रु2,000 दिये गये तो ''मुझे इस बात पर नाज़ हुआ कि उसमे मेरा योगदान भी शामिल था!''

आर सुदर्शन, ट्रैफिक पुलिस एम कुमार, ऑटो चालक अन्नादुरै, स्कूल फॉर चेंज के शिक्षक आर हरिहरन, क्लब के अध्यक्ष के. अनंत, पीडीजी राजा रामकृष्णन्, परियोजना के चैयरमेन मनसूर अहमद।

इसके बाद बारी आयी mVisa के जरिये मोबाइल पर भुगतान करना जिसके लिये QR कोड की जरूरत है। हमेशा कुछ न कुछ नयापन ले आने की चाह रखने वाले अन्नादुरै अब अपने मुसाफिरों के आगे एक पहेली रखते हैं और माहवार इसके लिये रु1,000 का इनाम दिया जायेगा।

लगभग 7-8 विदेशी उनके नियमित ग्राहक है और ''ऐसे देशों से आये लोगों ने भी मेरे ऑटो में सफर किया है जिनके बारे में मैंने नक्शे में भी नहीं सुना है। यु के में प्रकाशित *Daily Mail* तथा एक पाकीस्तानी पत्रिका में भी मेरे बारे में लिखा गया है।'' जहाँ तक भारतीय मीडिया का सवाल है वे अनेक टीवी चैनलों का नाम लेते हैं - *NDTV, CNN-IBN, Times Now,* आदि।

एक स्वार्थहीन शिक्षक

बी कॉम ग्रेजुएट आर हरीहरन उन स्वार्थहीन शिक्षकों में है जिन्होंने गरीब बच्चों का मार्गदर्शन करने, उन्हें सलाह देने तथा शिक्षित करने ''ना केवल पुस्तकों के जरिये बल्कि असली ज्ञान दिलाने के इरादे से'' सात साल पहले अध्यापक की हैसीयत से अपनी सवेतन नौकरी से इस्तीफा दे दिया।

दोस्तों और दूसरे लोगों से महज मुट्ठी भर चावल इकठ्ठा करके, उसे अनाथालयों, वृध्दाश्रमों को देने के साथ उनकी सेवा शुरू हुयी थी; तीन सालों में उन्होंने 200 किग्रा चावल इकठ्ठा किया। लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में ही उनकी असली दिलचस्पी रही; वे सरकारी स्कूलों के छात्रों से बात करते थे। ''मैंने पूछा आपके शिक्षण का मकसद क्या है; कुछ छात्रों ने कहा डॉक्टर या इंजीनियर बनना आदि। लेकिन मैं उन्हें महसूस कराना चाहता था कि शिक्षण का असली मकसद है ज्ञान।'' सो रोज शाम को वे कुछ बच्चों को बुलाकर उन्हें सिखाते थे, सलाह देते थे; असली मकसद था इन बच्चों को आत्म विश्वास के साथ सवाक प्रौढ़ बनने के लिये तैयार करना, ''और उन्हें असली जीवन कौशल दिलाना।'' जब उनके

मैं बख़्सीस नहीं लेता। मैं यह इसलिये कर पाया क्योंकि मेरी इन सेवाओं की वजह से मेरा कारोबार दोगुना बढ़ गया।

अन्नादुरै

हरिहरण के विद्यार्थी शतरंज खेलते हुए।

अपने स्कूल – विवेकानंद विद्यालय– के प्रबंधक-संवाददाता को उनकी पहल के बारे में पता चला, तो उन्हें खुशी हुयी कि उनके एक भूतपूर्व छात्र इस तरह का काम कर रहे हैं और उन्होंने तीन कक्षायें इस काम के लिये दे दी।

अब उनकी परियोजना आसपास की बस्तियों के 7 बच्चों से शुरू होकर 100 बच्चों तक बढ़ गयी है जो 'School for Change' नामक उनके साँध्य विद्यालय में पढ़ने के लिये उत्सुक है। हरीहरन ने बतलाया कि इन बच्चों में संकेंद्रण शक्ति की कमीं है और उनके मन में अपने बारे में एक हीन भावना है ; वे खड़े होकर आत्म विश्वास के साथ अपना नाम तक नहीं बतला सकते थे। ''मेरी पहली चुनौती थी उनमे आत्म विश्वास को जगाना। हम चिंतन के साथ अपनी कक्षा को शुरू करते हैं जो आत्म-नियंत्रण के लिये जरुरी है।'' फिर धीरे-धीरे उन्हें खड़े होकर आत्म विश्वास के साथ बोलना सिखाया; अपने स्कूल में पुलिस, चिकित्सक, वकील आदि क्षेत्रों से स्थानीय तौर पर प्रख्यात व्यक्तियों को अतिथि वक्ताओं के रूप में आमंत्रित किया। ''मैं बच्चों को वृध्दाश्रमों, अनाथाश्रमों, नेत्रहीनों के लिये आवासों, आदि जगहों में ले जाता हूँ और उन्हें हमारे कम जाने माने राष्ट्रीय नायकों और स्वतंत्रता संग्रामियों की कहानियाँ सुनाता हूँ; मैं चाहता हूँ कि वे नेता बनकर उभरे।'' वे इन बच्चों को कुछ खेल कूद या क्रीडा में संबंध्द होने पर प्रोत्साहित करते हैं ताकि उनके व्यक्तित्व को विकसित किया जा सके और पालकों के साथ मासिक बैठकें आयोजित करते हैं क्योंकि ''लोग निशुल्क शिक्षण को कम आँकते हैं।'' जो उनसे पूछते हैं कि उन्होंने एक अच्छी नौकरी से इस्तीफा देकर यह काम क्यों शुरू किया तो उनका जवाब यही होता है कि उनका पारितोषिक है ''बच्चों के चेहरों पर की मुस्कान।'' अहमद ने कहा, ''सात सालों के लिये उनकी माँ ने

मेरी पहली चुनौति थी उनमे आत्म विश्वास को जगाना। हम चिंतन के साथ अपनी कक्षा को शुरू करते हैं जो आत्म-नियंत्रण के लिए जरूरी है।

आर हरीहरन

यह कहते हुये उन्हें प्रोत्साहित किया कि यदि तुम वापिस अपनी नौकरी में चले जाओगे तो, ये बच्चे निसहाय हो जायेंगे।'' हाल में, उन्हें किसी स्कूल में एक नौकरी मिली है जहाँ स्कूल के प्रबंधक ने उनसे कहा कि वे ''कुछ बदलाव ले आये और हमें कुछ नयी योजनायें सुझाये।'' बेशक वे शाम को अपना काम जारी रखते हैं। उनका सपना: ''मेरा हर एक छात्र अपने दिमाग को विकसित करते जाये और फिर मैं एक स्कूल बनाना चाहता हूँ।

एम कुमार एक रंगीले ट्रैफिक पुलिस है जो अपना हर एक दिन इसी प्रार्थना के साथ शुरू करते हैं कि ''जो कोई उनके इलाके की सड़कों से गुजरता है वह अपने दफ्तरों, स्कूलों या कालिजों में सही सलामत पहुँच जाये और उसी तरह सही सलामत घर वापिस भी आये। मैं खुद को एक शिक्षक मानता हूँ और एक शिक्षक को अपने छात्रों का पूरा ध्यान अपनी ओर ले आना चाहिये, तब जाकर वे सीख पायेंगे। सो सड़क पर ट्रैफिक को संभालते हुये, सफेद दस्तानें पहनता हूँ, जोर से सीटी बजाता हूँ, लोगों की ओर देखकर मुस्कुराता हूँ तो वे मेरी ओर ध्यान देने लगते हैं।'' क्लब के अध्यक्ष अनंत ने कहा कि यह परियोजना जारी रहेगी और क्लब और भी इस तरह के अकीर्तित नायकों को ढूँढकर उन्हें सम्मानित करेगा।

कृष्णप्रतीश एस द्वारा रूपांकन

आपके **गवर्नरों** से मिलें

रशीदा भगत् और जयश्री

चिकित्सा मिशन उनकी फ्लैगशिप परियोजना है

भूपेंद्र जैन, विज्ञापन
रोटरी क्लब ग्वालियर, मंडल 3053

मध्य प्रदेश के मुरैना जिले में 6 - 13 फरवरी तक 8 - दिवसीय चिकित्सा मिशन आयोजित किया जाएगा। इस वर्ष के लिए DG भूपेंद्र जैन का यह प्रमुख प्रकल्प है। इसमें प्रसूति व स्त्री-रोग, नेत्र विज्ञान, बाल रोग तथा हृदय रोग जैसे क्षेत्रों से संबंधित 5,000 से भी अधिक आपरेशन किए जाएंगे। उन्होंने कहा "PRIP राजेंद्र साबू इस पूरे शिविर में उपस्थित रहेंगे। इस बात को लेकर हम लोग बहुत उत्साहित हैं।"

शताब्दी वर्ष के दौरान TRF के लिए 200,000 डॉलर की राशि एकत्र करना इस DG का एक और लक्ष्य है। "TRF न्यासी सुशील गुप्त ने हमारे सामने यह लक्ष्य रखा था और मुझे इस बात का हर्ष है कि लोग इस पूरी राशि के लिए मुझे वचन दे चुके हैं।"

जैन 2001 में रोटरी से जुड़े "क्योंकि मैं अपने अंचल में रोटेरियनों द्वारा किए जा रहे सेवा कार्य से बहुत प्रभावित था।" यह पूछे जाने पर कि रोटरी से आपको क्या मिला है, उन्होंने कहा "सबसे पहली बात तो यह है कि रोटरी ने मुझे समुदाय की सेवा करने हेतु एक उत्तम मंच प्रदान किया है, इसने मुझे अनुशासन व समय प्रबंधन सिखाया है। किंतु इन सबसे बढ़कर रोटरी ने मुझे देश-विदेश में बहुत अच्छे-अच्छे अनेक मित्र दिए हैं।"

जब जैन परिनियंत्रक बने थे, उस समय मंडल 3053 में 61 क्लब तथा 2400 सदस्य थे। उस वर्ष के दौरान उन्होंने 10 नए क्लब स्थापित करने का लक्ष्य रखा था। इनमें से 4 पहले ही चार्टरित किए जा चुके हैं, दो की प्रक्रिया चल रही है और चार की अति शीघ्र संभावना है। कुल मिलाकर वह 500 नवीन सदस्य बनाना चाहते हैं।

कांग्रेस नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ।

सेवा ही समाधान है

रोटरी उनके लिए नया नहीं है। उनके पिता पी नारायण उपाध्याय भी रोटेरियन थे। "मुझे याद है मैं उन्हें मीटिंग के लिए मणिपाल छोड़ने जाता था। वे जिनका उल्लेख बंद दरवाजे में व्यापार की बैठकों के रूप में करते थे", डॉ जयप्रकाश उपाध्याय करते हैं। और जो उनके रोटेरियन बनने के लिए काफी "प्राकृतिक" था। जनरल शल्य-चिकित्सा में स्नातकोत्तर करने के साथ, वे हमेशा गरीब लोगों के इलाज और उन्हें गांव से कान्हागढ़ लाकर उनकी सेवा के लिए उत्साही थे। "अब ये स्थान एक गांव से बहुत बदल गया है," वह कहते हैं। वे बेंगलूरु में स्कूल में पढ़ाई के दौरान एक इंट्रैक्टर थे। लेकिन बेलगांव में कॉलेज में रोट्रैक्ट क्लब नहीं था। उन्होंने 1994 में रोटरी में प्रवेश किया और पीआरआईडी रमेश यू पाई से प्रेरित थे।

"यदि आप मानव हैं तो आपका एक रोटेरियन होना जरूरी है। लोगों के पास सपने होते हैं लेकिन हम रोटेरियनों के पास लक्ष्य होता है और गरीबों की सेवा करने लिए जिससे उनकी गरीमा बरकरार रखी जा सके।" वे कहते हैं।

उपाध्याय अपने क्षेत्र के आसपास कई लेप्रोस्कोपिक महिला नसबंदी कर चुके हैं। भारतीय जनसंख्या के विचार के रूप में सेवा का क्रमरहित अधिनियम।

वह टीआरएफ में अपने व्यक्तिगत योगदान में वृद्धि के लिए स्तर 2 के प्रमुख दानदाता के रूप में उठाने की योजना बना रहे हैं जबकि टीआरएफ शताब्दी के लिए मंडल का लक्ष्य एक मिलियन डॉलर है, उन्हें भावी दानदाताओं के साथ कम से कम 5-7 डॉलर बढ़ाने की उम्मीद है। वे चाहते हैं कि उनकी टीम का प्रत्येक सदस्य 500 डॉलर के योगदान के साथ टीआएफ में हिस्सेदार बने। वे लीक सदस्यता और मंडल के लंबित अनुदान निष्पादन को लेकर भी चिंतित हैं लेकिन उन्हें विश्वास है कि वे अपनी टीम के साथ के साथ सब संभाल लेंगे।

"मैं अपनी पत्नी राधिका को रोटेरियन बनाने में बुरी तरह विफल रहा। लेकिन वह स्वआश्रय नामक पारिवारिक संस्था में 126 निःशक्त बच्चों की सेवा करके खुश है, जो खुद उनकी देखभाल करती है।" वे यहां जोड़ते हुए कहते हैं कि उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय विधानसभा सत्र और नेटवर्किंग अवसर का भरपूर आनंद लिया जिसे रोटरी ने प्रदान किया।

जयप्रकाश पी उपाध्याय, लैपरोस्कोपिक सर्जन
रोटरी क्लब कान्हागढ़, मंडल 3202

प्रशांत व्हाई देशमुख, शिल्पकार
रोटरी क्लब पुणे अप-टाउन, मंडल 3131

कल्याणकारी कार्य और सदस्यता का रिकॉर्ड

उन्होंने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री से वादा किया था कि राज्य के इस साल के दौरान 2 करोड़ वृक्ष लगाने के लक्ष्य में, उनकी टीम अकेले 2 लाख वृक्ष लगाएगी। "परंतु मात्र एक दिन की समाप्ति पर, हम 2.7 लाख पेड़ लगा चुके है; और अब तक हम 4 लाख से अधिक वृक्ष लगा चुके होंगे," प्रशांत देशमुख कहते है। यह अनेकों पर्यावरणीय परियोजनाओं में से एक है, जिसे उनके मंडल ने उनके नेतृत्व में शुरू किया है।

"वास्तव में, हमारा मंडल रोटरी के सभी मूल-सिद्धांतों - सदस्यता, TRF में दान देने, सेवा परियोजनाओं को कार्यान्वित करने- में संतुलन स्थापित करते हुए आगे बढ़ रहा है," वह मुस्कुराते हुए कहते है। सदस्यता के संबंध में, हमें आशा है कि हम दक्षिण एशिया में नंबर एक क्लब के रूप में उभरेंगे, और उनका मंडल लगभग 1,500 सदस्य बनाएगा। "लगभग 700 सदस्य बना कर, हम अपने लक्ष्य का लगभग 50 प्रतिशत पहले ही प्राप्त कर चुके है, जो अब तक दक्षिण एशिया में सर्वोच्च है।"

लगभग 5,600 सदस्यों के साथ मंडल 3131 में 123 क्लब है; इस वर्ष, अभी तक, 8 नए क्लबों की स्थापना की गई है, और "हम 15 और नए क्लबों की स्थापन करना चाहते है। फाउंडेशन में योगदान देने के मामले में भी हम दूसरे नंबर पर नहीं है," देखमुख कहते है, और फिर अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहते है, "हमारा लक्ष्य 1 मिलियन है, परंतु हम इसे 1.2 -1.5 मिलियन तक बढ़ा सकते है। परियोजनाओं के मामले में, मंडल अपनी चिकित्सा के साथ-साथ पानी और स्वच्छता से जुड़े हुए परियोजनाओं को लेकर उत्साहित है। "चिकित्सा परियोजनाओं के संदर्भ में, हम पेशेवर स्वास्थ्य परियोजनाओं की स्थापना करना चाहते है। पुणे औद्योगिक क्षेत्रों से घिरा हुआ है, और वहाँ अनेकों दुर्घटनाएं होती रहती हैं, और उन क्षेत्रों में चिकित्सा सेवाओं की उपलब्धता सीमित हैं। हमें MIDC से भूमि प्राप्त हुई है और हम दो ऐसे केन्द्रों की स्थापना और करेंगे। एक रोटरियन ने रोटरी अस्पताल स्थापित करने में हमारे मदद की है और दुर्घटना-प्रवण क्षेत्रों में ब्लड बैंक की स्थापना कर रहे हैं।"

देशमुख को इस बात पर गर्व है कि "अपने मंडल में पहली बार, मैं फरवरी में एक विश्व शांति संगोष्ठी का आयोजन कर रहा हूँ, जिसमें आगामी ट्रस्टी अध्यक्ष पॉल नेटजेल भाग लेंगे हूँ।" साक्षरता के मुद्दे पर भी, मंडल ने बेहतर कार्य किया है; "हमने 5,000 शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए सरकार के साथ एक MoU पर हस्ताक्षर किया है और हम पहले ही 6,500 शिक्षकों को प्रशिक्षित कर चुके है और शायद हम 10,000 शिक्षकों को प्रशिक्षित करने में सफल होंगे। ई-लर्निंग के लिए हमने टाटा टेक्नोलॉजी और टाटा मोटर्स के साथ एक MoUs पर हस्ताक्षर किया है यहाँ हम नजदीकी राज्यों की भी मदद कर रहे है, जैसे गुजरात," वह अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहते है।

रोटरी को उल्लास व आनंद का साधन बनाना

अपने मंडल के TRF अंशदान का उल्लेख करते हुए प्रमोद कुमार ने कहा "मेरा मंडल इतना आलोकित नहीं है, प्रकाश की किरणें बस अभी फूट ही रही हैं।" वाराणसी, लखनऊ तथा इलाहाबाद जैसे स्थानों पर हथकरघा चलाने वाले या व्यापार करने वाले अनेक रोटेरियन यद्यपि काफी संपन्न हैं और "मंदिर निर्माण हेतु रु 50 लाख तुरंत दान कर देते हैं, परंतु डायलिसिस मशीन के लिए 10 लाख रुपये देने के पहले वे दो बार सोचते हैं। बड़े नगरों के निवासी धर्मार्थ की अवधारणा तथा 80 G के अंतर्गत मिलने वाली कर संबंधी छूट को समझते हैं।" उन्होंने आगे कहा कि रोटेरियन सामान्यत: यह सोचते थे कि अभिनियंत्रक द्वारा क्लब की यात्रा करने का प्रमुख उद्देश्य TRF के लिए निधि एकत्र करना होता है। "मुझे बैंक ओवरड्राफ्ट का उदाहरण देकर फाउंडेशन व वैश्विक अनुदान विषयक उनकी भ्रांतियों का निवारण करना पड़ा" परिणामस्वरूप हमारे मंडल को चार वैश्विक अनुदान तथा दो सावधि उपहार प्राप्त हुए।

उन्होंने TRF के लिए 300,000 डालर की राशि एकत्र करने का लक्ष्य बनाया है। इसके लिए उनका प्रस्ताव है कि प्रमुख दानदाताओं अथवा PHF की तरह की मोटी पार्टियों पर जूझने की बजाय दानदाताओं की संख्या बढ़ाई जाय। "मैं तो कहूंगा कि प्रत्येक रोटेरियन 26.5 डालर का अंशदान करे क्योंकि यह राशि सबकी क्षमता के भीतर है।"

वह अधिक महिलाओं को रोटरी में लाने के लिए उत्सुक हैं। वह मंडल की प्रथम अभिनियंत्रिका DGN श्रुति अग्रवाल की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। प्रमोद कुमार ने "रोटेरियनों को वापस रोटरी से जोड़ने वाली घर-वापसी योजना पर प्रकाश डाला। हम 87 पूर्व-रोटेरियनों को वापस ला चुके हैं। इन पूर्व-रोटेरियनों में से अधिकांश लोगों ने कहा कि अभी तक किसी ने उनसे रोटरी से जुड़ने के लिए कहा ही नहीं था।"

उन्होंने कहा "पिछले 10 वर्षों में 4,700 सदस्यों ने रोटरी को छोड़ दिया, जबकि इस समय नवीन सदस्यों की संख्या 3,100 है। यह आँकड़ा लगभग 100 प्रतिशत आता है। रोटरी को प्रत्येक व्यक्ति के लिए रुचिकर बनाने का काम तो मंडल प्रमुखों के ही हाथ में है।"

उन्होंने क्लबों को छोटे-छोटे, सरलता से करने योग्य प्रकल्प आरंभ करने की अनुशंसा की है। अन्नपूर्णा प्रकल्प के अंतर्गत 50,000 निर्धन लोगों को भोजन कराया है। "अब वाराणसी के 16 क्लब बाढ़ राहत प्रदान करने हेतु एक साथ आ रहे हैं।"

वह चुनाव लड़ने-लड़वाने के पक्ष में नहीं हैं। उन्होंने मंडल का CoL प्रतिनिधि बनने के इच्छुक 5 में से 4 PDG को; और RI निदेशक की नामांकन समिति में आने के इच्छुक 4 में से 3 PDG को चुनाव न लड़ने के लिए मना लिया, जिससे प्रतिनिधियों को सर्वसम्मति से चुना जा सका। उन्होंने हँसते हुए बताया ङ्गउनमें से एक तो दक्षिण भारत में तीर्थयात्रा करने भी चला गया।"

रोटरी उनके लिए एक बृहत परिवार की तरह हैं। "यदि मुझे मुंबई जाना होता है, तो मैं कहता हूँ कि मैं गोपाल के पास जा रहा हूँ और यदि मैं नागोजी के पास जाता हूँ, तो इसक अर्थ है कि मैं चेन्नई जा रहा हूँ।" वह धर्मादा निधि से अयोध्या में बनाए जा रहे नेत्र चिकित्सालय को लेकर काफी उत्साहित हैं।

डॉ प्रमोद कुमार,
बालरोग विशेषज्ञ
रोटरी क्लब रेणुकूट, मंडल 3120

महेश हेच मोकळकर, लोक निर्माण,
रोटरी क्लब गांधी सिटी, मंडल 3030

स्वप्न और प्रगति उनका आदर्श वाक्य है

मैं नहीं चाहता हूँ कि किसी व्यक्ति की मृत्यु कैंसर के कारण हो जिसके कारण मुझे अपनी माँ को खोना पड़ा," महेश मोकळकर कहते है। वह अपने जिले के आसपास के क्षेत्रों में मैमोग्राम शिविरों का आयोजन करने पर ध्यान केंद्रित कर रहे है, अब तक 3,000 से अधिक जाँच का कार्य पूरा हो चूका है। शोषितों-वंचितों की सेवा करना उनका जुनून है और उन्होंने अपनी टीम को छात्रों के मध्य 2,000 साइकिलों और निर्धन महिलाओं के मध्य 1,000 सिलाई मशीनों के वितरण में सहायता की है।

वे मात्र 24 वर्ष की आयु में वर्ष 1996 में रोटरी से जुड़े और कहते हैं कि "मेरे माता-पिता ही मेरे लिए प्रेरणा है।" उनके फॅमिली ट्रस्ट ने मैमोग्राफी बसों के लिए रु 25 लाख का योगदान दिया है। "मैं विचारों को प्रोत्साहित करता हूँ और अपना विचार उन पर नहीं थोपता हूँ। इसके कारण मुझे उनका पूर्ण सहयोग और साथ प्राप्त हुआ है।"

मोकळकर शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में TRF में 1.5 मिलियन डॉलर का योगदान देना और सदस्यों की संख्या में पर्याप्त बढ़ोतरी करना चाहते है। वह कमजोर क्लबों, उनमें से लगभग 40, जहाँ सदस्यों की संख्या 20 से भी कम है, पर ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं, और जहाँ कही संभव हो उन्हें एकीकृत कर रहे हैं। विंस और साक्षरता परियोजनाओं के अंतर्गत, वह विद्यालयों में भस्मित्र और 1,000 हैण्ड वॉश स्टेशन स्थापित करना चाहते है। इसके अतिरिक्त वह छात्र विनिमय कार्यक्रम पर जोर दे रहे हैं। "मेरे बच्चें IYE छात्र है और मुझे विश्वास है कि वास्तव में यह कार्यक्रम विद्यालय में सिखाएं जाने वाले विषयों से कही अधिक युवा मस्तिष्कों को प्रभावित करता है," वह कहते है।

उनके जीवन का सबसे यादगार क्षण था, जब उन्होंने एक महिला के पीड़ामुक्त चेहरे को देखा, जब उसे बताया गया कि उसे जो फाइब्रॉइड था वह कैंसर का नहीं था। उसका परिवार 2 वर्षों तक अत्यंत पीड़ादायक स्थिति में रहा था क्योंकि उसका पति जाँच के लिए रु 3,150 खर्च करने की स्थिति में नहीं था और मोकळकर ने उसे नि:शुल्क जाँच की सुविधा उपलब्ध करवाया था।

भारतीय रोटरी सदस्यों के लिए जेट एयरवेज़ की पेशकश

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी वैश्विक रिवॉर्ड मोबाइल एप में अब जेट एयरवेज़ का छूट ऑफर भी शामिल है। आर जी आर राजदूत एवं एटलांटा प्रमोशन समन्वयक विनय कुलकर्णी कहते है, भारतीय रोटरी सदस्य और उनका परिवार रोटरी ग्लोबल रिवार्ड्स (आरजीआर) कार्यक्रम के अंतर्गत जेट एयरवेज की सभी उड़ानों - राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय, जिनमें एयर फ्रांस एवं केएलएम द्वारा संचालित कोडशेयर उड़ानों भी शामिल है - के आधारभूत किराये में 10 प्रतिशत तक की छूट प्राप्त कर सकता है।

यह ऑफर केवल *jetairways.com* और आरजीआर की मोबाइल एप पर उपलब्ध है, और एक तरफ़ा एवं वापसी यात्रा पर लागू है। प्रोमो कोड है ROTRYPP16.

टिकटों की खरीदी 1 नवम्बर 2016 से 31 अक्टूबर 2017 की अवधि के मध्य में ही होना चाहिए और यात्रा की शुरुआत एवं समापन 31 अक्टूबर 2017 को या उससे पूर्व हो जाना चाहिए।

समझौते पर हस्ताक्षर के बाद जेट एयरवेज़ के क्षेत्रीय प्रबंधक येज़दी मार्कर (बाएं) और आरजीआर एम्बेसडर विनय कुलकर्णी।

इसमें मल्टीसिटी विकल्प द्वारा की गयी बुकिंग्स शामिल नहीं है। अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस लिंक पर जायें :

For more details go to: http://www.jetairways.com/EN/IN/PC/Rotary.aspx?PROMO=ROTARYAPP16

दक्षिणी मेहमाननवाज़ी

जून की 10 से 14 तक होने वाले रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन में अटलांटा मेज़बानी संगठन समिति पुराने दौर की कुछ बेहतरीन दक्षिणी मेहमाननवाज़ी पेश करेगी। स्थानीय दौरे को प्रेरणादायक बनाने के लिए गतिविधियों की लंबी लिस्ट तैयार की गई है जिसमें अच्छे भोजन से लेकर संगीत और स्थानीय स्थलों के प्रेरणादायक सैर तक सबकुछ शामिल होगा। यदि यह आपका पहला सम्मेलन है तो, यह आप के लिए दुनियाभर के साथी रोटेरियनों से मिलने का मौका है और यदि आप अनुभव के साथ सम्मेलन में जा रहे हैं तो आप अपने पुराने दोस्तों से मिल पाएंगे।

हॉल आफ फेम बेसबॉल खिलाड़ी हंक एरॉन, न्यू सन ट्रस्ट पार्क में रोटेरियनों के लिए "स्ट्राइक आउट पोलियो" रात्रि का आयोजन करेंगे जहां आप अटलांटा ब्रेव्स और फिलाडेल्फिया फिलिज

को खेलते देखेंगे। यदि आप खेलों में भाग लेना चाहते हैं तो सेंटेनियल ओलंपिक पार्क में शांति के लिए 3-के वॉक और दौड़ के आयोजन में सम्मिलित हो सकते हैं।

हैबिटैट फॉर ह्यूमैनिटी, एक गैर लाभकारी संस्था ने निम्न आय वर्ग के परिवारों के लिए भवन इमारत निर्मित की है जिसे अटलांटा होम कहा जाता है। मानवता के लिए बनाए गए घर में आप एक दोपहर बिता कर दीवारों के निर्माण में सहयोग कर सकते हैं।

क्योंकि अच्छे भोजन को बांटने से दोस्ती को मजबूत बनाने से बेहतर कुछ नहीं है, मेज़बान समिति द्वारा भोजन के कई कार्यक्रमों को एक साथ रखा गया है, स्थानीय रेस्तरां से व्यंजनों की एक ब्लॉक पार्टी सहित यकीकन परम्परागत मेज़बान मेहमाननवाज़ी रात्रि भी, जो खाना और मेट्रो अटलांटा पड़ोसियों के साथ मेलजोल भी प्रदान करेगी।

मेजबान और समिति आयोजन की एक पूरी सूची के लिए *rotaryconvention2017.org/festival-events* पर विजिट करें।

पूर्व पंजीकरण बचत का अंत 31 मार्च तक है। ***riconvention.org*** पर जाएं।

पेरीटो मोरेनो से, सप्रेम

अदिती डे

उत्तरपश्चिम अर्जेंटीना में साल्टा से दक्षिण में एल कैलाफेट तक नवंबर 2013 में एक दैनिक उड़ान ने अनजानी दुनिया के एक सफर को सूचित किया। क्योंकि बंगलौर में अपने घर से 15,000 किमी दूरी पर दक्षिण अमरीका में मैं केवल तीन लोगों को ही जानती थी। दो महाद्वीपों के बीच की इस सुंदर जगह में कहीं से एक आवाज ने दखल दी, ''सिडानोरा जी क्या आप पेरीटो मोरेनो हिम नदी पर चढ़ने की सोच रही है?'' मेरे साथी मुसाफिर और उरुग्वे से आये एक दवासाज फ्राँको ने मुझसे पूछा। जिंदगी के बारे में 22 साल की उम्र में उनके ऊँचे विचारों को देखते हुये वे दक्षिणी अर्जेंटीना (और पड़ोस के चिली) को सम्मिलित करने वाले पटागोनिया के इस मशहूर भूदृश्य के पर्यटक के रूप में सही बैठेंगे, ठीक मेरे पसंदीदा लेखक पॉल थरौक्स *दि ओल्ड पटागोनीयन एक्सप्रेस, 1979* तथा ब्रूस चैटविन *इन पटागोनिया, 1977* जैसे।

मोंटेविडियो में स्कूल की शिक्षिका और उनकी सहभागी एन्नट ने आगे की ओर झुकते हुये कहा, ''किशोर उम्र में भी हम पटागोनिया का सपना ही देखा करते थे। हमने एक साल तक यहाँ जाने के लिये बचत की, तीन महीने तक प्रशिक्षण पाया, तब जाकर हम एल चाल्टन से 3,359 मीटर की ऊँचाई पर सेर्रो फिज़ रोय पर चढ़ पा रहे हैं।''

दर्जनों सवालों ने उन्हें भी इस जगह की ओर खींच लिया। अर्जेंटीना, चिली, बोलिविया, पेरु, इक्वाडोर, एल साल्वडोर तथा ब्राजील में अत्याधिक खान-पान, 99 दिनों का सफर। मेरे जीवन की साठवीं सालगिरह के मौके पर खुद को मेरी ओर से दिया गया तोहफा! स्पैनिश भाषा में अपने अल्प ज्ञान को लेकर मैं शर्मिंदा नहीं हुयी। लेकिन ट्रेकिंग करना एक विकल्प नहीं है। खासकर 2009के बाद, जब लद्दाख की कोरी मार्खा घाटी में मौत के साथ उन्हें निकट का सामना करना पड़ा था।

एक तेज धमाके ने, जैसे किसी पाश्चात्य फिल्म में मशीनगन से निकलती है, इस शाँति को भंग कर दिया। पेरीटो मोरेनो पर से किंगफिशर नीले रंग की बर्फीली गुफा गायब हो गयी थी।

पटागोनिया के बारे में सुने गये किस्से मेरे बचपन की यादों को ताजा कर देते हैं। उन दिनों की यादें, जब बाबा घूमती मेज पर 78 RPM के रेकॉर्ड बजाया करते थे जिसने हमें साँबा और टैंगो से परिचित करा दिया। किसने इतने गूँजायमान संगीत की रचना की जो रबिंद्र संगीत या बाउल गीतों से भिन्न है? एरोलीनास अर्जेंटीना उड़ान संख्या AR 1694 पर सफर करने की चिंगारी छह या सात साल की उम्र से ही मेरे मन में भड़क उठी थी जो शाम के 3:30 बजे 22000 लोगों की आबादी वाले शहर एल कैलाफेट हवाई अड्डे को छूने वाला था। यही अर्जेंटीना (रजत भूमि) में घूम फिरने का सही महीना है।

क्या आप जानते हैं कि दक्षिणी पटागोनियन हिम क्षेत्र, जहाँ पेरीटो मोरेनो स्थित है, 16,800 किमी को सम्मिलित करता है। ''यह 355 किमी लंबा है तथा 48 किमी चौडा है'' इन-फ्लाईटफ पत्रिका से एन्नट ने पढ़कर दिखलाया। लगभग 18,000 साल पहले बर्फ की एक पतली परत ने दक्षिणी अर्जेंटीना तथा चिली को, एंडीस पर्वत के आर-पार ढक दिया। शायद 480,000 किमी से कुछ ज्यादा।

एल कैलाफेट के छोटे हवाई अड्डे की ओर चलते हुये, पचास तरह के हल्के-गाढे नीले रंगों का मानो जादू सा छा गया था। क्योंकि 'लागो अर्जंटाईनो' झील यहाँ के रनवे के पास है। यह खूबसूरत झील आपकी आँखों, आपकी कल्पना शक्ति और आपके दिल को लुभा देता है।

कैलाफेट हॉस्टल के लकड़ी के बने कैबीन नुमा कक्ष में नहा-धोकर और चाय- कॉफी लेने के बाद उत्साह के साथ मैं रौटा प्रोविंशीया 11 जाने वाली बस में चढ़ गयी जो एल चाल्टेन से होते हुये बोलिविया के उत्तर में 5,000 किमी दूरी का फासला तय करती है। एक के बाद एक अमरीका, जर्मनी, इंग्लैंड तथा फ्राँस से आये पर्यटकों को बस में बिठाया गया।

साफ सुथरे कपडों में गाइड जुआन ने बस में बैठे पर्यटकों की संख्या को गिनते हुये हाथ में माइक उठाया। हम विश्व के 8वें प्राकृतिक अजूबे को देखने जा रहे हैं। पार्क्यू नैशनल लोस ग्लेशियर्स! यह 1981 से UNESCO विश्व विरासत स्थल बन गया है।

''यह हिम नदी कितनी बड़ी है'', फ्रेंच लहजे में एक बच्चे ने पूछा। मशहूर पेरीटो मोरेनो हिम नदी को, जिसका मतलब छोटा काला कुत्ता हो सकता

था, 19वीं सदी के अन्वेषक फ्रांसिस्को पास्कासीयो मोरेनो का नाम दे दिया गया है, जिन्होंने सबसे पहले इसे खोज निकाला था। वह 250 वर्ग किमी को सम्मिलित करता है और अंग्रेजी शब्द L के आकार के लागो अर्जेंटाईनो से 74 किमी ऊपर, 30 किमी लंबे तथा 5 किमी चौड़े विस्तार से लगकर उठता है। पानी के नीचे, यह हिम नदी 170 से 700 किमी गहरी हो सकती है। ''उस बच्चे की आवाज कुछ ऊँची उठी, मैंने आपसे कहा था कि यह बहुत, बहुत बड़ी है!'' कितनी सारी किलो...किलो...मीटर बड़ी। क्या वह चाँद जितनी ऊँची है पापा?

कुछ मिनटों बाद, हमारी बस 1,415 वर्ग किमी ताजे पानी की झील लागो अर्जेंटाईनो के चमचमाते नीले पानी के पास जाकर रुकी, जो सेंटा क्रूज नदी के ज़रिये अटलांटिक महासागर में जाकर गिरती है। जब हमारी छोटी नाँव विक्टोरीया अर्जेंटाईनो तट से हटकर चलने लगी तो मैं बर्फीले पानी और उसकी अमापनीय गहराइयों के बारे में सोचकर सिहर उठी। बंद कैबिन के भीतर से देखने पर, जो पानी की ओर उन्मुख था, ऊँची हिम शिलायें बिलकुल नजदीक मालूम हो रही थी। गुलाबी गालों वाली एंजेला, अपने देशीय दुपट्टे को ओढ़कर मेरे पास बैठी थी जब कि उसके बगल में हँसमुख कार्लोस बैठे थे। तीस साल की उम्र वाले वे दोनों कोलंबिया से आये थे। एंजेला पेरु में रहने वाली विपणन निपुणक हैं। जबकि कार्लोस ब्यूनर्स आयर्स में, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के बारे में एक शोध निबंध पर काम कर रहे हैं।

बर्फ के टुकड़ों की मौन पुकार की प्रतिक्रिया में हम तेजी से लोहे की सीढ़ी पर चढ़कर नाँव के तल तक पहुँचे। सोने की मुद्रा में राक्षसी हंस के आकार की (मेरे अति सक्रिय दिमाग को यही सूझा) एक हिम शिला तैरती हुयी आयी; उसकी खुली सुराखें लगभग स्याह-नीले रंग की थी। आकार को बदलते रहने वाले बादलों की तरह हमारी नाँव ने एक बेहद ऊँचे बर्फ के टुकड़े को चकमा दे दिया, जो एक छोटे किले के समान दिख रहा था और यह झील उसकी खाई लग रही थी। हर एक साँस में, 11 डिग्री सेल्सियस के ठंडे तापमान ने मानो स्फूर्ति भर दी थी, यानि हाथों में दस्तानें पहनने का बुलावा! बर्फ से ढका एंडीस कुछ धुँधला सा दिखायी दे रहा था, जो पेरीटो मोरेनो से 61-मीटर पर, दक्षिणी मुख के

पीछे मानो अटका हुआ था। लंबी रेखायें उसकी ऊंचाई में समाकर फैली है जैसे किसी पुरातन चेहरे पर मौसमी रेखायें अंकित की गयी हो। अंधा कर देने वाले दोपहर की रोशनी में, यह हिम नदी और भी नजदीक मालूम पड़ रही थी। लेकिन जब मैंने अपना हाथ फैलाकर देखा तो पेरीटो मोरेनो 300 मीटर के फासले पर था।

''मैंने अभी अभी पेरु से आये कुछ पर्यटकों को यूँ कहते हुये सुना,'' कार्लोस ने दखल देते हुये कहा, ''19 जनवरी 2013 को पेरीटो मोरेनो इतना आगे आ गया कि ब्रेझो रिको या लागो अर्जंटाईनो के दक्षिणी छोर पर एक बाँध सा खड़ा हो गया। पानी का दबाव इतना ज्यादा था कि हिम नदी के विशालकाय टुकड़े भी गिर गये, जिससे फटन पैदा हो गयी। ''यहाँ सबसे पहले 1917 में एक फटन को दर्ज कराया गया था,''एंजेला ने अपने स्मार्ट फोन में कुछ देखते हुये कहा। ''ज़रा संभालके, mi amor (मेरे प्यार)'' कार्लोस ने एंजेला के लाल रंग के बालों को सहलाते हुये नर्मी से कहा, फटन के बाद कई मीटरों की दूरी पर फेंके गये बर्फ के टुकड़ों की वजह से 1968 के बाद 32 लोगों की मौत हुयी है।

झील पर एक घंटा बिताकर जमीन पर कदम रखने के बाद किनारे से लगकर बनी जंगले की धारवाली लकड़ी के बने सायेदार पथ पर ध्यान मग्न होकर टहलने का सही समय आ गया जो हिम नदी के मुख से निकलकर लगभग 500 मीटरों के दर्शनीय मार्ग तक ले जाता है।

गाड़ियों से उतरने वाले पर्यटकों को पछाड़ते हुये, जो अर्जंटायनीय पेसोस को छोड़कर, भुने माँस के टिक्कों या पारंपरिक जड़ी-बूटियों के पेय मेट को चखना चाहते हैं, लागो अर्जंटाइना के सामने के हर एक छज्जे पर झुंड बनाकर खडे आगंतुक आपस में यूँ फुसफुसाते नज़र आ रहे थे मानो किसी नैसर्गिक पूजा स्थल में प्रार्थना करने वाले उपासक! हमारी आँखों ने प्रधानत: पतझड़ की स्थिति में बीच वृक्षों की ऊँची कतारों से आगे और विशालकाय एंडीस की ओर जाते हुये अनेक नजारों को कैद कर लिया जैसे लेंगा और निर्रे (स्पैनिश में)।

इस हिम नदी की चोटी पर बनी कुछ असमान आकारों ने मेरी घुमंतु आँखों को बस में कर दिया। जैसे-जैसे पेरीटो मोरेनो रोजाना एक मीटर खिसकते जाता है, उसकी सतह की टीलें और खाईयाँ किसी अलौकिक रजई की भाँति दिखायी देती है। उसके

घने बर्फ हिम दरारों या बर्फ के बड़े टुकड़ों को अंकित करते है। प्राकृतिक मलबों पर, चट्टानों पर, वह एक दंगल या हिमोढ़ बनाता है। कार्लोस तथा एंजेला जैसे दूर से आने वाले हिम पाद यात्री, इस शैल प्रदेश में छोटे आकार के अन्यदेशीयों जैसे घूमते नजर आते हैं। एक अमानवीय खामोशी को ओढ़कर जो हम पर भी छा गयी थी, यह लगभग रहस्यमय भूदृश्य दोबारा मानो जीवंत हो गया था।

लकड़ी के बेंच पर बैठकर मैं, बर्फ की ऊँची दीवारों पर प्राकृतिक सफेद तथा भूरे रंग को मंडराते हुये देखती रही। मेरी आँखें तेज किंगफिशर नीले रंग के एक क्षेत्र पर जाकर रुक गयी। नीचे झील में, कुछ बर्फ के टुकड़े, दलदली पानी में तैरते हुये नजर आ रहे थे।

एक तेज धमाके ने, जैसे किसी पाश्चात्य फिल्म में मशीनगन से निकलती है, इस शाँति को भंग कर दिया। जब सैंडविच का मेरा लंच नीचे गिर पड़ा, तो मेरे हाथों में रोंगटे खड़े हो गये। पेरीटो मोरेनो पर से किंगफिशर नीले रंग की बर्फीली गुफा गायब हो गयी थी। वह स्वाभाविक तौर पर बियानाफ हो चुकी है, धूपदार कोहरे में लागो अर्जटाईनो में जाकर गिर पड़ी। वहाँ इकठ्ठा भीड़ ने जोश के साथ इस प्राकृतिक फिर भी असाधारण घटना का स्वागत किया।

हम एहसानमंद थे कि नवंबर माह में हवा की रफ्तार प्रति घंटा 130 किमी की नहीं थी। मैं कुछ अजनबियों की ओर दौड़ पड़ी। यह बात लगभग कार्मिक मालूम होती है कि मैं इस हिम नदी पर एक लघु पैदल यात्रा के लिये मुकर गयी क्योंकि पधिक ने जो क्रैंपनफ (स्कीईंग के जूतों पर लगाये जाने वाले धातु के प्लेट) दिये थे वे मेरे 3 L L Bean के, आरामदेह सपाट जूतों के आकार के लिये सही नहीं बैठ रहे थे। इतर नीले पेरीटो मोरेनो की गुफाओं को देखते रहने से मेरे सारे इंद्रियों में जोश भर आया। अगले दो घंटों में इसी तरह के पाँच और बर्फ के भीमकाय टुकड़े, हिम नदी के नुकीले टुकड़ों से उछलकर झील में गिर पड़े। लगता था मैं कुछ समय के लिये एलीस नहीं बल्कि 'अदिति इन वंडरलैंड बन गयी'।

मैं सच्चे प्रेम पर; अजनबियों के साथ अपनापन महसूस करने पर और उन सपनों पर विश्वास करती हूँ जो साकार हो जाते हैं जब आप सच्चे दिल से इसकी चाह रखते हो।

बर्फ की एक गुफा के प्रवेश द्वार के पास मैंने एंजेला के सामने घुटने टेककर शादी का प्रस्ताव रखा।

जंगले पर हाथों को टेककर, बिना सुध के मेरे कूल्हों पर डोलते हुये, मैंने गाइड को अंग्रेजी बोलने वाले पर्यटकों का संबोधन करते हुये सुना। दक्षिणी पटागोनियन हिम क्षेत्र, विश्व में ताजे पानी का तीसरा सबसे बड़ा रक्षित स्थान है। शेष दो हैं अंटार्टिका तथा ग्रीनलैंड। ऐसा क्यों है कि पेरीटो मोरेनो अब भी आगे बढ़ते जा रही है जबकि दुनिया की ज्यादातर हिम नदियाँ पीछे की ओर जा रही है? हिमनद वैज्ञानिक अब भी इसका भेद जानने की कोशिश में हैं।

चार घंटे बाद, धूप में सेंके जाने के बावजूद इस हिम नदी की गूढ़ता से स्फूर्तियुक्त हो जाने के बाद बाहर जाने का वक्त आ गया। कार्लोस ने मेरे पीछे अपने पैरों को थपथपाते हुये मुझ से पूछा, ''आप अब तक कहाँ थी?'' एंजेला आपको ढूँढ रही थी...

देखिये, एंजेला ने अपनी अंगूठी वाली अंगुली में सूक्ष्म हीरे को दिखलाते हुये बायें हाथ को हिलाया और मुझे गले से लगाया। अर्जेंटीना में पूरा हफ्ता कार्लोस ने सही घड़ी का इंतजार किया था।

कार्लोस ने आगे की कहानी बतलायी। ''हम पेरीटो मोरेनो की चोटी पर दूसरों से कुछ पीछे रुक गये। बर्फ की एक गुफा के प्रवेश द्वार के पास मैंने एंजेला के सामने घुटने टेककर शादी का प्रस्ताव रखा।''

स्तब्ध और चकित होकर मेरी आँखों में आँसू भर आये। क्योंकि मैं सच्चे प्रेम पर; अजनबियों के साथ अपनापन महसूस करने पर और उन सपनों पर विश्वास करती हूँ जो साकार हो जाते हैं जब आप सच्चे दिल से इसकी चाह रखते हो। मेरे सपने ने जिसे मैंने अर्सों से संजोकर रखा था मुझे इतनी दूर लाकर छोड़ा। पटागोनिया के इस खूबसूरत पेरीटो मोरेनो तक। और दक्षिण अमरीकी लोगों तक जिन्होने मुझे अपना मान लिया, ना कि दूर देश से आयी महज एक अजनबी।

और इसके बाद सदा खुश रहने की दुआओं के साथ...परी कथाओं के पृष्ठों से आगे!

चित्र- अदिती डे द्वारा

कृष्णप्रतीश एस द्वारा रूपांकन

शेखर मेहता
अध्यक्ष, RILM

Rotary India Literacy Mission

साक्षरता फोकस

संपूर्ण साक्षरता और शिक्षा की गुणवत्ता के लिए लक्ष्य

रोटरी फाउंडेशन की शताब्दी के मौके पर बेंगलोर के रोटरी क्लब ने 100 हैप्पी स्कूलों की शुरुआत की

रोटरी क्लब बैंगलोर का लक्ष्य 100 हैप्पी स्कूलों की स्थापना करते हुए TRF शताब्दी वर्ष का उत्सव मनाना है। कौशलों पर ध्यान केंद्रित करते हुए और शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर उन्नति करते हुए उनकी प्राथमिकता 'एक बेहतर संसार-एक समय में एक छात्र' का निर्माण करने की है। बैंगलोर के निकट सरकारी स्कूलों की पहचान की जा रही है, ताकि उनका कायाकल्प कर वंचित क्षेत्रों से प्राथमिक विद्यालय जाने वाले बच्चों की संख्या में वृद्धि की जा सके। परियोजना का आधिकारिक तौर पर उद्घाटन हरोकथनहल्ली में MAF रोटरी सरकारी प्राइमरी स्कूल में किया गया।

बाएं से, रोटेरियन विवेक प्रभु, रोटरी क्लब बैंगलोर के अध्यक्ष रोटेरियन रंगा राव रोटेरियन विन्सेंट पी राज।

हैप्पी स्कूलों की स्थापना करना वास्तव में ग्रामीण साक्षरता परिदृश्य को सुधारने के लिए एक रामबाण के समान है। बच्चों द्वारा ''स्कूल छोड़ने की समस्या उतनी ही चिंताजनक है जितना कि बच्चों का नामांकन स्कूल में नहीं करवाना,'' क्लब के अध्यक्ष रंगा राव कहते हैं।

इस महत्वाकांक्षी परियोजना को आगे बढ़ाने के लिए अत्यंत CSR का समर्थन प्राप्त हुआ है; कुल आवश्यक धनराशि का 70 प्रतिशत सदस्यों द्वारा आंतरिक रूप से एकत्र किया जाएगा और शेष 30 फीसदी कॉरपोरेट्स, दोस्तों और समुदाय के शुभचिंतकों के योगदान के माध्यम से प्राप्त किया जाएगा। दूसरे चरण में, क्लब शिक्षकों को उत्साहित रहने और बच्चों को ऊर्जान्वित करने के लिए प्रशिक्षित करेगी। तीसरे चरण में स्कूल को मॉडल स्कूल के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया जाएगा।

होंठो पर मुस्कान, चेहरे पर खुशी और जीवन को एक नयी दिशा का आह्वान

विगत दो वर्षों से रोटरियनों ने अत्यंत ईमानदारी और प्रेरणा के साथ उन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कार्य किया है, जिन्हें प्राप्त करने के बारे में बहुत लोगों के लिए सोचना भी कठिन है। हमारे लक्ष्य ऊँचे, कार्य कठिन थे परंतु संपूर्ण भारत में रोटरियनों और रोटरी क्लब ने अपने लक्ष्यों को सफलता-पूर्वक प्राप्त किया और हम निश्चित किए गए सभी लक्ष्यों से भी आगे बढ़ गए।

अभी तक की हमारी उपलब्धियाँ इस प्रकार है:

शिक्षक सहयोग के तहत 19,467 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया, ई-लर्निंग कार्यक्रम के अंतर्गत 9,009 स्कूलों को ई-लर्निंग की सुविधा प्रदान की गई, वयस्क साक्षरता कार्यक्रम के अंतर्गत 61,500 वयस्कों को साक्षर किया गया। बाल विकास कार्यक्रम के तहत 45,107 बच्चों को स्कूल वापस भेजने की प्रक्रिया शुरू की गई। हैप्पी स्कूल कार्यक्रम के तहत 1,402 स्कूलों को हैप्पी स्कूलों में परिवर्तित किया गया।

ये सभी उपलब्धियाँ भारत को साक्षर बनाने की दिशा में किए गए आपके समर्पण और कठिन परिश्रम के कारण संभव हो सका।

यदि किसी के जीवन को बेहतर बनाने, जीने के योग्य बनाने के लिए आप कुछ योगदान करना चाहते है, तो आपके लिए हमारे साथ जुड़ने का यह बेहतर समय है।

RILM के साथ एक T-E-A-C-H स्वयंसेवक क्यों बने?

- समुदाय से जुड़ने के लिए
- भारत में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के प्रयासों में नींव का पत्थर बने।

आप एक T-E-A-C-H स्वयंसेवक के रूप में क्या कर सकते है?

- शिक्षकों को प्रशिक्षित कर सकते हैं।
- एक स्वयंसेवी शिक्षक के रूप में छात्रों से जुड़ सकते हैं।
- वयस्क 'गैर-साक्षर' को कार्यात्मक साक्षरता प्रदान कर सकते हैं।
- व्यस्क शिक्षार्थियों में सामाजिक जागरूकता उत्पन्न कर सकते हैं।
- बच्चों को स्कूल वापस भेजने में सहयोग कर सकते हैं।
- संचार-संवाद और ब्रांडिंग के साथ सहयोग कर सकते है

हम चार्टर्ड एकाउंटेंट, शिक्षाविदों, वास्तुकारों, इंजीनियरों, सामाजिक विकास पेशेवरों की भी खोज कर रहे हैं जो एक T-E-A-C-H कैडर के रूप में हमारी परियोजनाओं की निगरानी में अपने ज्ञान और कौशल का इस्तेमाल करते हुए हमारे कार्यों में सुधार करने में मदद कर सकते हैं।

संपूर्ण साक्षरता। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने में हमारे साथ जुड़ें। आज ही एक T-E-A-C-H स्वयंसेवक के रूप में पंजीकरण कराएं। कृपया विजिट करें: http://rotaryteach.org/volunteer_registration.php

जुनून और मिशन - बाइक पर तय की 10,000 किमी की दूरी

कार्तिक, जो पेशे से एक डिजिटल फोरेंसिक अन्वेषक और जुनून से एक बाइकर हैं, ने आंध्रप्रदेश, ओडिशा, पश्चिम बंगाल राज्यों से होते हुए सिक्किम और सीमा पार भूटान तक पहुंचने के लिए चेन्नई से एक मोटरसाइकिल यात्रा 1 अक्टूबर को शुरू की। उनका मिशन RILM के T-E-A-C-H कार्यक्रम का प्रचार-प्रसार करना और शिक्षा के महत्व और उसके परिणामस्वरूप प्राप्त होने वाले एक सुखद जीवन के बारे में जागरूकता पैदा करना था। सीमा पार उनके मिशन का विषय था ''जब आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं, तब आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं और जब आप एक औरत को शिक्षित करते हैं, तब आप एक पूरे परिवार को शिक्षित करते हैं।''

उन्होंने विजयवाडा, विशाखापत्तनम, झालर, भुवनेश्वर, खड़गपुर, कोलकाता, सिलीगुडी, गंगटोक, फुएंटशोलिंग, थिम्पू, पारो, जीरो प्वाइंट, नाथूला दर्रा से होते हुए यात्रा की और उसी मार्ग से होते हुए लौटा और इस प्रकार उसने 27 दिनों में कुल 9,700 किमी की दूरी तय की। मार्ग में जाते हुए राजमुंदरी, कोलकाता, सिलीगुडी, गंगटोक, थिम्पू में रोटरी क्लब का दौरा किया, और नेताओं और रोटेरियनों के साथ साक्षरता पर अपने विचार को साझा किया। उन्होंने शिक्षा के महत्व और जीवन शैली के उत्थान में इसकी भूमिका के बारे में श्रमिक वर्ग के साथ बातचीत करने के लिए कारखानों और उद्योगों का भी दौरा किया। उन्होंने स्वतंत्र भारत में 100 प्रतिशत साक्षर बनाने के लिए शिक्षा प्रदान करने में RILM की भूमिका पर भी प्रकाश डाला।

उन्होंने जीरो प्वाइंट पर भारतीय सेना के सैनिकों से मुलाकात की और अपने मिशन के उद्देश्य उसे उन्हें अवगत कराया। उन्होंने दूरदराज के गांवों में शिक्षा के महत्व को प्रचार करने के लिए देश के विभिन्न हिस्सों में अपने परिवारों के साथ बातचीत करने का आश्वासन दिया।

इन सभी स्थानों पर, एक विकासशील समाज में स्वाभिमान केन्द्रों पर अशिक्षित माता-पिता को शामिल करने और एक बेहतर जीवन के लिए बच्चों को शिक्षित करने के सबसे महत्वपूर्ण पहलू का विशेष उल्लेख किया गया।

उनका अनुभव

''मैंने घनी आबादी वाले कुछ क्षेत्रों में देखा कि कुछ समुदाय अपने बच्चों के लिए शिक्षा की आवश्यकता को नजरंदाज करते हुए उनसे जीवनयापन के लिए श्रम करवाते हैं। समुदायों का एक व्यापक हिस्सा स्कूलों की सुविधा से वंचित है या उन्हें स्कूल की कोई सुविधा प्राप्त नहीं है। यहाँ तक कि कुछ समुदाय शिक्षा को दुस्वपन मानते हैं।'' हालाँकि एक RILM दूत के रूप में उनकी यात्रा ने,

उन्हें देहाती ग्रामीणों से मिलने में सक्षम बनाया और वह उन ग्रामीणों को अपने बच्चों को स्कूल भेजने में प्रोत्साहित करने में सफल हुए।

RILM मोबाइल एप्प

बाएं से आरआईडी मनोज देसाई, आरआईपीएन सैम ओवोरी *आरआईएलएम चेयर शेखर मेहता, टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता और पीआरआईडी वाई पी दास दुबई जोन इंस्टीट्यूट में आरआईएलएम एप्प की लॉन्चिंग के दौरान।*

T-E-A-C-H एप्प को देखें जिसे 17 दिसंबर को RIPN सैम ओवोरी द्वारा दुबई जोन इंस्टीट्यूट में पेश किया गया था। इसे एप्प स्टोर/प्ले स्टोर / iOS से डाउनलोड करें। समाचार प्राप्त करने, परियोजनाओं के बारे में अद्यतन रिपोर्ट प्राप्त करने तस्वीरों को साझा करने और एक-दूसरे से जुड़ने में डी जी, अध्यक्षों, और रोटरियनों की मदद करेगा। यह TEACH परियोजनाओं के लिए निधि प्राप्त करने के लिए द्वार के रूप में कार्य करेगी।

शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए RILM ने लर्निंग लिंक फाउंडेशन के साथ सहयोग किया

संपूर्ण भारत में शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए रोटरी भारत साक्षरता मिशन ने दिसंबर 10, 2016 को लर्निंग लिंक फाउंडेशन (LLF) के साथ एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किया। प्रशिक्षण सत्र पांच दिनों का होगा जिसमें विभिन्न विषयों जैसे संवर्धन, कक्षा प्रबंधन, मूल्यांकन और कक्षा में शिक्षण कार्य को शामिल किया जाएगा।

रोटरी/ इनर व्हील क्लब की भूमिका LLF के साथ एक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करने के लिए RILM के साथ संवाद-संचार करना, LLF की सेवाओं का लाभ उठाने के लिए एक सेवा आदेश (SO) प्रस्तुत करें। प्रशिक्षण के पहले, LLF को फीस का 50 प्रतिशत भुगतान करें। प्रशिक्षण कार्यशाला के समापन के बाद, अंतिम भुगतान जारी करें। शिक्षकों की पहचान में LLF के साथ समन्वय करें।

District Wise TRF Contributions as on November 2016

(in US Dollars)

District Number	APF	PolioPlus*	Other Restricted	Endowment Fund	Total Contributions
India					
2981	62,501	1,349	0	0	63,850
2982	13,202	2,251	0	0	15,453
3000	97,348	0	0	50,000	1,47,348
3011	38,551	224	1,543	0	40,318
3012	1,08,270	1,042	36,181	0	1,45,493
3020	22,523	12,858	0	69,599	1,04,980
3030	9,055	0	31,448	8,500	49,002
3040	30	0	(500)	0	(470)
3051	4,434	0	0	0	4,434
3052	(26,925)	0	26,925	0	0
3053	227	0	0	0	227
3060	53,660	0	14,706	38,633	1,06,999
3070	42,177	769	0	0	42,946
3080	12,038	9,702	34,897	11,333	67,971
3090	12,588	0	0	0	12,588
3110	18,609	25,923	0	0	44,532
3120	1,417	0	0	0	1,417
3131	1,45,486	23,747	98,125	69,955	3,37,313
3132	30,694	835	11,025	0	42,554
3141	2,09,417	13,125	1,19,185	2,640	3,44,367
3142	62,835	0	5,250	1,000	69,085
3150	89,986	5,993	26,241	69,000	1,91,219
3160	29,160	555	0	0	29,715
3170	22,781	3,498	1,960	0	28,240
3181	66,499	0	0	0	66,499
3182	9,834	522	0	0	10,357
3190	(9,722)	(12,606)	34,900	0	12,572
3201	23,504	224	1,015	0	24,743
3202	16,730	200	0	0	16,930
3211	19,107	0	0	0	19,107
3212	18,866	1,300	0	1,000	21,166
3230	85,858	126	10,379	12,500	1,08,863
3240	55,552	1,217	0	2,866	59,635
3250	8,649	0	722	0	9,371
3261	6,430	0	0	0	6,430
3262	53,481	3,373	77,750	2,000	1,36,603
3291	34,633	0	29,031	0	63,664
India Total	**14,51,511**	**96,228**	**5,60,784**	**3,39,026**	**24,47,548**
3220 Sri Lanka	38,008	25	0	11,043	49,077
3271 Pakistan	27,697	5,312	0	100	33,109
3272 Pakistan	72,193	17,092	0	3,000	92,285
3281 Bangladesh	97,089	4,050	7,700	5,100	1,13,939
3282 Bangladesh	38,437	0	0	2,000	40,437
3292 Nepal	72,945	1,100	27,745	0	1,01,789
South Asia Total	**17,97,881**	**1,23,806**	**5,96,229**	**3,60,269**	**28,78,184**
World Total	**4,46,48,982**	**91,21,232**	**40,09,303**	**85,40,590**	**6,63,20,107**

** Excludes Bill and Melinda Gates Foundation.*

Source: RI South Asia Office

WHERE WILL ROTARY GLOBAL REWARDS TAKE YOU?

THE MEMBER BENEFIT PROGRAMME THAT OPENS UP A WORLD OF OPPORTUNITIES.

Rotary

SEE MORE AT ROTARY.ORG/GLOBALREWARDS

आजीविका के लिए सिलाई

जयश्री

दिल्ली के निकट फरीदाबाद में सांई धाम में स्थित 'रोटरी सिंगर कौशल विकास केंद्र' में सुषमा, श्रेया, रश्मि एवं 20 अन्य औरतें तल्लीनता के साथ कई गज़ कपड़े में जान डालने में व्यस्त हैं। जहाँ सुषमा और श्रेया उनकी *फ़ैशन मेकर* मशीन की सहायता से कपड़े पर आकर्षक कढ़ाई कर रही हैं, वहीं रश्मि 'सिंगर' की पैर मशीन की सहायता से एक बढ़िया-फिट कुर्ता बनाने में लगी है।

''मैंने अनेक पैटर्नों में सलवार, कुर्ता एवं ब्लाउज़ को डिजाइन करना सीखा है। मैं गले एवं बाँह की पट्टियों में भी काई कर सकती हूँ।'' अपने पूर्ण रूप से फिट गहरे मैरून रंग के सलवार सूट, जिसे गले पर पीले एवं नीले रंग की कढ़ाई करके सजाया गया था, को दिखाते हुए सुषमा पूछती है, ''मैंने जो पहना हुआ है उसे देखिये। क्या यह सीधा बुटीक से आया हुआ नहीं लगता है'' वह सही बोल रही थी। वह वास्तव में एक बुटीक की सामग्री लग रही थी।

ये औरतें कम से कम 4,000 उद्यमशील महिलाओं का हिस्सा है जिन्हें सिलाई एवं अभिनव डिजाइनों को बनाने का प्रशिक्षण ज़िला 3011 एवं 3012 द्वारा उनके 'रोटरी सिंगर कौशल विकास केन्द्रों' के माध्यम से दिया जा रहा है। सांई धाम केंद्र के प्रमुख रोटरी क्लब फरीदाबाद सेंट्रल के रोटरी सदस्य मोतीलाल गुप्ता हैं।

ये केंद्र सिंगर इंडिया' एवं रोटरी के मध्य एक समझौते का परिणाम है जहाँ सिंगर रोटरी क्लबों को कीमत के 50 प्रतिशत दाम में सिलाई मशीन प्रदान करती है और महिलाओं को सिलाई एवं मशीन से कढ़ाई करने में प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से कौशल विकास केन्द्र की स्थापना हेतु मदद करती है। इस पहल का जन्म रोटरी क्लब दिल्ली

फरीदाबाद, सांई धाम में स्थित रोटरी सिंगर कौशल विकास केंद्र।

मेरी बहन पहले ही कोर्स पूर्ण करके एक बुटीक में कार्यरत है और अच्छा पैसा कमा रही है

सेंट्रल, ज़िला 3011, के रोटरी सदस्य विनीत विद्यार्थी एवं सिंगर के प्रबंध-निर्देशक राजीव बजाज के मध्य सिंगर के सीएसआर कार्यक्रम पर चर्चा के फलस्वरूप हुआ। विद्यार्थी ने इस विचार को उस समय के अविभाजित मंडल 3010 के डीजी संजय खन्ना के समक्ष रखा, जिन्होंने जुलाई 2014 में औपचारिक रूप से ग्रेटर नोएडा के दिल्ली पब्लिक स्कूल परिसर में पहले केंद्र का शुभारंभ किया। इस केंद्र को रोटरी क्लब दिल्ली रिवरसाइड, ज़िला 3012 द्वारा सहायता प्रदान की जाती है।

तब से अब तक 43 केन्द्रों की स्थापना दिल्ली एनसीआर में एवं कुछ की पोसी ज़िला 3080 के देहरादून एवं चंडीगढ़ में, आईपीडीइज डेविड हिल्टन की सहायता से, की जा चुकी है। अभी हाल ही में, ऐसे ही एक केंद्र की स्थापना, जिसे रोटरी क्लब रोहतक स्कालर्स द्वारा सहायता प्राप्त है, का उद्घाटन डी जी एन सुब्रमण्यम द्वारा रोहतक के स्कालर्स रोज़री स्कूल परिसर में की गयी।

कौशल विकास केन्द्रों का ध्यान सुविधाओं से वंचित महिलाओं को प्रशिक्षित करने पर है जिससे की वे महिलायें आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो सके तथा इस कला में एक आजीविका खोज कर पारिवारिक आय में योगदान दे सकें। इनमें से कई महिलायें अब कपड़ा उद्योगों में, बुटीक में तथा सिलाई करने वाली बड़ी इकाइयों में कार्यरत है।

रूपरचना

सिंगर विद्यार्थियों के लिए संकाय, पाठ्यक्रम, फर्नीचर, रोटरी एवं सिंगर के प्रतीक चिन्ह वाली नाम-पट्टिका, सामान जैसे कि कैंची, धागे, कपड़ा, इत्यादि प्रदान करती है तथा मशीनों का रख-रखाव करती है। रोटरी क्लबों को उन इलाकों को पहचानना होता है जहाँ यह केंद्र लाभप्रद साबित होगा और परिसर का किराया वहन करना होता है, वहीं सिंगर अंदर की सजावट करती है। परिसर के चुनाव में अधिक ध्यान दिया जाता है क्योंकि सिंगर महिला-प्रधान सुविधाओं जैसे शौचालय एवं सुरक्षित इलाकों पर ज़ोर देती है। प्रत्येक केंद्र में 25 मशीनें एवं कम से कम 10-15 फैशन मेकर मॉडल वाली मशीनें होगी।

विद्यार्थी कहते हैं, ''अधिक महिलाओं की रूचि मशीन के माध्यम से काई सीखने में है; इसलिए उन मॉडलों की मांग है।'' सिंगर प्रत्येक प्रशिक्षार्थी से प्रवेश एवं परीक्षा शुल्क के रूप में रु 300 लेती है। यह नियमित उपस्थिति को तथा उनके भीतर प्रतिबद्धता की भावना को सुनिश्चित करता है। तीन माह का सर्टिफिकेट कोर्स एवं छह माह का डिप्लोमा कोर्स कराया जाता है, जो कि परीक्षा एवं सिंगर के कोर्स पूर्ण करने के प्रमाण-पत्र द्वारा मान्य है। कक्षाएं दो घंटे की होती है, तीन बैचों में एक हफ्ते में पाँच दिन। श्रेया कहती है, ''प्रमाण-पत्र मूल्यवान है; मेरी बहन पहले ही कोर्स पूर्ण करके एक बुटीक में कार्यरत है और अच्छा पैसा कमा रही है।''

कंपनी उन विद्यार्थियों को 50 प्रतिशत की छूट देती है जो कोर्स पूर्ण होने के बाद एक सिलाई मशीन खरीदने की इच्छा रखती है। विद्यार्थी कहते हैं, ''एक शानदार पैर की मशीन की कीमत रु 3,000 है जबकि एक फैशन मेकर मशीन की रु 10,000 तो यह छूट इन महिलाओं के लिए एक वरदान होगी।''

ज़िले/रोटरी क्लब जो उनके क्षेत्र में एक 'रोटरी सिंगर कौशल विकास केंद्र' की स्थापना करने के इच्छुक है वे डीजीएससी विनीत विद्यार्थी को vinitvidyarthi2009gmail.com या मोबाइल: 9810111912 पर संपर्क कर सकते है।■

रक्त कैंसर के समान है काला धन

टीसीए श्रीनिवास राघवन

इसकी तात्कालिक कमियों के बावजूद भी, भ्रष्टाचार और काले धन के कैंसर को ठीक करने के लिए विमुद्रीकरण आवश्यक है।

हर कोई विमुद्रीकरण के बारे में बात कर रहा है जिसने सभी को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है। क्या इसे किया जाना चाहिए था इस मुद्दे पर एक व्यक्ति हमेशा बहस कर सकता है। परन्तु अब जब यह हो गया है, सभी को इस स्थिति में बेहतर करना है।

ज्यादातर लोग यह नहीं समझते हैं कि इसे क्यों किया गया। परन्तु स्पष्टीकरण काफी सरल है। यदि आपको गैंग्रीन होता है, तो डॉक्टर या तो एक अंगूठा या पैर या बांह इत्यादि काट देता है। यदि आपको कैंसर होता है तो वे उस हिस्से को निकाल देते हैं जो उससे प्रभावित होता है।

परन्तु काले धन की परिस्थिति रक्त कैंसर होने के समान है; आपको आपके शरीर का पूर्ण रक्त बदलना पड़ता है, और ऐसा ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया है। पिछली सरकारों ने कम कठोर उपायों को आज़माया है, जो कीमोथेरेपी के समानांतर इलाज था। कोई उपाय कारगार सिद्ध नहीं हुआ।

मोदी ने तय किया कि यदि भारतीय अर्थव्यवस्था की इस बीमारी का इलाज करना है तो इससे भी कई अधिक कठोर कुछ करना होगा। अब हमें इंतजार करना है और देखना है कि आगे क्या होता है। एक स्पष्ट तस्वीर को उभरकर सामने आने में कम से कम छह महीने का समय लगेगा।

इस दौरान, आर्थिक गतिविधियों का स्तर ठीक उसी तरह नीचे चला जायेगा जैसे कैंसर के मरीज़ की शारीरिक गतिविधि का स्तर संपूर्ण रक्त-आधान के दौरान नीचे चला जाता है। शुरुआत में अत्यधिक कमजोरी भी होती है, और केवल धीरे-धीरे ही शरीर को उसकी ताकत और प्राणशक्ति प्राप्त होती है।

एक नकारात्मक पहलू

सरकार कह रही है कि अर्थव्यवस्था में यह कमजोरी छः महीनों तक रहेगी। आलोचकों का कहना है कि यह दो साल तक रहेगी। कोई नहीं जानता कि कब तक परन्तु एक बात जो पूर्णतः निश्चित है: लगभग एक मिलियन अस्थायी कामगार और खेती एवं उससे संबंधित गतिविधियों के अन्य कुछ लाख मज़दूर अपना काम एवं रोजी-रोटी खो देंगे। आगामी कई महीनों तक उनकी आय शून्य या लगभग शून्य हो जाएगी, शायद अगली जुलाई तक जब 2017 का मानसून शुरू होगा। यह विमुद्रीकरण का सबसे बड़ा नकारात्मक पहलू है। चूंकि वे कुछ भी नहीं खर्च करेंगे, और मध्यम वर्गीय लोग खर्चों में कटौती

करेंगे, अर्थव्यवस्था में कुल माँग में गिरावट दर्ज होगी। इसके परिणामस्वरूप अगले छह महीनों में कीमतों में कमी होनी चाहिए, विशेषरूप से जमीन-जायदाद की कीमतों में। इसलिए यदि आप एक फ्लैट या घर खरीदना चाहते हैं, यही सही समय है।

इसी समय, क्योंकि बैंकों में पैसों की बाढ़ आयी हुई है -बिस्तर के नीचे दबा सारा पैसा बैंकों में जमा किया जा रहा है - ब्याज दरें, भी, काफी तेजी से गिरेंगी या गिरना चाहिए। इसलिए, अगले साल इस समय तक, अर्थव्यवस्था में तेजी से वृद्धि हो सकती है - बशर्ते कि सार्वजनिक क्षेत्रों की बैंकें ऋण देती हैं। वे नहीं दे सकती हैं क्योंकि वे बहुत अधिक व्यावसायिक उन्मुख नहीं हैं।

सरकार भी धनवान हो जाएगी क्योंकि वो सभी आय जिन पर कर नहीं दिया गया है अब उन पर कर लगना शुरू हो गया है। इस समय यह कहना कठिन होगा कि सरकार कितनी धनवान हो जाएगी। परन्तु वह अतिरिक्त आय को, इस बात की परवाह किये बगैर कि वह कितनी है, कई सारी चीज़ों के लिए इस्तेमाल कर सकती है।

> निश्चित तौर पर कोई नहीं जानता है कि अर्थव्यवस्था सप्ताह कब तक रहेगा लेकिन लाखों दिहाड़ी मजदूरों और लाखों खेती श्रमिक अपनी आजीविका गंवा देंगे।

अभी तक हमने केवल काले धन के भण्डार के बारे में बात की है परन्तु उसके प्रवाह के बारे में क्या? आप एक कैंसर को दोबारा होने से कैसे रोक सकते है? आप कैसे नए काले धन को उत्पन्न होने से रोक सकते है?

हम यह जानेंगे जब 2017-18 का बजट प्रस्तुत होगा। इस बात की संभावना बहुत अच्छी है कि आयकर की दरों में कमी की जाएगी। आशा है कि, कर के केवल दो स्लैब्स ही रहेंगे और 15 एवं 25 प्रतिशत की दो दरें, सभी छूट को हटाकर, रहेंगी।

तीन प्रकार की आय

जिस बात को ज्यादातर अर्थकार नहीं समझते हैं वह यह है कि भारत में तीन प्रकार की आय है जिन पर कर नहीं दिया जाता है, या हम देख सकते हैं, कि यहाँ तीन प्रकार का काला धन है। एक तो भारतीय सरकार के कर्मचारियों द्वारा मांगी गयी रिश्वत है; दूसरा मुजरिमों द्वारा कमाई गयी आय; और तीसरा आय का वो छोटा हिस्सा जिसे इमानदार लोग नहीं प्रकट करते हैं क्योंकि वे सचमुच उच्च करारोपण को वहन नहीं कर सकते है।

सरकार अंतिम श्रेणी के साथ सबसे अधिक कठोरता के साथ पेश आती है। मुजरिम अक्सर बच जाते हैं क्योंकि वे सरकारी संस्थाओं को रिश्वत देते हैं। लोग इसके बारे में जानते हैं, यही कारण है कि विमुद्रीकरण के लिए इतना व्यापक समर्थन है - अनेकों कठिनाइयाँ होने के बावजूद।■

स्वच्छ मुंबई पर एक चर्चा

टीम रोटरी न्यूज़

'स्वच्छ मुंबई' पर मुंबई के जुहू स्थित 'रोटरी सेवा केंद्र' में आयोजित एक संगोष्ठी सह प्रदर्शनी में मुंबई के ठोस अपशिष्ट प्रबंधकों एवं मलजल प्रशोधकों के लिए कई जानने योग्य बातें सामने आयी। समारोह का आयोजन 'स्वच्छ भारत' परियोजना के तहत रोटरी क्लब मुंबई ग्रीनसिटी, मंडल 3141, द्वारा रोटरी क्लब बॉम्बे वेस्ट, मुंबई नार्थएंड एवं मुंबई नार्थ आइलैंड (अग्रणी क्लबों) के सहयोग से किया गया था जिनकी सहायता 14 अन्य क्लबों ने सह-मेजबान के रूप में की थी।

कचरा प्रबंधन पर आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते डीजी गोपाल मंधानिया।

ग्रेटर मुंबई नगर निगम MCGM के अपर आयुक्त डॉ संजय मुखर्जी मुख्य अतिथि के रूप में एवं एक्सेल उद्योगों के प्रबंधकीय निदेशक अश्विन श्रॉफ ठोस अपशिष्ट प्रबंधन विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। डी जी गोपाल मंधानिया भी समारोह में उपस्थित थे। भारतीय पर्यावरण एसोसिएशन एवं महाराष्ट्र सोसाइटीज वेलफेयर एसोसिएशन MSWA ने भी उनके संसाधनों द्वारा योगदान दिया।

क्लबों के लिए आगे की कार्यवाही मुंबई के रोटरी क्लबों ने 'स्वच्छ मुंबई' पर लोगों को संवेदनशील बनाने के लिए स्कूलों में एवं लोगों के लिए सिलसिलेवार जागरूकता अभियानों को आयोजित करने की योजना बनाई है। स्वच्छ मुंबई पर एक वेबसाइट भी बनाई जाएगी जिसके माध्यम से नवीनतम सुविधाओं, उपलब्ध अंकों को प्रदान किया जा सकेगा और साथ ही हिस्सेदारों को उनके मध्य जानकारी को साझा करने का एक ई-मंच मिल सकेगा। प्रत्येक क्लब परियोजना के क्रियान्वयन के लिए उनके क्षेत्रों में एक मोहल्ले को गोद लेंगे और आवास सोसाइटियों को मलजल प्रशोधन पर परामर्श देने की पेशकश देंगे।

आवास सोसाइटियों एवं MCGM ने भी अपशिष्ट प्रबंधन एवं मलजल प्रशोधन की दोहरी चुनौतियों के लिए उनकी कार्यवाही की योजना तैयार कर ली है। ■

बैठना धूम्रपान के बराबर है

शीला नंबीयार

क्या आप इस लेख को पढ़ते वक्त बैठे हुये हैं? आप कितनी देर से बैठे हुये हैं? क्या कभी खडे होकर, हाथ-पैर तानकर शरीर को कुछ व्यायाम दिलाते हैं?

यदि नहीं हो तो, इस लेख को नीचे रख दीजिये, खडे हो जाईये और अपने कमरे के भीतर थोडा टहल लीजिये, सीढी पर चढकर उतरिये या अपने बगीचे में तीन से पाँच मिनट जितना बन सके उतनी तेजी से चलिये। अपने जकडे हाथों को जितना संभव हो पीछे की ओर ले जाये ताकि आप अपने सीने को फैलता महसूस करे, खासकर उस जगह पर जहाँ आपके हाथ, छाती को छूते हो। अपने पाँव के अंगूठे को जितना संभव हो उतना ऊँचा ऊपर उठा ले। गहरी साँस ले और धीरे, धीरे बाहर छोडे।

शारिरिक गतिविधियों में ऐसा कुछ है जो आपको बेहतर 'महसूस' करने देता है। अधिक स्फूर्तियुक्त!

"बैठे रहना, धूम्रपान करने से भी ज्यादा खतरनाक है; HIV के मुकाबले, बैठे ही रहने वालों की मौत की संख्या ज्यादा है; पैराशूट में उतरने से ज्यादा जोखिम भरा है। हम बैठे-बैठे ही मौत की खाई में खुद को धकेल देते हैं!"

डॉ. डेविड लेवीन – मेयो क्लिनिक,
मोटापा निरोधक पहल

यह अपेक्षाकृत नया सिध्दाँत है लेकिन अनुसंधानों में खरा उतरा है। अनेक अध्ययनों ने लंबे समय तक 'ना बैठने' की अहमीयत को साबित किया है।

- *राष्ट्रीय कैंसर संस्थान* की पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन में पाया गया कि मलाशय, स्तन तथा गर्भाशय जैसे विभिन्न कैंसरों का खतरा इसकी वजह से बढ़ गया है।
- उन व्यक्तियों में दिल की बीमारी हो जाने का खतरा बढ़ जाता है जो दिन में 6 घंटों से ज्यादा समय तक बैठे रहते हो। 'लंबे समय तक ना बैठे रहना' जैसी बात जीवनकाल को बढाती हुयी मालूम होती है। एक और अध्ययन के मुताबिक दिन में 3 घंटे बैठने वालों के मुकाबले दिन में छह घंटे या उससे ज्यादा समय तक बैठे रहने वालों का मृत्यु दर ज्यादा पाया गया यानि लगभग 20 प्रतिशत ज्यादा।
- लंबे समय तक बैठे रहने से मोटापे का खतरा कई गुना बढ़ जाता है।
- दिन में लंबे समय तक बैठे रहने से मधुमेह का खतरा बढ जाता है, इंसुलीन की संवेदनशीलता, वह हॉरमोन जो आपके खून में शक्कर को नियंत्रण में रखता है, लगातार बैठे रहने की वजह से कम हो जाती है जिससे प्रकार 2 के मधुमेह के मामलों की संख्या बढ़ जाती है। अस्सी हजार भागियों के साथ 18 इतर अध्ययनों पर गौर करने के बाद,– Diabetologia नामक पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन से पता चला कि जो सबसे ज्यादा बैठे रहते थे उनमें प्रकार 2 के मधुमेह के हो जाने की दोगुनी संभावना होती है।
- लंबे समय तक बैठना लिपो प्रोटीन लिपेस (LPL) में हस्तक्षेप करता है। यह एक एन्जाईम होता है जो हमारी चरबी को नष्ट कर देता है। LPL गतिविधि का शारिरिक गतिविधि से सीधा वास्ता है; सो लेटे रहना और बिना हिले-डुले बैठे रहना LPL की मात्रा को एकदम कम करा देता है और शरीर में चरबी का ढेर जम जाता है।
- मंदी – जो दिन में 7 घंटों से ज्यादा समय तक बैठे रहता है उसमें मंदी की 47 प्रतिशत अधिक संभावना होती है।
- हिलने-डुलने की गतिविधि से, दिमाग तक जाने वाली 'एंडोरफाईन' की मात्रा बढ़ जाती है और आपको बेहतर महसूस कराती है।

बैठी अवस्था

- बैठी अवस्था ऐसी होती है कि वह निचली टाँगों तक के रक्त संचारण को ना केवल कम करा देती है बल्कि पाँव की माँसपेशियों तक माँसपेशीय-तंत्रिका के उभाड को भी कम करा देती है और आखिर में उसे बेजान कर देती है।
- नतीजे में, जब जिंदगी भर इस अवस्था को जारी रखा जाता है, शारिरिक गतिविधि एकदम कम

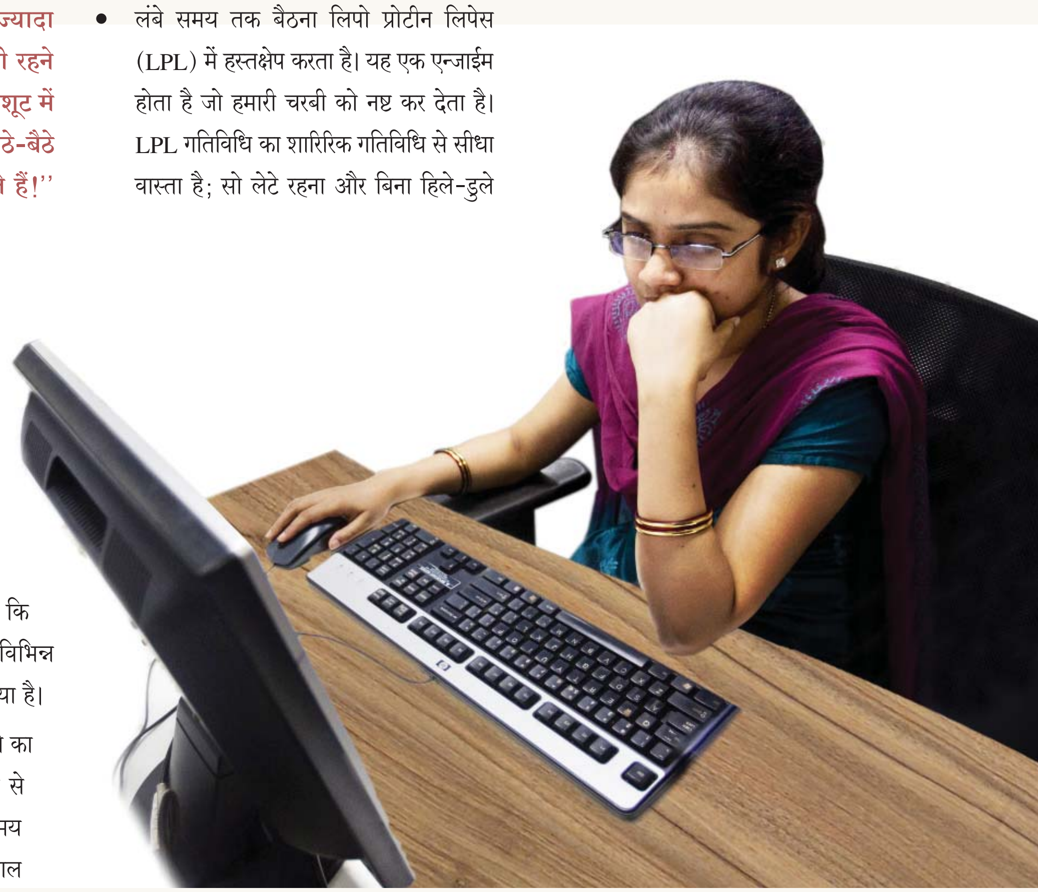

हो जाती है और संतुलन चला जाता है, गिर पडने की घटनायें बढ़ जाती है जैसा कि हम अक्सर बूढे लोगों में पाते हैं।

- बैठी अवस्था, खासकर आजकल की आधुनिक कुर्सियों में बैठकर कमर तथा घुटनों के जोडों के 90 डिग्री या उससे अधिक मराडों से गहरी नसों के 'थ्रोंबोसीस' या दीर्घकालीन गतिहीनता के नतीजे में निचली टाँगों की नसों में खून जम जाता है।
- सही बैठने की अवस्था के बावजूद इस मामले में कुछ भी नहीं किया जा सकता है। आपकी पीठ चाहे कितनी ही सही तरह एक सीध में हो, काँधे झुके हो, सीना कसा हुआ हो, पैरों तक खून पहुँचाने के बाबत में कुछ भी किया नहीं जा सकता है। बैठने की अवस्था सही होने पर आपकी पीठ को किसी तरह की ठेस पहुँचाने से शायद बचाया जा सकता है लेकिन लंबे समय तक बैठे रहने के बुरे असर को कम नहीं कर पायेगा।

आपकी कुर्सी

'कुर्सी' का आगमन सबसे पहले 18वी सदी में हुआ था। उससे पहले हम केवल तिपाईयों और बेंचों से ही गुजारा कर लिया करते थे जिसमें असल में ज्यादा देर तक बैठा नहीं जा सकता था क्यों कि पीछे टेकने की सुविधा ना होने की वजह से चाहने पर भी ऐसा नहीं किया जा सकता था। आजकल हालाँकि पहले से ज्यादा सुविधाजनक कुर्सियाँ बनाने में कंपनियों के बीच होड सी लगी रहती है। पींठ के दर्द को कम करने वाली, घूमती, फिसलती, मालिश करती, ऊँचे दर्जे के 'फोम'से बनी, हाथ टेकने की सुविधा वाली कुर्सियाँ आदि जिससे एक बार बैठ जाने पर आपका कुर्सी से पीठ हटाना या उठना मुश्किल हो जायेगा। सच्चाई यह है कि आपकी कुर्सी चाहे कितनी ही अच्छी हो असल में आपके लिये जान लेवा है!

डॉ लेवीन ने 1992 में एक सवाल पूछा:- ऐसा क्यों होता है कि कुछ लोग हालाँकि ज्यादा खाते हैं, व्यायाम नहीं करते है फिर भी मोटे नहीं होते? उन्होने आगे एक ऐसा प्रयोग करके देखा जहाँ लोगों के एक समूह को हर दिन 1,000 कलोरियाँ दी गयी जो उनके दैनिक आहार से कुछ ज्यादा थी और उनसे कहा गया कि वें किसी तरह का व्यायाम ना करें बल्कि अपने नियमित काम को जारी रखे। दो महीनों तक उनकी निगरानी की गयी।

कुछ लोगों का वजन बढ़ा जैसे कि प्रत्याशा की गयी, जब कि कुछ इतर लोगों का वजन नहीं बढ़ा। फरक क्या था? जिनका वजन नहीं बढा वें ज्यादा चलते-फिरते रहते थे - व्यायाम नहीं करते थे; बस केवल कुछ ज्यादा चलते-फिरते थे। उनके शरीर स्वाभाविक तरीके से जानते थे कि वे जरुरत से ज्यादा खा रहे है और उसकी भरपाई करने वें दफ्तर और घर में चलते फिरते रहते थे। वें अधिक सीढियाँ चढ़े होंगे, बैठे रहने के बजाय खडे रहते होंगे, ज्यादा घर का काम करते होंगे आदि।

महज घूमते फिरते रहने का क्या फायदा

अधिक उत्पादक क्षमता, बेहतर सृजनात्मकता, अधिक नवप्रवर्तन, बेहतर याददाश्त और बेहतर मनोदशा।

NEAT – व्यायाम रहित गतिविधि उष्मा का आरंभ बिंदु

यह नियत व्यायाम के अलावा ऐसी गतिविधियों से गलाई गयी कलोरियाँ है, जिन्हे हम आमतौर पर नजर अंदाज कर देते हैं। चंचलता से, अधिक गतिविधियों से, सीढी पर चढने से, जितना संभव हो उतना शरीर के अवयवों को काम में लाने से, बैठने के बजाय खडे रहने से, कपडे धोना और घर की सफाई करना आदि घरेलु काम करने से NEAT को बढाया जा सकता है।

टीवी और कंप्युटर समय–आधुनिक दुनिया की बीमारी

ऑस्ट्रेलीया में किये गये एक अध्ययन के मुताबिक, टेलीविजन/इंटरनेट को देखने के समय में प्रत्येक एक घंटे की बढोत्तरी के लिये मौत का खतरा 11 प्रतिशत बढ जाता है। ज्यादा टीवी देखने की वजह से खिन्न मनोदशा रहती है। मेरा मानना है कि बैठे ही रहने से ऐसी नौबत आ जाती है और शायद आप जिस तरह के चैनल देखते हैं उसका नतीजा भी हो सकता है!

सो, आपको क्या करना चाहिये? छोटी छोटी तब्दिलियाँ ले आना।

- टीवी देखते वक्त खडे होकर देखिये। कम से कम 50 प्रतिशत समय खडे रहिये। कम टीवी देखे!
- अपने ट्रेडमिल, साईकिल पर बैठकर टीवी में समाचार देखे।
- विज्ञापन के हर एक अंतराल के समय टहलते रहे। काफी विज्ञापन आते रहते हैं। विज्ञापन अंतराल के दौरान कमरे के भीतर चलते रहने से आपका कोई नुकसान नहीं होने वाला है।
- विज्ञापन अंतराल के समय फर्श पर पालथी मारकर बैठे/पिंडली को ऊँचा उठाये या पेट को भीतर की ओर खींचकर दबाये।
- टीवी के सामने बैठकर कुछ ना खाये।
- डेस्क पर खडे होकर काम करे।
- हर 30 मिनट में चलते रहे।
- जूते उतारकर अपने पाँवों और उँगलियों में हरकत ले आये।
- जब कोई आपसे मिलने आये तो खडे हो जाईये।
- खडे होकर फोन पर बात करे।
- खडे होकर बात करे।
- सीढी पर चढकर जाये।
- अपनी मेज पर भी छोटे-छोटे व्यायाम करते रहे।

WHO के मुताबिक सिफारिश की गयी व्यायाम की दैनिक न्यूनतम जरुरत है प्रति हफ्ते संचित किया गया 150 मिनटों का व्यायाम।

एक या दो घंटों का व्यायाम कर लेने के बाद वें शेष दिन निष्क्रिय जीवन शैली को अपना सकते है। लंबे समय तक शारिरिक निष्क्रियता को व्यायाम से बेअसर नहीं किया जा सकता है।

लंबे समय तक बैठे रहने की बाधाओं से, दौडने वाले भी उतने ही प्रभावित होते हैं जितने कि मोटे लोग जो व्यायाम नहीं करते हो। सो, मिसाल के लिये यदि आप एक घंटे की दौड को पूरा करने के बाद, अपने कार्य स्थल जाते हैं और अगले 8 घंटे बैठे-बैठे काम करते हैं तो आपको भी उन्ही समस्याओं का सामना करना पडेगा जिनके बारे में अभी अभी जिक्र किया गया था जितना कि वें लोग जो मोटे हो और नियमित तौर पर व्यायाम नहीं करते हो। इसी वजह से बैठते ही रहने को, सिगारेट पीने के बराबर माना जाता है। दिन में एक पैकिट सिगारेट फूँकने और फिर एक घंटा व्यायाम करने से सिगारेट पीने के बुरे असर को कम नहीं कराया जा सकता है ठीक जैसे एक घंटे का व्यायाम एक अन्यथा निष्क्रिय जीवन शैली की बुराईयों की भरपाई नहीं कर सकता।

लेखिका प्रसूति वैज्ञानिक एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ हैं, एक स्वास्थ्य तथा जीवनशैली सलाहकार है; उन्होने दो पुस्तकें प्रकाशित की है: Get Size Wise; Gain to Lose.

42 Years Ago Was Born A Baby Named

'Better Services',

a proprietary concern

on the southwest coast of Bombay, now Mumbai.

A long story of slow growth,
the first year's annual turnover Rs.2500/-;
a visit to Hyderabad with DG Balwantrai,
then all over India, neighbouring countries
in the beginning and with the
global travel starting with the Glasgow Convention.

Rather interesting has been the journey to reach
this stage of recognized quality suppliers to
Rotarians and those connected to them globally.
The baby that is now welcomed and appreciated worldwide,
has grown up to an

ICON

'Better Services',

it has now taken its next generic form in

'BETTER SERVICES PRIVATE LIMITED.'

every time a little better

The same it is as it was till now but with a continuity that may last forever on quality and service concerns

BETTER SERVICES PRIVATE LIMITED

22, Meghna,64, S.V. Road, Santacruz (W). Mumbai - 400 054, INDIA
Tel.: +91-22-26491143, 2649 1826, 6581 8819 Fax: +91 - 22-2649 8201 Website: better.in
E- mail: better@vsnl.com madhnarang@yahoo.com better@betterservices.org

every time a little better

दुबई के कुछ यादगार पल

रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म और जूडी, यूएई के राष्ट्रीय पक्षी बाज़ के साथ।

आर आई डी मनोज देसाई और पी आर आई डी शेखर मेहता डी डी ज़ेडआई के दौरान उत्साही पलों का आनंद लेते हुए।

सार्जेंट एट आर्म्स - *(बाएं से) पी डी जी अशोक सिंह, डीजीगण ज़ामिन हुसैन, रवि चौधरी, विनय कुमार अस्ताना, सतीश सिंघल, पी एस रमेश बाबू, धर्मेश आर पटेल, मोलिन पटेल, वेंकटेश विट्ठल चन्ना, जी वी रामा राव, आनंद कुलकर्णी और प्रभुल्ल जे शर्मा।*

REGN. NO. TN/CCN/359/2015-2017 LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT NO.TN/PMG(CCR)/WPP-421/2015-2017
REGISTERED WITH REGISTRAR OF NEWS PAPERS FOR INDIA TNHIN/2001/5271 ROTARY SAMACHAR PUBLISHED ON 1ST OF EVERY MONTH

ACCORD

MULTI SPECIALITY HOSPITALS

Health & Longevity

BANER - BHOSARI - AKURDI

SPECIALITIES

● CARDIOLOGY ● NEPHROLOGY ● ORTHOPAEDIC ●

● NEUROLOGY ● CANCER SERVICES ● MOTHER & CHILD CARE ●

ACCORD MEDIPLUS PVT. LTD.(AMPL)

AN ACCORD GROUP COMPANY

PUNE INDIA

contact@accord.co.in